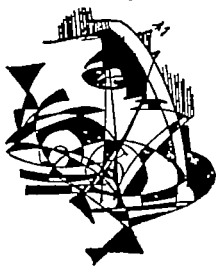




# ये कथा.. रूप

[राजस्थान के प्राच्युक्त कथाकारों  
का संकलन]



सम्पादक

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'



सूर्य प्रकाशन मन्दिर  
बिक्रमेश्वर





राजस्थान की मिट्टी में उत्पन्न होकर सारे भारत के कण-कण में व्याप्त हो गये उस महा मनीषी व साहसिक नेता डॉक्टर रामय राय की वृष्य स्मृति में अज्ञानसी सहित जो हमें कश्मीरिया मुनाठे-मुनाठे लुर ही सो गय ।

- 1 —सम्पादक ।  
—लेखक  
—प्रकाशक

हमारे ग्रन्थ प्रकाशन

- (१) साधन ग्रन्थों में [उपन्यास] से० पारबेन्द्र चर्मा 'चन्द्र'
- (२) भीसी भीम नाम परछाइयाँ (उपन्यास) राजामन्द
- (३) हंसिनी याद की (मुक्तकों का संग्रह) इंदिरा भावानी

## प्रकाशकीय

सूर्य प्रकाशन मंदिर के प्रकाशन की श्रृंखला में राजस्थान के पच्चीस धातुनिक कथाकारों की कथाओं का संकलन 'ये कथा हम' नवीन कपी है।

प्रकाशन के व्यवसाय में केवल व्यवसायिक दृष्टिकोण से छेड़ कर सिद्ध नहीं होता—व्यवसाय के साथ एक मिश्रण भी अत्यावश्यक है। मैंने इस मामूय से प्रान्त की प्रतिभाओं को प्रकाश में आने की क्वचित् बेछा की है। ताकि आप उन्हें पढ़ें समझें और परखें।

श्री पारबेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' द्वारा सम्पादित राजस्थान के पच्चीस धातुनिक कथाकारों का संकलन 'ये कथा हम' आपके हाथों में बैठे हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। क्योंकि यह इति भी मेरे मूल उद्देश्यों की पूर्ति करती है।

इसके बाद भी अन्य कथाकारों की कथाओं के इस प्रकार के उपयोगी कथा संकलन आपकी सेवा में प्रस्तुत करने की योजना है।

इस पुस्तक के प्रकाशन पर मैं सभी-दृष्ट-निर्भो सहयोगियों तथा इस संकलन के सभी कथाकारों का आभारी हूँ जिन्होंने इस अवसर पर मुझे सहयोग दिया है। विशेषतः आभारी हूँ इस संकलन के सम्पादक भाई पारबेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' तथा भाई देवेन्द्र कुमार मुंबड़ा का जिन्होंने दिल्ली के व्यस्त जीवन में समय निकाल कर मूद्रण-सम्बन्धी सहायता की। प्रकाशन सम्बन्धी आपके सुझाव अभिनन्दनीय हैं।

राजेन्द्र बिस्ता

प्रबन्धक



## सकतिका •••••

१	संभूदयाल सक्सेना	नामी अथ खरबूजा	१९
२	मोहन सिंह सेंगर	पुष्पी बन एक घाँसू	२५
३	श्री मोपाल घोषार्थ	घपनी-घपनी वगन्ध	३४
४	डा० 'उषिय रायब'	तुई जिम्बवी के लिए	४१
५	जमबाल बंस बोस्वामी	परिचय	४७
६	सुमेरुसह बहिया	मूणी डायन	५७
७	श्रीमानन्द ह० शारस्वत	घाँसहत्या से पहल	
		तिमे	६३
८	राजानन्द	मोह	६८
९	यादवैन्द्र रामी 'बन्ध'	मिस मोतिका धीर पेड़	
		का तना	८०
१०	नोवीबस्मम बोस्वामी	काया सस्ती जिम्बवी	
	'उपेक्षा'	मंहुगी	८०



११ शीर्षकर चौहान	एक बंगुल एक बत्नी ६६
१२ प्रेम सक्सेना	नये मोट १०३
१३ मनोहर बर्मा	घौर मान बह गया ११०
१४ मंजस सक्सेना	तीन कीर्तों वाला मन १२१
१५ हृषीक भादानी	घनाम घपने १३१
१६ पूनम वर्डिया	सुंभला पट उदास बेहरे १३८
१७ उमेन भाचार्य	यह क्या ? १४३
१८ एस० के बिरनोई	काबी-कस १४९
१९. नागर	कस्तूरी-मृग १५६
२० धर्मो घर्मा	एलबम क भीतर १६३
२१ बिना बीबान	ठीग साये कांपत १७१
२२ सुभू पटवा	बौरहा घौर परछाईयाँ १७८
२३ मानिक घाँबसिया	एक स्नेह एक प्यार १८४
२४ नरद किछोर भाचार्य	पुराये कपामक की कहानी १९६
२५ मुर्य प्रकाश बिस्मा	परछाईयाँ घपनी घौर परायी २००







## नानी का खरबूजा

माँ का यह आदेश है कि हम नानी से कोई संपर्क न रखें। न उनसे बोझें, न घर की कोई बात उसे बतायें। यदि हम माई बहनों में से कोई इस आदेश की अवहेलना करेगा तो माँ उसे घर से निकाल देगी।

इस आदेश के फसिवापों को जानते हुए भी हम में से हर एक नानी की बग पर चढ़ जाता है। वह बुढ़िया कुछ ऐसा मोहन-मंत्र जानती है कि हम सोप उसक फन्ने में घामे बिना नहीं रहते।

यही कारण है कि माँ का जर्सीबी आदेश जब नानी चाहती है बामू को भीत की भाँति बह जाता है। माँ उसे गिरत-बहुते देखती रहती है मन ही मन बुढ़ती रहती है और उस हाण की प्रतीक्षा करती रहती है जब घर में भयंकर बिस्फोट होकर सारे परिवार की घामि की लप् कर बटा है।

जब से हम माई-बहनों में होय समासा है तभी से माँ और नानी का कलह हमारे जीवन का एक घंघ बन गया है। वे मिलकर दो बार दिन भी घामि स नहीं रह पाती और घसम घसम भी पन्द्रह बीम दिन से घमिक रहना मुहाल है। महीने में एक महामारत ता घपने घोपन के बुधयेन में हो ही जाता है। उसके उपघाम्त नानी घुर् क बाहल की भाँति गायब हो जाती है और माँ उसके नाम को बाजाबरण घनी-घनी बिघामि का घनुमब करने लपता है। हम सबके गिन्ने हुए तार उतर जाते हैं।

माँ बहमें घाती है पर बुढ़िया को घर में वर नहीं रखने हू पी

हम सब बच्चों को हफ्ठठा करके नानी के विरुद्ध मुबइ मोरबा बनाये रखने का उपदेश देती है ।

हमें भी सुनता है कि नानी निश्चय ही इस भोग्य है कि उसके माथ कोई सर्पक म रखा जाय । उसे घर में घुसाना तो दूर घर की घोर देखने भी न दिया जाय ।

हमारे बाबा एक निरीह प्राणी हैं । वे किसी लमड़े-बखेरे में नहीं पड़ते । वे तो मां का ही सामना करने की सामर्थ्य नहीं रखते । नानी को देखते ही उन्हें सांप भूष जाणा है । उसके सामने उसने मुह के बोल नहीं निकसता पर नानी जब बली जाती है तो वे हंसकर मां से कहते हैं तुम्हारी यह मां नहीं घाफल की पुड़िया है ।।

हम सब यह सुनकर हंस पड़ते हैं । इस तरह हमारी नानी का नाम ही पंडू रमा है घाफल की पुड़िया । उसका यह नाम उसके व्यक्तित्व पर खूब कबला है ।

जब वह घर में खाने के लिए घर के धार-वाह मंडराने मगती है तो बाबा घीरे से मां से कहते हैं संभल जा वह घा गई है ।

मां इस पर कसमें खाती है घीर प्रणु करती है कि उसे देखी के भीतर पैर नहीं रखने देंगी ।

बाबा ममगाठे हैं घाफिर बेचारी बायगी कहा ? कीन उतक सड़का बीठा है । बुलिया बेचारी ।

मां—बोलो मत । उगकी विफारिय करोने ती तुम्हें भी घर से निकाम हूमी ।

बाबा—घपनी मां के लिए ऐसा कहती हो ।

मां—बह मेरी मां नहीं रातली है । मां होती ती

बाबा—तो तुम्हें साड़ सड़ानी ?

मां—साड़ की रहने दो उलक्य बघ कसता तो मुयो बस जयह बचती ।

दर घर हम सब मां से अनुरोध करने कि वह नानी से साब नहीं कही घुनी थी ? उसकी बहानी गुमाने ।

माँ—बच्ची भी तब तो समझती नहीं थी। उस समय तो जैसा यह कहती थी वैसा ही मैं करती थी। म्याह होने के बाद भी कई सास तक इसने मेरा पग टिकने नहीं दिया। कमी लेट में तो कमी खलिहान में। नभे पाँच बीहड़ों धीरे अंगनों में नूकी प्यासी न जाने कहाँ कहाँ लिये डोलती थी। धाँधी पानी, सर्दी-गर्मी हमारी कहाँ फटती थी इसका कोई निश्चय न था। तन पर कपड़े न थे पेट भर धमक नसीब न था। गहाने बीने का तो उन दिनों सपना भी नहीं होता था। धात्र इसके द्वार पर निक जाते तो कम उसकी मासियाँ लाकर छो रहते। मसी के कुत्तों से भी बहतर जीवन मुम्हारी इस नानी के उत रात्र में हमें बीना पड़ा। धात्र भी यह शौह शौह कर इसीलिए मा जाती कि इसे हमारा मुन्व से रचना नहीं मुहाता।

एक दिन जब इसी तरह नानी की बचाँ बच रही थी तो वह धाकर द्वार से झाँकी धीरे बड़ियों की एक पोटमी मेरी छोटी बहन काशिक को पकड़ कर बची गई। काशिक ने पोटमी लाकर माँ को बी माँ ने काशिक की बच्छी पूजा की धीरे बाँटा पोटमी से जाकर फेर था। परन्तु नानी तो धूमतर हो चुकी थी।

मैंने पोटमी लेकर खिपा दी धीरे दो दिन नूब बच्छी तरह बड़ियों को रोपकर सबको खिलाया। नानी की कमाई में भाठी बरकत हुई। बड़ियों के उपहार में माँ के कठोर धम की दीवार को तहम-नहम कर दिया। इस बीच नानी के गृह प्रवेश के लिए नमुषित बाताबरण बन चुका था। एक प्रातःकाल हम सब माई-बहनों ने जाकर देखा कि नानी भाइफराय साधुन से रमड़ रगड़ कर स्नान कर रही है धीरे घामर इससे पूर्व मनसाइट की एक टिककी अपने कपड़ों के धोने पर बरम कर चुकी है। हनुमा धीरे खीर के निषा नानी को हमारे घर पर कोई भोजन माता नहीं है। यदि बच्छ स्वार्दिष् बन जायं तो पाब-भाप सेर वेसन या मोठ के गर्द-मर्म पकौड़े जकर बहु पेट में डाल सिती है। रोटी राम खाने बहु हमारे घर भाती ही नहीं है यह तम्ब माँ-बाबा ने सनाकर हम सब जानते है। हमारे घर धाकर नानी ने

रती जर नहीं होता । भाई काढ़ना रतोई बनाना बरतन मसना पानी माना घोबर चुगना यह सब वह कतई नहीं करती । वह छाफ कहती है कि क्या वह सब करने के लिये यहाँ जाती है । छहर यही करना हा घीर मोटा-बोटा कच्चा-मुखा हो खाना हो तो क्या मयर के दूसरे बर बन्द हो क्या है ?

बात भी बल्ल है बेटी-जमाई के बर भी वीरी के जैसा ब्यबहार मिले तो फिर कोई बही किस तरह ठहरे ?

हवा में सूख रहे मानी के बगबने कपड़ों पर एक दृष्टि डाककर माँ ने बरहमी से रगड़े जा रहे लाइफ़ाय पर बाबा की घीर देख कर थोड़ा मुस्करा दिया । फिर पूछ से जरी कान्ति को मानी की घीर पक्का देते हुए बोली—जा जा तु भी कहा से ।

कान्ति मानी के घरीर से टकट कर बोली उबर मानी ने उसे पीछे फेंका, बोली—मैं क्या ठेरी घीर ठेरी सन्तान की मुसाबी करने के लिए आई हूँ ?

बीच के मारे माँ का बेहय समतमा क्या । बाबा काठ बने बैठे रहे । जेही समय महामारण हो पाता यदि बीच में कुन्जा मोठो न भा जाती ।

कच्चा मोठी ने घांटे ही माँ को पार दिमाई—घरे तु तो बही बीटी है जानकी ? तबरे तबरे लकड़ियों के लिए बसने की बात की न ?

माँ जीब कीं बीकर बिना कुछ कहे खड़ी हो गई । बोली—बसो । माँ घीर सीखो निकल गई । मानी ने साबुन मछलते घीर घतका मान उठाते हुए समचार के तीर पर बहा—रांड मेरे पर कुकुम पनाती है ।

माँ कियो काम से सीट घाई थी । उहीने तुन लिबा तो सामने बड़े हुए साट के पाये को उटाकर कुड़िया बर फेंका । थोट घाकर मानी बीसती मानी । वह भापती घीर कान्तियों की बर्षा करती जाती थी । माँ उठके पीछे लकड़ी लिए बीड़ रखी थी । हमार बाब में हुला मच

गया। मादमी धीरों, बच्चे घरों से निकल कर तमासा देखने लगे। नानी ने फुल पावर से रेडियो बालू कर रक्खा था। उसकी भारा प्रवाह गानियों का ध्यान लेते हुए पास-पड़ोस के सोच गैर जिम्मेवारी का पूरा निर्वाह कर रहे थे।

मां नानी का धाड़ करके जब घर सीटी तो मेरी धीर कान्ति की वह पुनर्प्राप्ति हुई कि हम दोनों को छठी का रूप याद आ गया। कान्ति बड़ियों की पोटली लाने के लिये धीर में उन्हें फेंक न देकर रॉमने धीर मन्त्रो सिखाने के लिए पीटी गई। मां के अनुसार बड़ियों के सीदे में नानी की ही जीत रही। घाठ इस घाने की बड़ियों का उपहार देकर वह पांच छः रुपये का खर्चा कर गई और आते समय एक हूँमामा मचा गई जिसकी खोट से हमारा परिवार कई दिन तक कटाहता रहा।

नानी-पुराण का यह बहुत पुराना अध्याय है, परन्तु यह हम लोगों को मूसता नहीं है। सभी उस दिन अचानक भोर होते ही हम भाई बहनों को नानी के दरवाजे पर ले गये। पता नहीं कि कितने दिनों हमारी मर्ग पा ली कि हम मां की लई शोकरी पर एबजी देने लगे हुये हैं। उसने आकर हैडमास्टर साहब के घर के दरवाजे पर दस्तक दी और हम नीर्मा भाई-बहनों को पहचानने के लिए धीर शोक कर देखा।

अनुरिया ने देखा नानी। मैंने धीर कान्ति ने भी देखा नानी। हम सब मर्गदार्ण मूस कर नानी के चारों ओर फिर गये। जैसे नानी न होकर वह कोई अज्ञात हो। उसने हमसे ही चार बानों की लड़े लड़े धीर यह कहते हुए बल पड़ी—नुम्हानी मां कहाँ है ? घर पर पड़ी-पड़ी आराम करती है। नुम बेचारी को काम पर जोत देती है।

इतना कह कर वह बल पड़ी। कान्ति धीर अनुरिया उसके पीछे लगे लिए। मैं भी उसका धार्मण स्वीकार करने के लिये उत्सुक थी पर मां की कठोर मुद्रा मेरे ऊपर नियन्त्रण रने रही।

घंटों पर बंटे भीत गये पर भाई-बहन न लगे। काम जितना अचाने कर के अनुसार मैं कर पाई किया पर बहुत दुःख करना खेप रह गया।

घाबिर के दोनो सौते । एक बड़ा सा खरबूजा तिर पर चढाये हुए । मेरा भी घबने मिलिय को बिनकारने खाया । मानी ने इतनी डेर में न जान कीन सी पट्टी उन दोनों को पड़ा की कि ये खरबूजे पर मेरा अधिकार नामने को तैबार न बे । मैं मन ही मन सबझती थी कि उनका कहना एक तरह से ठीक है परन्तु खरबूजे की सुपस्य से पामत होकर मैं सब बर बराबर का अधिकार पता रही थी । मेरा तर्क था कि मैंने वहाँ रहकर उनके हिस्से का काम भी तो किया है । अगर मैं न सकती तो काम बड़ा रह जाता घीर ना हम तबही धक्की खबर मेली ।

घाबिर जीना सपटी मार-बाड़ के बाद ने दोनों मान बने घीर खरबूजे के तीन टुक करके हम खाने बैठे । समय का हमें ध्याय न था कि कितना बीघ चुका है ।

हमने खाना पारम्भ किया ही था कि नां घा बमकी । मां की तीव्र दृष्टि का सामना हम न कर सके । हमने बहुत किया खरबूजा मानी के दिलाया है ।

तो यह यहाँ भी बहुत पई—मां ने कहा—बर यह है वहाँ ? मैं तो उठे ही इन्डन निकली हू । उठते पुझना है कि रजदेवा उसका भितना बन हुकप गया है ? उसके एकसौते को बट्टी में मूजने की कसम यह कब तक पूरी करेगी ?

हम प्रसंग तो बुरा नहीं समझ सके परन्तु बटमा की बन्धीरता का बीड़ा बन्धाव ही बसा । सीम ही मां को पता लगा कि इतनी डेर सयाकर भी हम काम को निवटा नहीं सके हैं । इत बर बिभड़ कर मां ने हम सोबों को लतकारा—तुम्हें खरबूजा खाने को देखा था कि काम करने को ? आया दिन सर्वा दिया तुम हरामजाओं के ।

हाम की लकड़ी कटकार कर नां घाये बड़ी तो बगुरिया सवा को भांति चौंकी मरठा बजर धाया । बरिन्त ने दो-चार टंटे खाने घीर बतर गई । मेरी बारी घाई तो मैंने बहा—मुझे पारने की जरूरत नहीं ।

न-तो मैं नानी के साथ गई थी न खरबूजा ही लार्ड । य ही दानों साये हैं ।

घाबेरा में बबहूबाण माँ ने मेरे ठकं पर ध्यान न दिया । सामना करने के लिए तैयार समझ कर मेरी खबर ली कि कुछ मत पूछो । मैं उसकी अनुचित मार से अपना प्राणा छो बैठी घोर बराबर बोलती रही । न माँ ने मारना बंद किया न मैंने बोलना । इस कांड की समाप्ति लनी हुई जब माँ मारते मारते बक गईं और मैं मार लाते लाते भ्रमण होकर फिर पड़ी ।

कहते हैं इसी बीच हैड मास्टर साहब की पत्नी भविर से सीटी । उन्होंने माँ को बहुत बुरा भसा कहा परन्तु माँ अपनी भूस मानने का तैयार न हुई । उसन कहा—घमी लो कुछ भी नहीं हुआ है । इसकी पूरी दुःस्ती लो बर पर से जाकर ककनी पर मैं इस प्रकार मुब-पुज पड़ी थी कि घर ल जाना संभव न बा ।

माँ न कांति को कहा—बस बता नानी कहीं है ? पात्र मेरे हाथों उसका कास प्राया बिलया है ।

कांति कांपती कांपती प्राये बसी और माँ हाफती-हाफती पीछ । हैडमास्टरनी बेचारी ने भरसक मेरा उपचार किया । जपहु-जपहु हस्ती सेपी और पिट्टिया बांधी । जोड़ों पर सगी जोटों पर सेंक किया । बर का लो काम पड़ा रह गया बा वह भी ससने भवने हाथों से ही किया ।

माँ और कांति ने नानी की खोज में मलियों की बाक जान डाली । दोपहर से शाम तक वे उठे खोजती फिरीं पर वह ऐसी रफूबणकर हुई कि उठकी बून भी उनके बत्से न पड़ी । रात को घाठ बजे हारी पकी लौटकर उन्होंने मेरी खबर ली । एक हूब-डेले पर डाककर मुसे वे बर स गईं लो बाबा से यह सुनकर प्रारचयं बकिठ रह गईं कि बहुरिया और नानी रोटी ला-पीकर बूरी-संध्या बर वे निकस हैं ।



माँ ने पाँव से धूती निकाल कर बाबा के तिर पर चढ़ा-चढ़ा कर मारपी छुड़ कर दी ।

इस घटना के एक हफ्ते बाद हम सब गामी के सामे जलेबियों के टोकरे को घेर कर बैठे थे । बर्बा नहीं बस रही थी कि खरबूजा काँड़ के बाद जलेबी काँड़ कैसा होगा ।

गामी विजय-यर्ब से बैठी मुस्करा रही थी परन्तु मेरी हड्डियों में इस समय भी दर्द था । खरबूजे का दर्द जलेबी का दर्द ।



● मोहन सिद्ध संगर

## सुशी का एक ऑसू

पिता जी की मृत्यु का तार पाकर मैं पहली गाड़ी स बर पहुँचा। रास्ते भर उनकी प्रत्येक मीठी-कड़वी स्मृतियाँ मन को कबाटती रही। यद्यपि उनका स्वभाव कुछ बड़ोर या घोर घर में उनका नियंत्रण भी बड़ा कड़ा था फिर भी मुझ घोर दोनों बहनों को समझने पड़ा जिसका कारण ही नहीं बनाया था बल्कि सम्पूर्ण-ईमानदारी घोर सुव्यवस्था का कट्टर आदमशाही प्रतिपादक भी बना दिया था। बचपन में कभी-कभी उनकी कफ़ाई बरा घर पर जबर बाली थी पर बाद में हम लौकों ने महसूस किया कि कुछ मिलाकर उनसे हमें लाभ ही हुआ। इसलिए स्नेह घोर आदर के माध्य ही पिताजी के लिए हम सबके मन में एक गहरी आस्था और घटा का भाव भी था।

जब टैबली घर के सामने जाकर रुकी तो मैंने माँ को बैठक की बड़की के पीछे लड़े देखा। दूर न बिलप कुछ ठो बिलाई नहीं पड़ा पर ऐसा जबर लगा कि ब सायब रा नहीं रही थी। टैबली बाले वा माँका बुकाकर जब मैं आदर पहुँचा माँ के पाँव धुएँ घोर सिमबते हुए ज्यों ही मजबूत घालों में मैंने उनकी घोर देखा ती महसा मुझे अपनी घालों पर जैसे बिदबात नहीं हुआ। रोमा ता दूर रहा किसी कुछ संताप या स्फालेपन के भाव तक उनके चेहरे पर न थे। इसके विपरीत उनके मुँहसे हुए वे चेहरे पर आत्र लेनी घालि रिम रवा घोर सबीब साम्प्रिय विरात्र रहे वे किहूँ पहले मैंने कभी-भी नहीं देखा था। एक हाथ के कुप नहीं बोनी। फिर अपनी लाठी के पकले से मेरे घालू बॉछने हुए कहा 'बत हाथ-मुँह बाले। मैं तब तक

तेरे नाम्ते-पानी की व्यवस्था करती हूँ। घोर के बैठक के भीतर बसो गई।

मैं बड़बत्त जहाँ जा ठहाँ बड़ा रहा। पिताजी के निधन की बात तो जैसे भूख ही गई और माँ मेरे सामने एक नई बहेली के रूप में आ गई। इसी समय पाठ वाले कमरे से कितनी के रोने का स्वर सुनाई पड़ा। मैं भारी कमरों के भीरे-भीरे उठी और चल पड़ा।

कमरे के दरवाजे पर जाकर ज्यों ही मैं स्का भीरा घीर जयन्ती के रोते रोते उठकर मेरी आर देखा। फिर दोनों मुझसे लिपटकर बहाक मारकर रोने लगी। जब तो मैं भी अपने-आप पर कानू ब रस सफ़ा घीर ज्यों के साथ रोने लगा।

फिर हम तीनों कमरे के बीच में बिल्ली बटाई पर बैठ गए। घीरा का लड़का घीर जयन्ती के दोनों बच्चे हूँ रोता देखकर बड़े संभलत से हाँ रहे थे। मैंने उनके सिर पर हाथ फेरा और उन्हें अपने पास ही बिछा लिया। मैं तो चुप ही गया था पर भीरा घीर जयन्ती अभी भी सिद्धक रही थी।

इसी समय माँ ने द्वार पर घाकर कहा 'बच्चों, घनी तक भी खरम नहीं हुआ क्या तुम भाई बहनों का रोना-बीना? घातिर घीर कितना घीर कम तक रोमोसे? बैसे रोना ही चाहो तो जाये बिम्बपी पड़ी है। बीच रोकता है तुम्हें रोने से?' पर घनी तो उठकर हाथ मुह जोर्यो। पर का कुछ नाम करो। मा तुम लीय भी मुन घनेली ही से पत दिन नोकरानी की तरह ही तारा काम करवाना चाहते ही?"

बहु सुनकर हम तीनों हनका-बबका रह गए घीर जब हुकने मट की घीर देता, ता के बहो से या चुकी भी। घांतु जरी घाँवों से हम तीनों के एक-दूसरे की तरफ देखा और फिर सरनें लुका ली। मुनसे न रहा गया। जरा लीके स्वर में मैंने घोष से पुछा 'भीरा, माँ को यह हो गया क्या है? पहले तो कभी के इस तरह बातचीत नहीं करती थी।

क्या बडाऊ बीबा! घीरा ने बड़ी आशय में कहा 'पिताजी:

के घनिष्ठ क्षणों में मैं भीरु जयन्ती ही उनके पास रहे। मैं तो उनके कमरे में भी नहीं घुसी। उन्होंने उन्हें साब बुझाया धनुस-विजय की भीरु कहा कि आखिरी बार तो मुझसे मिल जायें, मैं उससे माफी माँगना चाहता हूँ, पर मैं नहीं मर्द—हमारे लाख समझाने-बुझाने पर भी।

यह तुम क्या कह रही हो ? मैंने आश्चर्य से पूछा।

'कहने की अब बात ही क्या है, भैया ! जयन्ती ने बड़े गसे से कहा पिताजी के अनुरोध के उत्तर में मैंने हाँ पीसकर कहा कि मैं माफ़ करके इस गराबम को क्षान्ति भीरु सुख के साथ नहीं मरने देना चाहती। मैं तो इस मृत्यु के जखड़ों में घसन्तीप भीरु धमाकों की पतन से पल पल ठड़पता देखना चाहती हूँ। इसने मेरे जीवन की सुख प्राप्ति छीनी है मेरे सारे सपनों और मनसूबों को धूस में भिगा दिया है—तो मैं क्या इसकी मृत्यु की सुख-प्राप्ति भी न छीनू ?'

इस बार भाबूस से भर रोंगठ खड़े हो गए। भीरा ने घामब मेरे चहरे के भाव पढ़ कर मेरा हाथ बढाया और बोली तुम अपना जी न खराब करो, भैया ! इस समय न कुछ कहना या करना।

'पर बीबी भैया से कोई बात छिपाने से भी क्या फायदा ? तुम्हीं से कह रही थी नि बिता जी के बाद अब इस बार के द्वार हमारे लिए सदा का बन्द हो गए।'

घरी पर मैं सब कहती हूँ कि मैंने यह नहीं कहा।

'छीं छीं' तुम ऐसा क्यों सोचती हो भीरा ? मैं तो नहीं मर नहीं गया। मरा जर तो तुम्हारे लिए सदा तुसा है।

यह दूसरी बात है भैया ! मैंने भी से चिढ़कर यह बात इस लिए कही कि पिता जी के मरने पर हम दोनों बहनें ही नहीं पास-पड़ान को कई घोरतों घोर मर्द भी रोमे पर हूँ है कि मैं भी माँवों में एक भी घाँसू नहीं थाया।

दोनों बहनों की बर्बनें मुक मर्द। मैं एक घनीब-से पछोपेठ में पड़ गया।

मीरा धीर बयान्ति ने मेरा अनुरोध भी नहीं माना धीर दूसरे ही दिन अपने-अपने घर बस दीं। बाँधे समय दोनों ने बड़ा सख्त वृष्टि माँ को देखा धीर जैसे बड़े मनमने नाव से उनके बसे लपकर चिसकते हुए बिना ली। पर माँ बरदाहर परपर की मूर्ति की तरह एकदम कठोर धीर भावहीन बनी रही। दोनों के धिर पर हाक छेरने के सिवा न तो उनके मुँह से कोई धाँसीर्षजन निकसा न उन्होंने दोनों को कुछ दिन धीर ठकने को ही कहा। मैं दोनों बहनों से कई वर्ष बाद मिसा पा, सो मैंने जकर कहा कि धत्री ने दो-चार दिन धीर बर जाती, तो प्रच्छा होता।

इस पर माँ ने मुझे ही सिद्धवठे हुए कहा तू भी बड़ा पापम है ते। तू तो अपनेसा है न तेरे घर है न बाप पर इनके तो अपने पर है। बाल बच्छ है। फिरने दिनों तक बाहर पड़ी रहूँगी मे ?

माँ को यह बात सुनकर मैं मुन्न रह गया धीर धीरा तथा जपन्ती के बिहरों से भी लया जैसे उन्हें माँ की यह स्पष्टोक्ति बहुत प्रच्छी नहीं लगी।

एक घर में मैं धीर माँ केबल दो प्राणी ही रह गए थे। मेरा वहाँ के बाठाबरख में छिप लेना तक जैसे हुआ हो गया। माँ घर में उपर-उपर घूमती फिरतीं घर मुखसे कुछ भी नहीं बोलतीं। कभी कभी धाकर चिर्क नहाने या खाने का ठकाना कर जातीं। खाने बीठ्या ती बुरा जाना वाली मैं एक ही बार में बरोसकर बिना पुँछे-ठाँधे सामने रख जातीं धीर फिर कोई बात नहीं करतीं। उनका यह व्यवहार मेरे लिए दुसर धारचर्च से ज्यादा एक प्रसन्न कपोट का कारण बन रहा था।

साबिर, एक दिन मैं कुछ ही बीठा माँ मैं तो पिठाजी के विषय का दुर्नबाह सुनकर यहाँ रीढ़-बीड़ा धाया। पर तुमने कभी मुझसे लोभे मुँह बाग भी नहीं की। सन्तान के प्रति जो स्नेह माँ को होना चाहिए, वरि के प्रति जो भावना-धारणा परनी में होनी चाहिए, वे जैसे मुझे छू भी नहीं गईं। इतने दिनों से मुझे ऐसा महसूस हो रहा है, जैसे मैं किसी अपरिचित के घर में रह रहा हूँ।

माँ कोई पुस्तक पढ़ रही थी। उन्होंने सामने से पुस्तक हटाकर मेरी ओर देखा और व्यंग से मुस्कराकर फिर किताब पढ़ने लगी।

मैं कुछ-ब्रावच में भा गया। पास जाकर मैंने हाथ से माँ के सामने की पुस्तक एक ओर हटाकर बरा ठीकी घावाज में कहा मैं तुमसे कुछ कह रहा हूँ माँ बीमार से नहीं। इस सहज भाव से मेरी बात धनसुनी कर आखिर तुम मेरी उपेक्षा क्यों कर रही हो।

माँ ने भाँके सिफोड़ कर मेरी ओर देखा। फिर बग़ा और उपेक्षा विभिन्न मुस्कान के साथ बोली 'अगर मान लो तो तेरी ही बात ठीक हो तो क्या तू मुझे सजा देगा इसक लिए ?'

मैंने तनिक भीमें स्वर में कहा 'यह भसा तुम कैसे सोच सकती हो माँ ? लेकिन मैं तुम्हारे इस विचित्र व्यवहार का कारण नहीं समझ पा रहा हूँ।'

'तो समझने की जरूरत ही क्या है ? क्या घादमी दुनिया की सारी बातों को सारे कारणों को कभी समझ भी पाया है या समझ पाएगा ?'

दुनिया और उसकी सारी बातें जाएँ जहन्नुम में। मैं तो अपने घर की इस एक बात को समझना चाहता हूँ।

'पर आखिर क्यों ?'

सिर्फ अपने सम्बोध के लिए अपनी निर्भ्राम्ति के लिए इस मूर्खी को सुनसाना चाहता हूँ।

क्या सचमुच यह इतना आवश्यक है ?

हाँ कम से कम मरे लिये तो है। तुम्हारे लिए चाहे न हो।

'पर तेरे लिये क्यों है ? जिसे तेरे पिता जीवन भर समझ नहीं पाए, मैं नहीं समझ पाई आखिर तू ही क्यों इतना जरूरत है उसे जानने- समझने के लिए ?'

'तुम तो माँ ऐसी बातें कर रही हो जैसे मैं तुम्हारा कोई हूँ ही नहीं।'

सहज भाव से मुस्कराकर माँ ने कहा 'हाँ सचमुच तू मेरा कोई भी

नहीं है। तेरी दोनों बहनें धीरे धीरे तेरे बिना भी तेरे लिए कोई नहीं हैं। गुन सब मेरे लिए सब अपरिचित ही रहे हों धीरे धीरे भी रहोये।”

एकबारपी में जैसे सक्ते में था गया। मेरी दोनों बहनें मां के बेहरे पर लगी थी। उठकी नसें तब गई थीं। लसाई बक रही थी। वह कमध-कमेर होता था रहा था। साथ साहस बटोरकर मैंने फिर कहा “मां तुम तो एक सहज ली बात कः भी रहस्य बना रही हो।

मैं ममा कहां बना रही हूँ? वह तो न जाने कब से स्वतः बना बनाया एक रहस्य ही है। पर तू क्या करेवा जानकर छते?

मैंने कहा मैं अपनी बिआसा तुम पर पहले ही प्रकट कर चुका हूँ। कैसा भी प्रशिक्ष या कटु सत्य क्यों न हो। आज तो तुम्हें बताना ही पड़ेगा। बिना यह सब जाने मैं एक क्षण को भी धैर्य से नहीं बैठ सकूँगा।

यह कह कर मैं मां के सामने बड़ी कुर्सी पर बैठ गया। मां ने एक क्षिप्य दृष्टि से एक क्षण मेरी ओर देखा। फिर सहसा उनके बेहरे की लगी हुई नसें कुछ डीसी हुईं। वे बोली ‘तू तो बड़ा जिद्दी है?। अब गढ़े मुझे सबकुछकर सबों स्वर्ण परेषान करता है?’

मैं कुछ न बोला। अपलक दृष्टि से सिर्फ उग्रे देखता-भर रहा। उन्होंने हाथ में ली हुई किताब सामने की तिपाई पर रख दी और कहना शुरू किया, “हर बलि का जीवन एक रहस्य से कम नहीं है। धीरत का ली घायल हमसे भी कुछ अधिक। पर पतिव्रता से लेकर बेरपाकृति तक के बीच भी सीमा-रेखा इतनी लुप्त धीरे धीरे होती है कि उसे घाबर रहस्य का परदा डालकर भी छिपाया नहीं जा सकता। मैंने होय संभाला उनसे पहले ही मेरा विवाह हो गया। जिस जस्ट बाबी धीरे अवरदस्ता के गाथ वह ‘बलिब संस्कार संवत्स्र हुआ उससे मुझे विवाह से ओर भी मुला हो गई। जो जीवन मैं नहीं जीना चाहती थी जिसके लिए मेरी कोई तैयारी नहीं थी उसी को जीने के लिए मुझे मजबूर किया गया। मैं करती भी क्या? एक नाबालिय बालिका जो अपनी इच्छा के विरुद्ध एक दृष्ट-दृष्ट रूप को लीप ली गई थी।

पहली ही रात बसातकार से हमारे तमाकबित साम्प्रत्य जीवन का धीयस्येय हुआ। उसकी प्रतिक्रिया तेरे पिता कहलानेवाले व्यक्ति के मन में क्या हुई कह नहीं सकती पर मेरे मन में तो बड़ी खटाब हुई। जती दिन ने मैं बसस पूणा करने लयी—बड़ी गहरी भीर अहरीमी हुआ।

कुछ समय बाद मेने जाना कि वह व्यक्ति अपुनक है। पर ज्यों-ज्यों दिन बीतने सने पास-पड़ोस की स्त्रियां सोद-बोदकर पूछने लगी। पहला बच्चा कब तक होगा ? मैं क्या कहती ? मास धीर नमरों ने मुझे बुरा भसा कहना शुक किया। इसी के साथ पास-पास के इसकों में मुझे बांझ बोपित कर तेरे पिता का बंध बसाने के लिए दुसरे विवाह की बर्षा भी गुनाई पड़ने लयी। फिर कुछ सयानों में मिसकर सलाह दी कि वह का इलाज कराधी देखी-देवताओं की मानता बोली। वह भी किया बया। पर उससे भी क्या जाक होता ? मेरी धनीब हासत भी बर नया करती ?

' जबर तेरे पिता धीर पर बालों का व्यवहार मेरे प्रति दिनोदिन कड़ा धीर कड़ा होता गया। पर मैं मेरा रहना दुनर कर दिया गया था। बाधिर कुछ धर्म बाद एक बीच से मेरा इलाज कराने का तम र्था। कभी तेरे पिता या तेरी दादी के साथ मैं उसके यहाँ जाती थीर कभी वह हमारे घर आता। उसने मुझे देखा भासा तो बहुत पर कोई काम बया नहीं बी। कई दिनों बाद जब मैंने रोष से पूछा कि यह इलाज कब तक बलेगा। तो उसने मुम्काकर कहा जब तक तुम्हारे पति की इज्जत नहीं बचती। मेरी कुछ समय में नहीं आया। भर बुबारा पूछने पर उसने कहा 'तुम्हे कोई रोग हो तब नो इलाज ही। समय में तो तुम्हारा पति नपुनक है। प्रत' उससे तो तुम्हारा कोई मन्थान हो नहीं सकती। अवर तुम चाहती हो कि बसक बंध बने ममाब में जतकी मर्दानगी की धाव जमें धीर तुम्हारी इस पर मैं चांभित पूर्वक दुजर भी हो तो तुम्हे कितो भी तरह से कम-ने-कम एव सन्तान तो देनी



पड़ेगी। तुम्हें अगर कोई आपत्ति न हो तो मैं। ... कुछ पर  
 जैसे सहसा घासमान टूट पड़ा। मैं कुछ भी न बोले पाई। उसने  
 घाटबस्त स्वर में कहा 'ऐसी कोई जन्ती नहीं है। मत ठग घों  
 देसना।'।

उस दिन मैं सारी रात सो नहीं पाई। मेरी जैस कल ठमक  
 में ही नहीं आ रहा था कि क्या करूँ ? क्या न करूँ ? ठेरे पिता ने कुछ  
 कि इलाज जब तक चलेगा तो मैं कुछ भी जवाब नहीं दे पाई। दूसरे  
 दिन जब बीच आया तो मैं नीची मजदर किए बड़ी डरी हुई ही बसे  
 थी। उसने तर्जनी से मेरी छोड़ी ऊपर उठाकर मेरी आंखों में डोरा  
 घोर बोला 'आपिर जब तक यह मगगला सही खोपी है' मैं  
 का न बोली। उसने मुझे दोनों हाथों से बकड़ कर बाड़ा बिना घोर  
 धपनो बलिष्ठ मुजाघों में बाँध लिया। इसके बाद जैसे मैंने अपने होश  
 को रिए। मेरी कुछ भी समता में नहीं आया।

बहुतो सज्जन बोरा हुई। इससे मेरे बाँसपब घोर ठेरे प्लि  
 को बसुसकना का घपनार तो जैसे-जैसे मिया पर बंध चलाई के लिए  
 दुख उल्लाख को कादना बरकी बनी रही। लाचार होकर फिर बीच  
 के इलाज दुरु हुआ घोर कुछ महिनो बाद जवन्ती पाई। फिर वही  
 विरसत बड़े विरुप्या 'आपिर फिर इलाज एक हुआ घोर ठेरे  
 ५२५ ५५. ।

सगर दूर हो जा मरे सामने से धक्क ठेरा स्वान यहाँ नहीं उस बीच के घर में है ।

मैं भीचक रह गई । जिस आधमी की नपुंसकता का कर्मक माने और जिसका बेश बसाने के लिए मैंने अपनी पवित्र नीतिकथा और मृन्दन-स शरीर की बलि दी थी । उसी का यह व्यवहार ! यह बदना ? पर मैं रोई-भिड़भिड़ाई नहीं । मैंने संमसकर उस तर-पिछाव से यहाँ कहा कि मरा स्वान घर कहीं है तो यही और इसी घर में है । अगर तुम निकालना चाहत हो तो समाज के समाने अपने पाप को स्वीकार करके ही मुझे उस बीच को सौंपना होगा । बड़े-बूढ़ों ने मिलकर बात को वहाँ का ठहाँ दबा दिया और कुछ रुपय पैसे बेकर बीच को कहीं बाहर भेज दिया । इसके बाद से मरी जिन्ययी इस कीड़े-मकोड़े से बहुर मा मिला न रहो । घर में काफी पड़ी मिछी होती तो नहीं भी जाकर अपना प् पाम सेठी । पर बीसा कोई विकल्प न होने से मुझे अपनाग और उपजा के इसी मरक में सड़ने का बाध्य होना पड़ा । तेरे पिता ने उठ दिन के बाद मुझे फिर कभी कोई बात नहीं की और मैंने भी उसका दिन जलाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी । मरे पास उन मराधम से बरसा मैने का और उपाय भी तो नहीं रह गया था । उठक मरम पर धब मैं महसूस कर रही हू कि जैसे एक बहुत बड़ा बोल मेरे मन पर से हट गया है । जैसे मौत से भी ज्यादा खौफनाक एक साया मेरे मन पर से हट गया है । धात्र सचमुच मैं लुप्त हू ।

माँ को चुप बैठकर मैंने उन्हें पीर से देखा । उनके चेहरे की गलों का तनाव कभी बीसा पड़ गया था और उनकी पचराई माँकों की मोर पर जैसे लुपी का एक छोटा सा घाँसू बमक धाया था । उसकी बमक बानो मेरी माँकों में एक विचित्र-धी बकाबीब पैदा कर रही थी ।

● श्रीगोपाल आचार्य

## अपनी-अपनी पसन्द

सरोज की उम्र के साथ ही उसके पिता की चिन्ता भी बढ़ने लगी। उन्हें यह चिन्ता धकेले ही करनी पड़नी थी; कारण उनकी पत्नी का देहांत जब सरोज एक मिरीह बच्ची भी नहीं हो चुका था। सिद्धिंत परिवार था। सम्पन्न था। सरोज के सिवाय और कोई उत्तराधिकारी भी इसका नहीं था। सरोज शिक्षित थी और मुर्मसूत्र भी। पिता चाहते थे कि घर के चुनाव में उसकी भी सहमति आवश्यक हो।

घर की उमराव एक घरसे से जारी थी परन्तु चुनाव सम्पन्न नहीं हो रहा था। पिता की पसन्द के बाद ही सरोज की पसन्द का प्रश्न उठता था। आखिर वह दिन भी आ गया। परन्तु लड़कों के लड़की को देखे बिना ही भरने में इन्कार कर दिया। चिन्तावनी का आदान प्रदान उन्हें अपने निश्चय पर पहुँचाने के लिए बाधनी नहीं था। सरोज के पिता ने अपनी लड़की को एक तो नहीं बल्कि ही नमावित बरों को साथ-साथ दिलाया स्वीकार कर लिया। प्रबन्ध यह हुआ कि सरोज अपनी एक सहेली के साथ तीनों परिवारों से सम्बन्धित एक परिवार में पसन्द किये जाने के लिए निश्चल समय पर पहुँच आयी। इस प्रबन्ध से व्यक्ति की भावनाओं पर परिवार की इच्छा पर और भारतीय संस्कृति पर बाह्य आ बोट क्यों न पड़ती हो परन्तु यह सब अपना सब पढ़ने पर सबका स्वीकार करना ही पड़ता है।

निश्चल समय से पूर्व ही सरोज के पिता सरोज और उसकी एक सहेली द्वारा पूर्व निश्चल स्थान पर पहुँच गये। उनसे पहुँचने

के बोड़ी देर बाद ही एक युवक धाया धीरे उपस्थित कृष्ण से अनिवादन आवाज प्रदान करके बैठने के कमरे में चला गया। उसके व्यवहार से यह मासूम होता था कि इस परिवार में इस प्राणतुक का आना-जाता है। मेज पर पड़े घड़बदार को उसने अभी उठाया ही था कि परिवार की एक महिला तारा के माथे कमरे में आई धीरे मुस्कराते हुए बोली—

‘आ गये बिलोद बाबू ?

हाँ भाभी !

पर अभी तो समय भी नहीं हुआ है ?

‘ममम बीतते कोई देर बीड़े ही लगेनी !

‘पर, ये घाने बालें क्या समझेंगे ?

यही न कि बहुत पाने की बहुत अधिक उत्कंठा है, सो ली है ही। धीरे कुछ ? आपकी तारीफ ?

‘कुमारी ठाय। हमारी सरोज की सहेली है।

‘नमस्कार !

‘यह ‘नमस्कार किस बात का ? तुम पुरुष लोग बहुत आलाक होते हो। यहाँ भी अष्टाचार और श्रम।

‘धीरे तुम धीरेसे पुरुषों के सब अष्टाचार आलाकियों को तुरन्त ही ममम सेती हो क्यों ठीक है न ?

‘एक बात पूछू बिलोद बाबू ?

‘अवश्य

‘क्याह से पहले सड़कियों को देखने की यह हिमाकत तुम लोगों से क्यों फैला रखी है ?

‘आई माहब से ऐसे प्रश्न का उत्तर अब तक नहीं लिया आमी ?

‘ये बिचारे इस शमड़े में नहीं थे।’

‘हमने भी कब किससे कोई शमड़ा लिया है ? तुम्हें बिचारे को

भी माँजी जैसी कोई साधिन मिल जाय तो भगड़े की कोई जरूरत ही नहीं ।

सरोज तो मुसल भी अधिक सुन्दर है ।

जब पान वाला भाई साहब से अधिक सीमागवान होगा ।'

तुम सोप क्या करते हो ?

जा बेलने की बस्तु है ।

पीर कुछ ?

पीर कुछ भी नहीं ।

'उससे जीवन बन जायगा ?

मैं तो बसा सूया ।

सपनी एक भी सीधे में देखी है ?

कई बार ।

मात्र ?

भान्ज पहरी में भूल गया ।

मैं कमा भेज देती हूँ । परा बाल संभार लो । सपड़े 'साहब' जैसे तो नहीं हैं पर चल पायेंगे ।

'माँजी ! सुनो तो ।'

मैं बची । सासब' भावये हैं । उनकी भी परीक्षा हानी है । देखें कौन मकल हाता है ? इतना कहूँ ठारा के साब बापिन चर में चल दी ।

साहब भाये । फेड हैट काना चरमा रेगमी मूट टाई, चमकते मूट । साप में बो मित्र । सारे पर को एक मकर में देख जाता । ठारा क माँजी पाठ से सुन्दरे भी मकर न समान न दुधा । कुछ सण विद्यान चर बोले—'तान सेमा ।' .. कोई है भी ?'

'तब है । भाइये । इकर तपरीक मारये, साहब ।' वाली विनोद की थी ।

मो हो ! भाप है, विनोद बाबू ?'

'जी कोई ऐतराज तो नहीं है ? भाइये ।

‘घाघ भी चाय पीने चाहे हैं ?

‘यदि भिन्न चाय घाघके साथ ।

‘भरूर ।

गद कमरे में पहुँच गये । कुछ ही क्षणों में सराज के पिता परिवार के मासिक के साथ कमरे में घाघे । बिमोद ने इन घानुन्तकों का अभिवादन किया । परिवार के मासिक ने बिमोद व अन्य उपस्थित बुद्ध का सरोज के पिता से परिचय कराया । फिर परस्पर में बातें होने लगीं । इसी बीच तारा सरोज व परिवार की एक और सड़की ऊया कमरे में आई । ऊया ने परिवार के मासिक हरी बाबू से चाय के सिने पूछा । हरी बाबू ने ऊया के प्रश्न का कोई जबाब न देते हुए घानुन्तकों का परिचय देना प्रारंभ कर दिया । बोस ‘ऊया मेरी छोटी बहिन सरोज बी०ए० प्रोफेसर नेमबजी की एकलौती पुत्री तारा सरोज की सहेली ।’

पूर्वाप्लुक सड़कों की घोर संकेत करते हुए वे बोस—

बिमोद एम०ए० दर्शनशास्त्र पाठक बाबू पत्रकार कवि गायिकाकार, लिखाड़ी एक स्वस्थ युवक ।

मिस्टर हरीश बी० ए० रईस जमीदार बंकर, भिन्न एण्ड माइन्स धोतर एक अग्रान्त व प्रसिद्ध परिवार के सदस्य ।

मिस्टर हरीश के भिन्न’ इस संक्षिप्त परिचय के बाद हरी बाबू ने ऊया को सम्बोधित करते हुए कहा—

‘ऊया । वे सब लोग घाघ हमारे मेहमान हैं । सरोज और तारा भी । मैं और प्रोफेसर साहब ऊपर के कमरे में बैठते हैं । तुम इन्हें चाय पिला देना । ’ साथ ही दोनों व्यक्तियों ने उपस्थित बुद्ध से हाथ जोड़ कर आशा से सी ।

ऊया ने, अपने माई व प्रोफेसर साहब के कमरे के बाहर चले जाने के बाद, एक योज मेज पर सजी साध नामची पर से घाघरतु चरन उतार लिया । कृतियाँ इस मेज के चारों घोर पहले से ही

तुम्हें ही । ऊगा के संकेत पर सभी इन पर धाकर बैठ गये । सभी न जाना धुक किया । हरीश साहब ने सराब स पूछा—

मापको क्या-क्या चीज है ?”

मैं जाना बगामा पसन्द करती हूँ ।

भोर ?

सिमाई

घोर ?

“सफ़ाई ।

बाबना गाना ?

समस्त सेती हूँ ।

‘भूमना-करना ?

अधिक पसन्द नहीं है ।

‘पढ़ना लिखना ?

‘ पसन्द करती हूँ ।

इतने में ही परिवार का बासक-नीकर आय लेकर आया । ताप ने उठकर आसी का दरवाजा तोला । मगर ज्योंही वह आय-तापसी लेकर बढ़ा कि सतका एक पाँव हरी के एक छोर से घटक गया वह गिरा । बर्तन गिरे । आय गिरी । कुछ गरम छीटे मेहमानों के भी गये । बासक नीकर तो सबसे पानी से झुलस सा गया । सभी जमीन से उठा भी नहीं या कि एक तमाचा कसकर उसके गाल पर पड़ा । साथ ही सबने मुना—

“हरामजादा उम्नु का पट्टा बदनमीत्र । बाणी हरीश साहब की थी ।

बासक ने दोनों हाथ अपने दोनों गालों पर रख लिये । सप एक के लिए अपने साहब की भोर बीजडा में देना । वो धानू भावों

से टपक पड़े। 'साहब बरख पड़े 'नासायक ! यदि मेरा नीकर होता

हरीश क मुँह से मोक्ष शब्द निकल रह थे साथ ही उसने बासक को अपनी बाहों में ले लिया। एक शब्द प्रसाद क रूप में दे दी।

प्रथम शब्द टूटे बर्तन बटोरन जता। विनोद क सहकियों में उसकी मदद की। वह ऊप्या क साथ कमरे क बाहर जसा गया। ऊप्या साथ की गई मामूली लेकर तुरन्त ही मौट भाई। इसके बाद सबने कहा "जाने शीजिये हरीश साहब ! हरेक से ऐसी जसती हो सकती है। सबने माया साथ पी घोर पारस्परिक अभिवादन क बाद सब जसे पये। सबके जसे जाने पर तारा ने सरोज से पूछा—

'वर पसन्द आया ?

'आ गया।

कितने प्रथम बास थे ?

यह उसके नाई की शूबी थी।

'कितने प्रथम कपड़े थे ?

यह उसके वर्जों की करामात थी।

घालीघान मकान धन-बोसत ?

इन सबमें उस साहब का योग नहीं रहा है तारा। इन सबसे व्यक्तित्व नहीं बनता।

फिर ?

'मेरी पसन्द घोर ही है। मानव को मानव की सम्बेदना चाहिये। भ्रम घोर सम्बेदना के प्रभाव में व्यक्ति बड़ा बनता ही नहीं। इसीलिये'

"ताबी नहीं होयी ?

सबस्य होयी।



‘किससे ।

‘उस छात्र’ से नहीं ? ’

‘किस ?’

‘विश्व नाथू से ।

सरोज । साथ ही तारा ने सरोज को आबर भीर प्रेम से चूम लिया ।

हरीश के परिवार से सूचना आई कि लड़के को लड़की पसन्द है परन्तु उन्हें पतार मिला कि लड़की को लड़का पसन्द नहीं है ।



● डा० रागेश राय

## नई जिन्दगी के लिए

हम नौ सड़कियाँ थीं। मेरी उम्र उस समय करीब पन्द्रह साल की थी। मैं समझदार थी। जब जब मैं स्वयं तीन बच्चों की माँ हो चुकी हूँ मेरा दृष्टिकोण बहुत बदल गया है पर तब नई उमर थी। तब क्या मैं इतनी सकल रहती थी कि घमसियत को समझ पाती। लेकिन तुम्हें उसी समय की बात सुनाती हूँ। पन्द्रह मास में ही मुझे काफी काम करना पड़ा था। मेरी माँ को मुझमें बहुत अधिक स्नेह था।

माँ एक धीर प्रसव होने वाला था। उनका नौ बार सड़कियाँ ही चुकी थीं। धीर एक दूसरी बहिन में समय का इतना कम अन्तर होता था कि उन्हें संभालना काफी कठिन हो गया था। तीन जानवर में जब भी बही चार मास पुरानी हानत बन रही हो।

मुहम्मद में किसी-किसी के ही घर में जल था। हम सड़क में पानी भर लाया करते थीं। जब मैं जल पर पानी भरने जाती तो ठकुरानी ने पूछा—बच्चों तेरी माँ के कुछ होना वाला है ?

मैंने तिर हिलाकर स्वीकार कर दिया। ठकुरानी भला कुछ होनी। पूछ बैठी—कितने दिन रहे ?

मैंने दबी बजान से कहा—बस दो ही ?

ठकुरानी मुस्करा दी। मैं उसमें डरती थी क्योंकि उसको सड़ने का अच्छा अन्धास था धीर चिन्मा-चिन्माकर मुहम्मद को डर गेती थी।

घामद घामने की बिड़की में बैठे हुए सड़के में मेरी बात सुन ली क्योंकि वह हँस रहा था। मुझे बस मात्र जमी हामाकि बात कोई नहीं

हुई थी। मैंने झट से बरबाजा बन्द कर लिया धीरे भीतर घा बँठी।

माँ खाट पर पड़ी सो रही थी। बच्चियों में कुछ सो रही थी, कुछ बेस रही थी।

मुन्ना मुमता बो बरस छोटी थी। वह कहीं गई हुई थी। उसने कपड़े धोयन में ही पड़े हुए थे।

बाबूजी बफ्तर में मौकरी कर रहे थे। उसकी ठगक्याह प्रसो रुपये से ज्यादा की नहीं थी। मैंने उन्हें कभी प्रसन्न नहीं देखा। उनके माँके पर पहरी लकीरें पड़ी रहती थी। नूँ छे काली धीरे लम्बी थी। लोग कहते हैं मैं सन्ही पर गई हूँ।

जब वे बफ्तर से लौटते तब भी मैं पके-मदि दिखाई देते जब जाते तब भी उनमें फर्क दिताई नहीं देता था। उस बफ्तान के कारण उनके होंठों पर एक बालापन छाया हुआ रहता और उनकी धाँसों में एक टिमटिमाती सो चमक दिताई देती थी। बफ्तर से घाते ही वह हमें एकदम झटके लगते। मैं रोने लगती।

हृदय भीतर से घुमड़-घुमड़कर घाँसों की राह निरलने लयता पर उन पर इन सबका कोई असर नहीं होता। छोटी-छोटी बच्चियों घपने छान-छोटे हाथों से मुझ सहसाकर सारवना देतीं। उनका मुँह घादनामन बहुत सहायक होता। तब वे बहुत कठोर थे। मैं सोचती हूँ भगवान् ! दिन भर काम करती हूँ। सब घर संभालती हूँ पर मैं नहीं थक रहते। मैं सखी-सहेलियों की घोर बैगती, जिनके पिता उन्हें प्रेम करते थे। तब मुझे लगता कि मेरे पिता बनप्य नहीं थे। घाबद उनमें हृदय नहीं था। कभी-कभी भोज बढ़ने पर मार-मारकर वे बेहोश कर देते धीरे बच्चियों की कोमल देहों पर नील-नीले दान पड़ जाते। जब उनका उठा हुआ नैह चलता ही जाता धीरे बच्चियों की घाट स घर करने लयता घर में बुहराम मच जाता तब बड़ोस की बुझिया बाबी वा स्वर गुनाई देता—क्या पर हाब उठा रहा है चिरवी ? यह तो कोई चीत नहीं है। घरे छरे घर में बजम लिए हैं निठुर। निर्दयी बम कर क्यों हरया कर रहा है ?

उस स्वर को सुनकर पिता जैसे चीक सल्ले धीर सौट पड़ते ।  
उनका सिर झुक जाता और वे सूनी घाँटों से देखने लगते ।

इसपर माँ की हासत वहुसे से भी खराब हो गई थी । वे बाबूजी की  
मनोभ्रमों से पूरुणतया परिचित थीं । घाबरात कभी-कभी उन्हें उन्टी हो  
जाती कभी मन मित्तमाने सगता । सिर का दर बढ़ गया था । हाथ-  
पाँव पीसे पड़ जाते थे । धीर में जब उन्हें देखती सबेब उनकी घाँटों में  
एक भय दिखाई दिया करता था ।

बाबूजी दिन भर पूजा करते थे । दफ्तर में भी म ह में हनुमान  
मूटका रखते जो बाबा साँबलदास ने उन्हें पुत्र होने के लिए दी थी ।  
उन्होंने कहा था इस मन्त्र से कुछ भी बढ़कर नहीं । अगर यह भी  
काम नहीं देता तो समझ से ठेरे भाग्य में घाटे का सङ्का भी नहीं  
मिला है । पिताजी ने इस दबकावय समझकर मन में भागण कर  
लिया था ।

पाम को जब पीपस की खड़खड़ाहट सुनाई देती जब पंधेरे में  
मशिर का गंध भरा बुभा गली में सौटने समता धीर घर के बाहर के  
उस तिक्नेने बरतने पर छा जाता, एक छोटे-से निवाड़ के बटोले पर  
में बीटी घपनी घाटभों धीर नबी बहिन को पुषकारती हुई लिसाया  
करती । कभी कभी ता मुझ कुर्मत मिसती थी । बस उन्हें बुभाया नहीं  
कि एक छोटे-छोट पैरों से बसती हुई घाटी धीर बूनरी मुटनों के बल  
सरकने लगती । मुझे बोगों घरयम्य प्रिय मामूम देती ! बैचारी उन्हें  
कोई स्नेह तक देने वाला न था ।

मौब मुझे इतनी गहरी घाटी कि जरा सा सल्ले ही सारी सुषकुष  
ता जाती फिर कोई किउनी हो घाबाजे से सहज में नहीं उठती थी ।  
ठकुराभी मुससे गहरी थी—क्यों पैदा हो गई हो कम्बबतो ! क्या  
बाबूजी को जिन्दा ही मार दासोकी ?

जब मैं यह सुनती तन-मन दमासा होने सगता । इसमें हमारा  
क्या बोव था ? पर जब मैं माँ को देखती तो तयना वह सब झूठ था ।

मां की माँओं में दुख ही दुख था पर जब मुझे देखतीं तब उनमें एक याचना होती। मैं उस दृष्टि की बमनीयता को देखकर मां की धीरे में मिर रबकर उन्हें हंसाने लगती थी। मैं समझती तो थी पर बात की बात असमियत को मुझे अभी तक तोलना नहीं आता था।

ठकुरानी कहती थी—भारता है ? मरे मारेया नहीं। जी-जी बाम जिसे पासने पड़े उसकी बुद्धि झपट नहीं हो जाएगी ? एक नहीं रहोगी। उमर धाने पर सब बल बोमी। बेचारे बूढ़े का कर्मान कर आभोगी पीर उसकी बेस रेल करते वाला तक कोई न रहेवा। कहीं किसी ने उसका मुह ही कासा कर दिया तो बेचारे को डूबने तक की ठीर नहीं मिलेगी। राम राम ! एक ही दो हो पूरी फौज है। बाप रे, क्या बान करठे-करठे ही बेचारे के मुठने दूट जावेंगे।

जब ठकुरानी भूमते ये बातें करती तो मैं घर में भाकर चुपचाप साठ पर पड़ जाती। तब क्या हमें मर जाना चाहिए ?

सदा की भाँति इस बार भी कुमा के घर में पहल ही कुर्ता टोपी आ पए जिन्हें देखकर मैं मयझी निरलब ही सब की बार मरे एक नाई बीबा होमा। मैंने मां की बिछाए। शाम को जब किठानी घर आए ती मैंने खुशी-खुशी पाकर कहा—बाबूजी !

उन्होंने परजकर कहा—क्या है ? मैं भुल ।

मां से बाबूजी की एक दिन रात की बात किये सुन ली थी।

बाबूजी कह रहे थे—मगर तुम बीसी अनातिन मेरे घर न आती तो क्यों मेरी जिन्दगी हुराम होती। सब कह बुझिया तो जिन्दा नहीं है जिसने पहली को बहुरं मरने पर हाय हाय करके सा बाला का टि केटा ! ब्याह कर । बर्ना घर का बीच कुल जाता है। सब जल रहे हैं न बिचाय । दिन में भी नहीं भुलते ।

उनके स्वर में शोक था। मां ने बीरे से कहा—वह ता किसी के बल की बान नहीं। जो अपमान देता है वह तो सब सैना ही पड़ना है। मगर ठेका ही है तो दो-चार का बला बीटकर घरने की छाया कर लो। उनकी जिन्दगी भी हुराम करने से क्या मिल जाएगा ?

बाबूजी कमी यहाँ वीकते कमी बहाँ। वे हाँफ रहे थे। उनका मन विद्रुप्त हो रहा था। मुझे उनको देखकर एक भय होने लगा। ऐसा लग रहा था कि प्रायः वे किसी के भय पर चढ़े हुए थे। क्या होने वाला था मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आया। तभी पिताजी का स्वर सुनाई दिया। उन्होंने पुकारकर कहा—बाई आ गई है।

एक बूढ़ी ने भीतर प्रवेश किया। मैं उस जानती थी। वह हमारे घर घबराती थी और हमारे परिवार की प्रशंसाओं और बुराईयाँ से परिचित थी। बिना मेरी सहायता के ही उसने अपनी राह बूढ़ी की ओर भीतर के दरवाजे के कमरे में चली गई जहाँ टिमटिमाता दीपक जल रहा था।

मैं कमी भीतर जाती कभी बाहर। मेरा दिमाग विस्तृत बनाने का हाँ बसा था। बाई ने मुझे देखा तो कहा—आ बेटी! थोड़ी देर जाकर छोड़ो। तुम्हें इतनी मेहनत की क्या जरूरत है। अब जरूरत हीनी क्या सुनी।

मैंने उसमें बेबी का भय देखा। वह मुझे धरतल करलाममी दिखाई दी। डरती-डरती मैं अपनी कोठरी में भाकर लाट पर जा बस गई। वकाल से शरीर बुर-बुर हो रहा था। पड़ते ही मुझे नींद आ गई।

एकाएक घर में बड़े जोर का शोर हुआ। नींद में पहल तो मैं समझ नहीं सकी। पर जब कोई भाकर मेरी लाट से टकराया और फिर पड़ा, हलान् मैं जाग उठी। एकदम घाँस लोलने में पहल तो मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पर भीरे-भीरे मैंने पहचाना। वह सुनपा था। एक-एक करके सब बच्चियाँ मरे पास इकट्ठो हो गई थीं।

मैंने फटी हुई घाँसों से देखा। बीचों-बीच सतपर हमला हुआ था। सुबहा कूट-कूटकर रो रही थी। बाकी बच्चियों में से कोई निमक रही थी कोई डर से चुप हो गई थी। मेरे तिर में बंद होने लगा। बड़ी कठिनाई से मैंने उनको भीरव बँधाया। जब वे चुप हुईं तब मैं उठकर कमरे के बाहर आई। जो देखा उससे जैसे मुझपर भयानक जोर है। हलान् डूक-डूक हो गया।

बाबूजी देखतीज पर तिर छोड़ रहे थे । मुझे लया डि काटने पर भी घब मेरे धरीर से लहू नहीं निकलिया । घर में एक बयागस्ता छा बाई थी । मैंने मां के कमरे की धोर पय उठामा । बाई ने मुझे हेरा धीर बया से मेरी धोर देखा । मैं कुछ भी नहीं समझी । मैंने पूछा—  
बया हुआ ?

मुना मेरी एक धीर बहिन हुई थी ।



## परिजन

बाहर तेज बूष से लपी बरती पर से घाम की सपटें उठ रही हैं। बिमबिसाती गर्मी में धंकारे लिए सूएँ नाय-साय बरती मूस की दीवार से टकरा रही हैं। सीबारे भी तप कर जैसे सात हो गई हैं। धन्दर कमरे में मेज पर टाँचे फँसाय बेनीबाबू सेन रहे हैं।

इडमास्तर से सन्होंने कह दिया है—घपना इन्तजाम कर नें। बे छुटटी घबडम पावेंगे। किमी के रोके न रहेंगे। कस बे स्कूम नहीं पावेंगे—हरमिब नहीं।

बेनी बाबू की गरम देह के धन्दर एक सांधी उठ रही है। उनके मूखे धीर खुले घोठी में से इबाम प्रन्वास तेज मति से बल रहे हैं। उबर से तप्य भास मेबों से बे कभी-कभी स्कूम के कमरे में चारों धीर देल लेते हैं। पास ही उनका घिप्य सोहन लड़ा है त्रिमका धु बला बेहरा बेनीबाबू को कवाचित् दिखार्द देता है।

बेनीबाबू जान धये हैं कि उनकी घणितम बमा धा गई है किन्तु मुबइ तक तो बिम्कुस ठीक ये। इसलिए सोहन तो इतना ही जानना है कि सन्हें मू मन गई है। घाम तक ठीक हो जाएंगे।

लेकिन बस्तुत बे महा प्रयाण की घोर घषसर हो रहे हैं।

बेनीबाबू ने घपनी घलसाईं घाँबों मे मोहन की घोर धु घली दृष्टि दासी धीर फिर घामें बन्द करमी।

बिघज जीवन का पूरा इतिवृत्त टूटे हुए कम से घाब उनके सामने घाने लगा।



—बनी छोटा सा है। मा मर गई है। घर में पिताजी और बारी है। बेंते टोले में और स्वजन भी है। बूढ़ी बारी अपनी बंधी बंधी से टटोल टटोल कर खाना पका सेती। पिताजी को बारी का पकावा खाना पसन्द नहीं है। घर के बाहर ही खाना खात हैं। कच्चा-पक्का जैसा बारी से पक्का है बनी का सेता है। डायी पिताजी के लिए रात-रात भर खाना लिए बैठी रहती है पर पिताजी हैं जो सब रात ही घर पर नहीं घात।

बारी का बूढ़ा दिल ठढ़पता है। पर बटे पर के काबू नहीं पा सकी है।

एक दिन बारी का भी अन्तिम दिन आ गया। वह नहीं रही है। बनी घर में अकेला हो गया है। पिताजी घर पर नहीं घाते हैं।

घात भी बनीबाबू घरेले है। भरे घर का कोई उनके पास नहीं। के दूर बियाबाग जंगल के बीच बसे एक छोटे से नख में अघ्यापक है। करीब पाँच घास पूर्व इस कन्द में छिपीस होकर घाये के।

बारों और के जनधार जंगल में न जाने कितने ही बहरीस जम्बु बघते हैं। बनी बाबू को लग रहा है कि जंगल की हर एक झाड़ी में से निकल कर एक-एक हिमक जम्बु आ रहा है और उन्हें घाये जा रहा है। उनके परिवार के साथ दूर लड़े ठमाया देत रहे हैं। पिता नि माता लड़के मरती और उनकी परती सभी लड़े हैं पर कोई उन्हें हिमक जम्बुओं से बचाता नहीं।

बनी बाबू घर-घर काँव रहे हैं-मत्स्य मयभीत-से।

बारी मर गई है। बनी का घर कोई सहारा नहीं रहा। पिताजी के दूगरी माती भी है। पीतबतना नबेती बहू को लेकर के घर में आ गये हैं। बनी बस मा प्यारह बर्ष का है। बारी के पास रहते रहते चाय बनाना कच्ची-पक्की रोटियाँ बका लेना बहू सीस ही गया है।

बेनी कास्ता है—प्रतिसय कास्ता ! माँ की मीठ के बाद उसकी रैल मास भी नहीं हुई है । बावी करीब-करीब घग्गी थी—इसलिए उसे समझा न सिखा सकी । अल्पवस्था से रहने के कारण जैसे तम पर महापन बढ़ बैठा है इसलिए बेनी धीर भी असुन्दर है ।

नई माँ गोरी है—सममरमर सी सखेव । यह बेनी को अपने पास आने नहीं देती । बेनी चाय बनाता है नास्ता बनाता है धीर बकत-बकत घर की रोटियाँ भी पका सेता है । तिस पर भी उसकी नई माँ उससे अप्रसन्न है ।

सम दिन पिताजी ने उसे पीटा है । बेनी की नई माँ ने भिकामत की है कि उसने भी उँडेल दिया । नर्हूँ हाथों से ऐसी सापरवाही हो ही जाती है । बेनी को पिता के हाथ पिटना असह्य लगा है । वह उसी दिन घर से निकल पड़ा है । वह भूम रहा है—जबलपुर कामपुर इसाहाबाब भागरे होता हुआ जयपुर घा गया है ।

टेबस के नये तस्ते पर पड़े बेनी बाबू के बिल का लूफान मानों तेज हो जाता है । उनके द्वास-अदवास धीर भी तेज बसने लगे हैं ।

सोहन ने बेनी बाबू को सकसोरा है । कहा है—बेनीबाबू घापकी तबियत अधिक सराब हो रही है । घाप घर बलिय ।

उन्होंने अपनी बेतमा सीटा कर सोहन की मोर देखा है, फिर बड़ी कठिनाई से धीरे से कहा—सोहन मुझे अपने कमरे में छोड़ घाभी ।

बेनी बाबू इस कस्के में एक छोटा सा कमरा किराये पर लेकर रहते हैं—बिल्कुल घरेलै—स्वजनों से दूर ।

सोहन ने उत्तर दिया है—नही बेनी बाबू घाज घाप धकेले न रह सकेंगे । घापको मेरे ही घर बलमा होवा ।

सोहन ने बेनी बाबू को अपनी पीठ पर लि लिया है । कस्के के एक किनारे बने हुए सरकारी स्कूल तक किनी तगि या गाड़ी की ब्यबस्था इस समय होना मुदिकन है इसलिए मोहन उन्हें पीठ पर ही उठाकर ले जाता है ।

छोहन बनी बाबू को छटा कर अपने घर ले आया है। उसने पर्लम पर बिस्तर बिछा कर उनको सुता दिया है और स्वयं डाक्टर को लेने डिस्पेंसरी की ओर चला गया है।

बेनीबाबू ने फिर अपनी भटकी घाँटों से छोहन के घर की दीवारों की ओर देखा है। एक भूमी-बिचारी स्मृति उनके सामने नाच गई है।

घर से भागा हुआ बनी जबलपुर टहरा है। वहाँ कोई बटीला न हुआ तो कानपुर आया है फिर साँधी बतिया इलाहाबाद दिल्ली की ओर आगरे में कुछ दिनों बसेरा किया और जयपुर में आ टिका। क्लक के चार पाँच बरव यों ही मटक मटकाकर अब वह सतरह-भटारह बरव का हो ही गया है। यहाँ आकर वह ट्रॉफिक पुलिस में कौन्सिलर बन गया है और सड़क पर टड़ा-सड़ा आने-जाने वालों को रास्ता दिखाता है। रातिन उतका स्वयं का रास्ता घुम हो गया है।

बेनी हिम्मत से बीचग की पाड़ी को पीच आ रहा है। गाड़ी के पहिये भरलता से चलने लगे। बेनी ने अब कुछ जोड़ लिया है—इतना जिससे कोई छापी फूटा सके। जयपुर के पास एक गाँव में बसकी बिराबरी के लोग खड़े हैं। वह मनसर अपनी बिचबरी के लोगों में जाता है, बड़े पीच से बातचीत करता है और अच्छे खाता-पीता वह लाता है।

बेनी ने छापी रचाली है—मई दुलहित बिमला को लेकर वह जयपुर से चल पड़ा है और बुनना रहा है। प्रमद में वह वहाँ टिका है वहाँ उसके लड़के बच्चे इस बड़ी भी मुग की जिम्बगी ध्यतीत कर रहे हैं।

अब बेनी एज में मास्टर है—बच्चों को पढ़ाता है। बिमला भी वही मास्टरनी हो गई है।

बेनी की गाड़ी अब एब तेजी से चल पड़ी है। उनके (अब हम उन्हें 'उन' ही कहेंगे क्योंकि बेनी अब बड़ा ही गया है। बाल बन्धिएर और घट बहूषी बासा) एक लड़का है—रमेय जो अब बी० ए० में पढ़ता है।

बड़की भी है कमला जिसे उन्होंने घायले ब्याही है ।

छोटा सड़का सुरेश है जा दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है और जो उनके बराबर ही सम्भा रिलेन सया है ।

बेनी बाबू छोटे ही कब न घायमी हैं । जीवन के पिछले दिनों में अपनी गाड़ी को प्रतिघम कठिनाई से खींचते खींचते उनके दोनों गासों पर बड़े पड़ गये हैं घासों बंस मई हैं और बेहरा काखे से अधिक स्याह हो गया है । बालों का स्थापन इतना है कि वे मूरे होकर सड़ ही रहते हैं—कभी बैठते नहीं ।

बेनीबाबू पिछले पांच बरों में अत्यन्त बड़ गये हैं ।

उन्होंने जो कुछ जोड़ा था वह समाप्त हो गया है क्योंकि उन्होंने घादी की अपने परिवार के रहने के लिये एक मकान भी बना लिया था जिसमें उनका परिवार सुख से रहता है ।

बेनीबाबू को घर की बीमारों बिसाई दे रही हैं—सम्बी-सम्बी और सफेद । घर में चुसठे ही बैठक है, फिर प्रापन एसोईबर पानी की कुम्डी और ऊपर छत पर एक कमरा । ऊपर के कमरे में रमेघ रहता है और बैठक में सुरेश ।

कमला की घादी में बेनीबाबू ने बनिये से तीन हजार रुपये उधार लिये थे । वे रुपये अब मगर के पेट के समान बड़ गये हैं । अब तक वे पांच छ हजार तक बन गये हैं !

बेनीबाबू कई माह बनिये का मूद प्रदा ही करते हैं ।

रमेघ का खत आया है—बाबूजी अपना भेजिये । बड़ी बकरत है । घर में कुछ नहीं है ।

बेनीबाबू ने रुपये भेज दिये हैं ।

इस बार भी महीने का मूद चुकाया नहीं जा सका है—रमेघ के इम्तहान की कीस भरनी थी ।

ऐसा कितनी ही बख्त हुआ है कि बीच-बीच में भारतीय सर्व के कारण बनिये को मूद का रुपया न जा सका ।

बेनीबाबू घर पर घाते हैं—दो चार दिन की घृष्टियों पर। सुरेश कप में उनके बराबर-सा ही है। उसके कपड़े और जूते उनके बराबर से ही घाते हैं। बेनीबाबू के घर में मुसते ही सुरेश ने ट्रंक को से लिया है और उसे संभाल खाना है। बेनीबाबू ने एक नई कमीज सिलवाई थी वह सुरेश ने से ली है। बाहर के कमरे में उनके नवे जूते पड़े हैं, उन्हें भी वह पहन कर बस दिया है। बेनीबाबू कुछ न बोले।

बेनीबाबू सुरेश की टूटी बप्पल पहनकर बापिस बसे हैं। रेल के डिब्बे में बैठते ही उनका दिल पिपल गया है। जीवन में अपनी के साप क्या कमी न रह सकूँगा। छुटपन में माँ बसी गई, बादी बनी गई, पिताजी के साप पटी नहीं और सब अपना परिवार बना है तो उसके साप भी कमी चार दिन भी मुक्त पूर्वक न रह सकूँगा।

वे रेल के डिब्बे से उठकर जेटफार्म को बीरते हुए बाहर ताल पर घा गए हैं। ताले बासे से कहा है—“बसो बापिस। ताँया उनके घर के घाने भाकर रुक गया है। बिमला ने उन्हें बापिस घाया हुआ रेमा है पूछा है—बापिस घा गये ? ड्यूटी पर न जायाने ?

बेनीबाबू ने कहा है—नहीं, आज नहीं। आज नहीं जाया जाता। मेरा जी नहीं करता बच्चों को छोड़न को।

बिमला गुस्ते में हो गई है—कैसा पागलों का-सा बंध है। स्टेपन जाकर कोई क्या बापिस घाता है ? महीने का पहला सप्ताह चल रहा है। तमब घा बायमी तो गुरु का कुख्या कर रहे। बच्चों के कपड़े नहीं हैं। कस वहाँ पहुँच कर अपने मेरा बोये तो सिलबा डूबी। भापका भात्र ही बापिस लीट जाना निहायत जरूरी है। बेनीबाबू दुगी ही गये हैं। सोचने लगे हैं। रमेरा जब पत्र लिखता है तो कपड़ों की यात सिलता है—उसके सेहत स्वास्थ्य की कमी नहीं पूछना बिमला को गुरु बुका देने की बिमला है। लड़के के कपड़ों की भी किन्तु जगकी नहीं। और बेबल यह है जो इन सबकी बिमला के तिये है। एक कुम्हड़ माटी मरकम घटरी उग्रवे यह चल रहा है जीवन भी देड़ी मैत्री राह पर।

बनी बापिस स्टेसन चला गया है। गाड़ी पर चढ़ कर गूम-गूम सीट धाया है।

घाज उनके खरीर में घसड़ा पीड़ा है। उनसे करबट भी बरसी नहीं जाती। एक क्षण के लिये उनके धाये की फिल्म 'फेड' हुई बूझरे ही क्षण नहीं तस्वीर सामने आने लगी।

कमला बेटी का घागरे से सत धाया है—पिताजी इनकी नीकरी घूट गई है। कोधिस में है कि सीघ्र ही कोई जुगत बैठ आय। तब तक के घर पार्क के लिये सो रुपये मेज बीजिये।

बनी बाबू ने एक मित्र से उधार लेकर सो रुपये कमला को भेज दिये हैं। बेचारी घबला सड़की किसके द्वार हाथ पसारने आयगी।

बनीबाबू को जैसे संतोष हुआ। उनके सूये घोठों पर घनबाने ही मुक्कटाहट बीड़ गई।

रमेस का फिर खत धाया है—बाबूजी बनिया रुपयों के लिये बहुत रस करता है धीर मकान नीलाम कर देने की धमकी देता है। घाप धाकर उसका इन्तजाम कर जाइये।

वे बूझरे ही दिन चमकर घर धा गये हैं बनिए के पास जाकर बातचीत की है। उसका कहना है—सूब का रुपया चढ़ गया है, पत की घबधि भी समाप्त हो गई है। नया खत करबाइये घग्यया रुपया सूब सहित चुकता कर बीजिये।

बनी बाबू के पास रुपया नहीं है इतना रुपया कभी होया नहीं। पत मजदूरन उम्होंने मूस में सूब को बीड़कर गया सत सिख दिया है। पिछमी बफा जब लिखा था तो तीन हजार का खार हुआ था धीर मज खार का छः बन धया है।

वे बापिस धा गये हैं।

उनकी तन्वियत घाजकम ठीक नहीं रहती। मुबह घाम होनों बरन इस मर्यकर पमी में उनस हाथ से खाना पकाया नहीं जाता। इसलिये घाजकम ठण्डा-भासी साकर चला लेते हैं। कमी कमी तो बी-बी दिन तक चला-बबैना पर ही पुजार लेते हैं।

बेनीबानू घर पर घाये हैं—दो चार दिन की छुट्टियों पर। सुरेश घर में उनके बराबर-सा ही है। उसके कपड़े पीर जूते उनके बराबर से ही घाते हैं। बेनीबानू के घर में बसते ही सुरेश ने ट्रंक को से लिया है और उसे संभाल जाता है। बेनीबानू ने एक नई कमीज सिलवाई थी वह सुरेश में से ली है। बाहर के कमरे में उनके नये जूते पड़े हैं, जहाँ भी वह पहन कर चल दिया है। बेनीबानू कुछ म बोले।

बेनीबानू सुरेश की टूटी जप्पस पहनकर बापिस बसे हैं। रेल क डिब्बे में बैठते ही उनका दिल पिपल गया है। जीवन में अपनी के साथ क्या कमी न रह सकूया। छुटपन में माँ बत्ती पर बासी बत्ती गई, पिताजी के साथ पटी नहीं और घर अपना परिवार बना है तो उसके साथ भी कमी चार दिन भी सुख पूर्वक न रह सकूया।

वे रेल के डिब्बे से उठकर प्लेटफार्म को चीखे हुए बाहर घाये पर घा गए हैं। तनि बाले से कहा है—“बत्तो बापिस।” तांगा उनके घर के घाये धाकर रुक गया है। विमता ने उन्हें बापिस घाया हुया देखा है पूरा है—बापिस घा गये ? ड्यूटी पर न बापोगे ?

बेनीबानू ने कहा है—नहीं घात्र नहीं। घात्र नहीं बाया जाता मेरा भी नहीं करता बच्चों को छोड़ने को।

विमता प्रस्ते में हो गई है—कैसा पापसों का-ता हंप है। स्टेजल जाकर कोई क्या बापिस घाता है ? महीने का पहला सप्ताह बन रहा है। तनब घा जायसी तो सुद क्य चुकता कर देवे। बच्चों के कपड़े नहीं हैं। कत बहो पहुँच कर बपये मेर बोये तो सिलवा हु सी। घापका घात्र ही बापिस लीट जाना निहायत जरूरी है। बेनीबानू बुझी हो गये हैं। सोचने लगे हैं। रमेघ जब पच लिघजा है तो रुपयों की बाव लिखता है—उतके सेहत स्वास्थ्य की कमी नहीं पूरणा विमता को सुद चुका देने की चिन्ता है नकूके के कपड़ों की भी चिन्ता उसकी नहीं। और केबल यह है जो इन सबकी चिन्ता के लिये है। एक हुन्सह भारी जरकन गठरी उठाये यह बस रहा है जीवन की टेढ़ी-मेढ़ी राह पर।

बनी बापिस स्टेशन चला गया है। गाड़ी पर चढ़ कर चुम-चुम लौट आया है।

आज उनके शरीर में घसझ पीड़ा है। उनसे करबट भी बचती नहीं जाती। एक क्षण के लिये उनके प्राणों की फिस्म फेड़ हुई दूसरे ही क्षण नई तस्वीर सामने आने लगी।

कमला बेटी का आकरे से खत आया है—पिताजी इनकी नीकरी छूट गई है। कोशिश में है कि बीम ही कोई कुपट बँठ आये। तब तक के घर खर्च के लिये सो रुपये भेज दीजिये।

बनी बाबू ने एक मित्र से उधार लेकर लौ रुपये कमला को भेज दिये हैं। बेचारी अबला सड़की किचके द्वार हाथ पसारने आयी।

बनीबाबू को जैसे संतोष हुआ। उनके सूखे घोंठों पर धनवाने ही मुक्तराहुट ढीढ़ गई।

रमेश का फिर खत आया है—बाबूजी बनिया रुपयों के लिये बहुत लय करता है और मकान मीसाम कर देने की बमकी देता है। आप आकर उसका इन्तजाम कर आइये।

वे दूसरे ही दिन आकर घर आ गये हैं बनिए के पास आकर बातचीत की है। उसका कहना है—सूद का रुपया चढ़ गया है खत की पबलि भी समाप्त हो गई है। नया खत करवाइये धम्यया रुपया सूद सहित चुकता कर दीजिये।

बेनी बाबू के पास रुपया नहीं है इतना रुपया कभी होगा नहीं। घत मजबूरन उन्होंने मूल में सूद को ओड़कर नया खत लिख दिया है। पिछली वर्ष जब सिपा या तो तीन हजार का श्वार हुआ था और अब चार का छः बन गया है।

वे बापिस आ गये हैं।

उनकी तबियत आजकल ठीक नहीं रहती। मुबहू घाम दोनों बदन इस जर्जर बर्मी में उनके हाथ से पाना पकामा नहीं जाता। इत्यलिये आजकल ठण्डा-भाठी धारुन चला लेते हैं। कमी कमी तो दो-दो दिन तक चना-बदना पर ही पुजार लेते हैं।



महीने की पहली तारीख को अपने लिये विस्तृत धूप-सा बना कर दोप सब तमब्राह्म भर भेज देते हैं।

बेनीबाबू का स्वयं का बनाया हुआ एक पीसा है जिसे वे खून से सींच रहे हैं।

बेनीबाबू के पिता बूढ़े हैं। उनकी नई बीबी के तीन सड़के घोर को लड़कियाँ हैं। इस बार पिताजी ने बेनी बाबू को बुलाया है। बेनी-बाबू चले गये हैं। पिताजी ने कहा है—पुरानी बार्से मूस जाओ बेटा ! ये देखो तुम्हारे छोटे भाई बहन हैं उन्हें अपने भाई-बहन समझो।

बेनीबाबू की धाँसों से धाँसू लसक धाये हैं। उन्होंने अपने भाई बहनों को देखा है। एक स्नेह का सागर जैसे उनके दिल में उमड़ पड़ा है।

भाई-बहनों को कुछ दे बिचा कर बेनी बाबू फिर अपनी जगह पर आ गये हैं।

कुछ समय मुबरा है। बेनीबाबू को पिताजी का खत फिर मिला है। उन्हें फिर बुलाया है लिखा है—इस बार घर में खरब मान पड़ा है। तुम्हें मबर करनी होगी।

बेनीबाबू की बिमाठा की सबसे बड़ी सड़की की धारी थी।

पिताजी के खत पर उन्होंने कुछ रुपये जुटाकर भेज दिये हैं। स्वयं भी समय पर पहुँचू या ऐसा भी सूचित किया है।

बेनीबाबू चक गये हैं। घर पर लिमा हुआ कर्जा बढ़ता जा रहा है। एक तरफ से उसे चुकता कर देने की कोसिष्ठ करते हैं दूसरी तरफ दूसरे खरब धाकर उन्हें घेर रहे हैं। उनके जीवन की पाड़ी डाँडाडाल हो रही है।

वे अपनी बहन की धारी में गये हैं। बाजार से बहुत-सा कपड़ा उधार उठा लिया है—भाइयों के लिये बिमाठा के लिए और छोटी बहन के लिए। रुपया भी कुछ साथ में लिया है।

दूटा हुआ बदन है उनका। बहुत पकावट के कारण उनके पैर

सब सीधे नहीं पड़ते हैं। एक सजाठ प्रेरणा भाव उन्हें अपने परिवर्जनों के बीच सजा रही है। सब सायब बेनीबाबू उनके पास फिर कमी न आ सकेंगे यह सायब उनका अन्तिम मिशन होगा। जो कुछ वे साब अपने परिवार वालों के सिधे सजा रहे हैं, सब भी उनकी अन्तिम ही मेंट होगी। बेनीबाबू अपने अन्तर में एक महान् एण्टि महसूस कर रहे हैं।

पिता के घर पहुंच कर बेनीबाबू परिवार के सब लोगों से मिले हैं। उनके अकेरे भाई हैं भाभिया हैं छोटे भाई बहनें और बिरादरी के और दूसरे लोग। उन सब से मिसकर बेनीबाबू बहुत प्रमत्त हुए हैं।

वे परिवार की इस गृहस्था से छुटकर सब अपने निज के परिवार में आ गये हैं जहाँ उनके अपने अरुण्ये हैं। बिमला लड़कियों के केम्प में गई हुई है। बेनीबाबू ने सम्येध भिजवाया है—मैं आया हूँ तुमसे मिसकर असा आना चाहता हूँ। एक दिन की छुट्टी लेकर असी आओ।

केम्प से उत्तर प्राप्त हुआ है—छुट्टी नहीं मिल रही। आप बापिस असे आइये। इस बार दुबारा आयेगे तो मिल लूँगी। बेनीबाबू निरास हो गये हैं। वे बिमला से मिस कर ही आना चाहते थे। किन्तु बिमला न आई।

रमेश ने कहा—बाबूजी, जाते ही अपना मेज बीजियेगा। उसके बिना घर का काम एक दिन भी आये न असेगा।

सुरेश ने उनके गये कपड़े फिर ल सिये और कमला के लिए उन्होंने पेंसिल स्पये का मनिफार्डर कर दिया। बेनीबाबू धायन में सड़े अपनी सूनी आंखों से घर को देख रहे हैं। बिमला लड़कियों के केम्प में गई हुई है। सड़े धानसी हो रहे हैं। घर में डेर सारे कपड़े मैसे पड़े हैं।

बेनीबाबू क बदन में ताकत नहीं है तो भी वे कपड़े लेकर गल के सीधे उन्हें सीधे बीठ गये हैं और बी-बाकर एत पर मुसा आये हैं।

रमेश मुसी कमीअ पहल कर असा गया है।

मुरेख ने भी अपने कमरू संभाल लिए हैं। पर बेनीबानू का तो स्वयं का केबल एक ही कमीज है जिसे वे अपने डबल पर डाले हुए हैं।

उन्हें आज शाम की ही यात्री से वापिस चले जाना है। क्या ही पण्डा होता विमला उसके मित्रकर चली जाती। फिर वे घर की सूनी दीवारों को देखने लगे हैं सोचने लगे हैं—घर को बचा लेने की बीड़ में वे बक रहे हैं धीर नष्ट हो रहे हैं। पर यह घर है जो रहेगा भी या नहीं।

बेनीबानू ने करबट बदली है।

घसड़ा पीड़ा के मारे उनके मुह से कपड़ निकल गई।

सोहन डाक्टर को लेकर आ गया है। डाक्टर ने नम्र देखा है। केस सीरियस है। बचने की आशा बहुत कम है।

बेनीबानू ने पाँचों खोस ली हैं। कुसते हुए दीपक की सी की तरह उनमें श्वेतता जैसे आन लगी है।

डाक्टर ने उनकी धीर मुस्कय कर पूछा—इन्हें कुछ कहना चाहते हैं? बेनीबानू ने स्मर हो कर डाक्टर की धीर देखा फिर स्फुट धम्पों में कहा—धीर तो कोई बात नहीं डाक्टर साहब किन्तु इस अन्तिम बेसा में आज भरे परिजन यहाँ होते तो।

सोहन की पाँचों में घासू छतक घाये। उसने बेनीबानू के पास आकर कहा—मैं जो हूँ आपके पास घूक ली।

बेनीबानू ने सोहन की धीर देखा धीर फिर अपने मूँद ली।



● मुमर सिंह दईया

## भूखी हायन

मारे गांव में बर्षा का बेबस एक ही मुख्य विषय है। जहां कहीं भी दो बार व्यक्ति इकट्ठे हो जाते हैं—बस उसी पर धुम फिर कर बातचीत प्रारम्भ हो जाती है। पनचट पाट बैठ खमियान घादि कोई भी सार्वजनिक स्थान ऐसा नहीं है जहां बड़ी संजीवनी के साथ बाठासाप नहीं हो रहा हो। सब चिंतित है। दुर्भाग्य से बड़ा भयंकर संकट घा पड़ा है।

जम्भू जीपरी की जीपाम में पाब के प्रमुख व्यक्ति चिन्तागुर घब-रघा में बैठे परस्पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। ठाजा मण हुपा हुबका घा मया। सबसे पहले गांव के सभ्रांत ठाकुर जोरावर सिंह ने उस सम्भाषण। इसके बाद नेमू काका ने पसकी में पकड़ी। एक घोर मुंह सटकाये रामेश्वर पहलवान बैठे हैं। बदन पर रामनामी बाबर छोटे पंडित रामभद्र भी पातधी मारकर बैठे हैं। हाथ में गोमुखी है घीर माता का जाप चल रहा है।

ठाकुर साहब ने इस सम्मीर बाठावरण के बाधित धीन को भंग करते हुए कहा— 'मई जम्भू! हमें तो इस पहलवान पर खेद है। हमें क्या पता था कि यह इतना डरपोक निकलेगा।

सबसे नजरे उठकर पहलवान पर जय मई। यह लजाकर समुधा मया। प्रारम-भसानि की मतिन छाया से जमना बहुरा डक-मा मया।

पहलवानी के हाँक-नेच केवल घादियों के साथ किये जात हैं म कि किनी त्रिद भून या हायन के संम। घंबेरी रात में डोमती छाया

को देख पहचानान का डरना सामाजिक है। पहचानान की दमनीय स्थिति देख जम्मू ने सकल स्वर में कहा।

सब के होठों पर हल्की-सी बिड़ुप भरी हंसी फैल गई।

धब के मुख्य विषय पर धा बये।

रामदान बाट पर नहीं डामन का होना गांव के लिए बहुत बड़ा अपसकुन है पता नहीं कब मुनीबत धा पड़े।

परसों रात जमना की माँ घोर मगलू की भाभी जयल को बह थी। उन्होंने वहाँ भी एक कासी छाया-सी देखी। वे डर कर बेहोश हो गईं।

और ये सब तो हम सुन चुके हैं। रोड कोई न कोई दुर्घटना होती रहती है। धब क्या उपाय किया जाए—इसी पर विचार करना है। ठाकुर साहब मंत्रीदमी से बोले।

किसी समाने-धोसे को बुलाकर मंत्रों से गांव को बचवा लेना चाहिए ताकि डामन गांव में न धा सके। जम्मू ने यह सामाजिक मुझाब रखकर समझन दृष्टि से खेप व्यक्तियों की घोर निहारा।

‘जम्मू ! धावकल ऐसे समाने-धोसे मिलने कठिन हैं। पहले वाला समय थोड़े ही है जो एक डू डो तो हजार मिल जाएं। बड़े पैम धरम के बाब ऐसी सिद्धि प्राप्त होती है। —बैसू काका ने सोचकर उदास कण्ठ से कहा।

बहु सब तो ठीक है फिर भी हमें काबिध ती करनी चाहिए। जम्मू ने प्रतिबाब किया।

‘हां। हमें खोज करनी चाहिए।’ वंशित रामभज ने समर्पन में सिर हिसा दिया।

धब सबने एक स्वर से इस मुझाब का अनुमोदन कर दिया। रह मये केवल केसू काका जिन्होंने धब धापति करना उचित नहीं समझा। उनका मौन सहमति का सूचक था।

निर्णय लेने के बाव यह छोटी-सी समा बिचरित हो गई। उनका बिलत घब हल्का घीर प्रसन्न है—जैसे एक भारी बोस उनकी छाती पर से उतर गया है।

×

×

×

बन्धु ने बिलत भारी घीर इतमीमान से पीने लगा।

इनमें में दूर से साठी टेकती हुई बाली टोकरी भिये बाही मां भाती बिधी। साठ बरस की बुढ़ा। झुरियों से भरा बेहरा जिसकी प्रत्येक रेखा में बकान व बलाति की भासिकठा भारी पड़ी है। हृदय द्वाबक कातरता से घबिभूत उसकी बे बुड़ी धाँसे जो बकसी के मज्जर के समान निस्तेज है। उसकी क्साकाया से स्पष्ट सात हो रहा है कि इमने जीवन में बहुत उठार-बढ़ाव देखे हैं। घनेक कष्टों क भासंयमित श्मेस का इसे सामना करना पड़ा है। वह बेगबती सहर्षों के सहस्य उमड़-उमड़ कर घाता रहा और तट से टकरा-टकरा कर उठे तीड़ठा रहा—तीड़ठा रहा। इन संघर्षों के संवर में पसा है उसका यह जीवन जिसकी प्रत्यक्ष छाप उसके संघ-अंघ पर मौजूद है। भाग्य के भुसकर कभी उस पर बया तक नहीं की।

बाही मां।

हां बेटा।'

'रूपसे बेचने क्या कच्चे में गई थी ?

'हां।

किर घाकर दूब ले जानत। समसी।

घबछा।'

बुढ़िया का स्वर घबानक घाई हो गया।

अम्बू। तू मेरे बभिये के मरने के बाब से कितना क्यास रलता है। मजबान तेरा मसा सा ता'।

परम्बु उसका यह घापीबाद पूरा नहीं हुआ घीर बीच में लानी घाकर बापक बन गई।

साँधी !

प्रास्ताविक साँधी ।

जम्बू का हृदय इस असह्यम धीर निर्बल बुद्धिया के प्रति सवेपना से भीम बना । बेचारी का अपना कहने लायक इस संसार में दूसरा कोई नहीं है । अपनी बेचकर अपनी पीडिका बलाती है । यद्यपि सर्वत्र का रोसी धरीर कभी-कभी बाबा उत्पन्न कर देता है परन्तु उसकी धारम-व्यक्ति इतनी बलवान है कि उसे धारचर्म-जनक पति से काम में सगाए रखती है । किसी ने जानी कहे तो उसे देखा तक नहीं—कुछ न कुछ करती ही रहती है—कुपचाप धीर मनोयोग पूर्वक ।

×

×

×

जम्बू ने आसमान की धीर देखा । सम्भवत आधी रात भीत चुकी है । हृष्य-पक्ष का पतला-दुबला बाब अपनी चुबली धीर मसिन साँधी में लिपटा ऊपर धर में टंका है । आकाश-गंगा का बुधिया रंग बूझ गहरा हो गया है ।

आज जम्बू को कस्बे की मंडी से लौटने में देरी हो गई । वह हान में जाठी सम्भाषि आने बड़ रहा है लेकिन हो राहें पर धाकर वह अचानक रुक गया । एक समस्तन सामने था बई । उनमें से एक रास्ता बड़ के बल के पास से सीना जाता है और दूसरा बीहड़ बन में से गुजरता है । यद्यपि पहले बाबा रास्ता भी कम खतरनाक नहीं है । वह समस्तन बाट के समीप है जहाँ अस्मानाधी ज्ञान का प्रसक्त छाया हुआ है । जम्बू थोड़ी बेर के लिए चिंतातुर हो उठ्य मगर उसने धीर ही निर्लुप्त कर लिया । बजरंगबली का नाम लेकर वह सीधे रास्ते पर चल पड़ा ।

छोटी तलैया के पास ही समस्तन है । इसका जानी केवल पान-बटों के पीने के काम आता है । वह चारों धोर से सड़बेरी बधूम धीर भीम के पैरों से चिरी है । रात में जम्बू मनहूस आत्मान में भीखा करते हैं । दिन भर पीहड़ धीर मसानिर्बे कुत्ते निहंम्र भूमते रहते

हैं। यकसर वे जमीन कादकर पड़े हुए बच्चों की साथ बाहर निकाल साते हैं।

गीबड़ की भयपूर्व शीघ्र सुनकर जम्बू जहाँ का उहाँ रुक गया। उसने समझा घाट की ओर देखा लेकिन कुछ भी नजर नहीं आया। घाँसों के घाने प्रबेरे की प्रमेठ बीबार-सी लड़ी है। सभी प्रस निस्तब्ध बातावरण में जम्बू की शीघ्र भी समझना उठी। जम्बू के हृदय की पड़कन जैसे एक बम बन्द ही होने लगी। अपनी कंधकंपाती घाँसों से उसने पुन देखा। इस बार घाट पर एक काली छाया-सी डोलती नजर आई। घाब सुबह ही एक मुर्दा बलाने के लिए लाया गया है अतः ज्ञान का पड़ा होना प्रायः निश्चित है।

अब वह काली छाया प्रचानक जूमी और भीरे-भीरे जम्बू की ओर आने लगी— अब ? जम्बू काप उठा। हाव से लाठी छू गई। पसीमे की बारामें सारे बदन में फैल गई और

मील ।

साक्षात् मील ।

अब की भवानक प्राकृति जगू की घाँसों में झूम गई। अब पसलें बंद। एत की गति निस्पर्ध, जैसे वह बम गया है। उस के पीर बढ़ गये। वह लड़ा रहा निस्तुल निरनेष्ट और अड़ होकर

×

×

×

प्रचानक हल्की-सी लारी कच्छ की ककरण शीघ्र सुनकर जगू शीघ्र पड़ा। मानव-मन में प्रतिक्रिया स्वामात्रिक है। उसने घाँस छोड़ी; मगर सहसा कुछ भी नहीं बिछाई पड़ा। उसने पुन प्रयास किया। अब धुंधली-सी प्राकृति नजर आई। सम्भवतः वह माप में बढ़े किन्ती तत्पर से टोकर धाकर गिर पड़ी है। उसके घाँस-स्वर में पता नहीं कैसे मामिबता है कि जगू उसके पास विचकर बला गया। अब वे घाँसक की वह प्रसुम छाया न मासुम जैसे उसके घाँसों में से तिरोहित हो गई ?



बुटनों के बल बैठकर उसने धीरे-धीरे के छिर को उठया। हाथ में पकड़ी हुई पोटली को उसने दूर करना चाहा लेकिन उसे मजबूती से पकड़ लिया।

“भाह ! — इस हृदय-विदारक कराह के साथ उस धीरे-धीरे ने अपना मुंह मोड़ा तो जगू पहचान कर रूब रह गया।

‘अरे, शारी माँ !’

कौन ? — बुढ़ा पबरा सी गई।

यह तो मैं हूँ जगू !

‘मोह’ !’

बुढ़ा का स्वर एक-दम रूब सा गया।

‘तुम बहाँ क्यों आई हो शारी माँ ? — जगू ने हृदय की बे पृष्ठा। साथ ही उसकी माँ की पुतलियाँ तीव्र जिज्ञासा लिए स्थिर हो गईं।

अब शारी माँ सहसा कांप उठी। उड़न-वस्तु माँ की घाँस पर प्राये धीरे-धीरे वह सिसकने लगी। उसने कुञ्चित स्वर में कहना प्रारम्भ किया— बेटा ! अब तुम से क्या सिपाई ? यह सुना पेट क्या नहीं कपटा ? ऊपले क्या ही पाव पाठी हूँ—बुझाव नहीं बसता— इसलिये मैं हमेशा नाट से बुझे हुए कोबले में बाकर करके मैं बेचती हूँ ।

धीरे बुढ़ा विचार पूर्ण कष्ट से रोदन करने लगी।

जगू तो मुनकर स्थिर रह गया। क्या यही उस शरीर का अहस्य है ?



● भोमानन्द रू० सारस्वत

## आत्महत्या मे पहले लिखे

आत्महत्या से पहले लिखे इस पत्र को पढ़ कर कांप-सा गया हूँ । पुसिस अफसर हूँ लेकिन पत्र की सच्चाई को महसूस कर रहा हूँ । स्वायत्त के एम० ब्याल' की भाँति अपने पत्र मे स्वायत्त देने में ही मुझे संतोष नहीं होगा सोचता हूँ मेँ तो मामबता से ही स्वायत्त के हूँ किन्तु पता नहीं कीन सी शक्ति है जो मुझे ये सब करने से रोक रही है धीरे इस पत्र को बार बार मेरी स्मृति में लाकर मुझे 'घर' को संसार से अस्तित्व करने के लिये उत्तेजित कर रही है । एक महान् उत्तरदायित्व मेरे कंधों पर कोई रख रहा है । मैं इस जिम्मेदारी से मायना नहीं चाहता हूँ न माय ही रहा हूँ घाय भी कुछ सहारा देकर मेरे निर्बल कंधों में ताजत आने का हीसला बने, केवल इसीलिये यह बात घाय के सामने रख रहा हूँ ।

जब यह पत्र पोस्ट द्वारा मेरे ऑफिस में पहुँचा तो घाम क तीन बज चुके थे धीरे मेरे हाथों में पहुँचते-पहुँचते मन्ना तीन हो गये होंगे । मैंने एक्सप्रेस डिलिवरी के सन्ने को देखते ही लिफ्टफा फाड़ कर पत्र खोला पढ़ा काँपा, धीरे अपने अस्वस्थ के बचत की एक प्रयोगवादी पत्रिका में खरी ये कविता साधार हो गई—

बारे बिस्व की बात एक ही तो मर्ज है— संका ?

रि करो मोहव्यस किरी से

मूटी है तो संका मूठ की

गन्धी है तो सत्य में एक पाषोमे ।

रि यह उड़ा इन्जिन आवास की धीरे छाठी का

मिशारे का बहम बहना

अज्ञान बामुयाल का है  
 सफलता विज्ञान की संकित यहाँ  
 किसी को प्रसय की  
 सफलता विज्ञान की संकित यहाँ  
 किसी को प्रसय की अंका तो संविह् शांति का ।

ये दो उदाहरण तो बस उदाहरण को दिये हैं केवल  
 बुनिया के जरे जरे में तुम डूबो  
 हर जगह हर तिम पर बिछाई देना  
 सारे विश्व का बस एक ही मर्म है—संक्र।

मुझे स्पष्ट याद है कि पत्रिका का नाम 'ईटबुना' वा 'मैलक' का  
 नाम भुला जा रहा है, किन्तु कविता की बोर्डर पर जो चित्र छपा  
 था वह नहीं भूल पा रहा है—घोह भयानक चित्र ? एक भीमरस  
 विभिन्न आकृति का राक्षस एक इंसान के मांसुम से जिस को अपनी  
 कठोर दाढ़ों में बसा रहा था—धीर नहीं कहा जाता बड़ा  
 जबरैस्त बिल को कंपा देने वाला चित्र था ।

धीर उसी चित्र को धीर अधिक रंगीन बना देने वाला यह पत्र ।  
 कुछ स्थितियाँ ही ऐसी बन गईं मनती हैं कि लोगों में बड़ी समानता  
 मुझे बिखलाई पड़ रही है । मैं इसी कारण आपके सामने यह पत्र ऐसा  
 का ऐसा रख रहा हूँ चायब आपके बिल पर भी प्रभाव पड़े धीर आप  
 भी उसी लाइन पर सोचने लगे जिन पर मेरा विमाम सोच रहा है ।  
 पत्र के है —

एस्तमस्त

कमल नम्बर—२१

बसानवाड़ी, कुप्सपुरी

पुर ।

१२१२६

सेवा में  
पुलिस अधिकारी,  
पाना  
पूर।

प्रिय महोदय

यह पत्र जब तक घापटे हाथों में पहुँचेगा, तब तक मैं इस दुनियाँ से उठ चुका हूँगा इसलिये सब से पहले अपना परिचय दे देना चाहता हूँ। कर्मकर्म हूँ प्रेम्पुएट हूँ और अपने किये हुए, बनाये हुए कुछ सिद्धान्तों पर कुछ हड़ रहा हूँ आज तक। विशेष रूप से नैतिकशुद्धि की पवित्रता का हामी रहा हूँ और कोसिच भी की है कि बचन तक ही सीमित रक्तु प्रेम की बातों को कर्म या क्रियाशीलरूप से हजारों कौस दूर रहूँ। लेकिन यह पता हूँ इस पकाशील दुनियाँ से ब्रह्मने की ताकत नहीं रही—मठ बसि हो रहा हूँ एक मकमद के सिमे। यह जानते हुए भी कि मेरे बसिदान होने से मैं दुनियाँ में से 'सक' को मिटा नहीं सकूँगा फिर भी संभवतः कुछ छोटे विमार्शों को विस्तार पाने का पटना हूँकि पर सोचने को मजबूर होगा वने—हंसो से आत्मबसिदान दे रहा हूँ। यह दीप किमी पर नहीं माना जाये लुबकयो का अपराध मेरे पर ही है।

कर्मकर्म बने के पहले मैं कासेज का एक रंभीन छात्र था। हंसमुख स्वभाव गुरु से ही है और हंसो करने में मैं कभी चूकता नहीं था। क्या भारतीय संस्कृति का मूल आगम्य नहीं है? पहोरों ने भी तो बात जाते पही संदेय दिया है सुख रहो पहले बतन हम तो सफर करते हैं। मेरा भी जहेस्य सुल रहा और लुख रकबो' ही रहा है। लेकिन ये हंसोगुपी मुझे बहुत मंहयो पड़ी। कासेज के आहाते में एक दिन पकोम क रिस्ते की एक भाभी ने मुझे मेरी सहपाठिनी क साथ हंग हंग कर बातें करते देय लिया। जाबी में एक कंभे के सहारे लड़े पड़े हम दोनों निर्भस मजाक कर रहे थे मगर भाभी को क्या? जवने पकगनी का सहाय लिया और मारे पांथ में एक सत्ताह के

भीतर तो मेरी धार धारें उठने लगीं, महीना भर नहीं बीता कि लुसपुट बाँटें कानों में घाने सहीं समय बीतते बीतते अनेक बदनाम क्रिश्चियनों से मेरा व्यवहार संबंध जोड़ने लगे ।

माँ बाप का इकलौता बेटा था साहस्यार में पला था, अनेक उम्मीदों को बाँध कर माँ बाप ने बुढ़ापे का सहारा मान कर मुझे कलियुग में भेजा था । वे मुझे धार्मिक ए० एच० बेलना चाहते थे । जब सुना उन्होंने तो मीना बस बठा । मेरे ऊपर उपदेशों के पठारों का बोझ लदने लगा और फल फल यह हुआ कि उस बहिन को कलियुग धर्मिणियों ने चरित्र का बदनाम सर्पिण्डिकेट डेकर निकाम दिया जिससे वह जो करे जो बारी के करने योग्य नहीं है और मुझे स्थान परिवर्तन करके पिताजी ने दूसरे कालेज में पढ़ने भेज दिया ।

यह बामन का हाग सूठा था किन्तु कौन समझेगा ? मैंने कभी किसी को समझाने का प्रयत्न भी नहीं किया तोय चौर की दाढ़ी में तिनका समझ कर मुझे ही बेबकूत बनाते ।

घरईधर में छाटी हुई मेरी धीर बी ए० में प्रवेश लेते ही पिताजी का धामय टूट गया । निजवा माँ को लेकर पत्नीसहित मैं उठी सहर में रहकर पढ़ता रहा सोचा था बी० ए० करके कहीं कम्पोजिटिंग में बँटूँगा । पर भी बड़ा मध्यम भी कमानेवाला था नहीं टयुशन करके कुछ धामबानी की सोची । एक बतिक की लड़की को पढ़ाने सवा । रोज पढ़ाता था । एक दिन वह लड़की बर या गई । 'कुछ किस्मत हमारी ही ऐसी थी कुछ उछको भी भागा था । पत्नी को एक हुआ पर मैं उम्ह हुआ माँ का भी बला और मैं अपनी रातों की नींद हाराम कर बैठ । टयुशन छोड़ दिया क्योंकि परीक्षा पास था गई थी क्योंकि मेरे ही बर में मुझे समझने की कमी किसी ने सही कोषिण नहीं की । परीक्षा का नतीजा अच्छा नहीं आया उदा प्रथम धामेवाला इन सात बरें स्नात में पास हुआ मातृसिक छाँति कहीं थी ?

स्वयं को नरक में बदलना हो तो स्वयं के पीनेवासे पानी में शर्करा कीड़े डाल दो । मरु बर नरक बन गया । पत्नी को समझाया

सहजाया धमकाया, लेकिन नहीं बिस्वासों के पाखवाओं में शको की सधि बहती है जिसका हलाक इस बिज्ञानयुग में कही नहीं गिना ।

हार कर कर्क हो गया । मां दो बर्ष हुए सड़के को डिप्टीकमन्टर देखने के स्वप्नित स्वप्न देखते देखते बसी गई । पत्नी है राक भी है पता नहीं फिर भी कैसे मैं एक सड़के का बाप बन गया हूँ । घर की पाकी मकदमी बाबू के चर्मों में चर चरमर चू करती बस रही है ।

लेकिन परसों एक तुलान घोर घाया जिसने किस्ती हिंसा बी, पठवार डूबा बिये, किनारा धनवान बना दिया ।

मोटिस में जहाँ मैं एक मामूली कर्क हूँ एक सेडी टाईपिस्ट भी है । नेंडूबा रंग मध्यम कद पतली । मजाक घोर हंसी घाबत मेरी बनी हुई ही है यही तो वह सून है जिसको याद करके मैं अपनी जिन्दगी को धमी तक निभाया रहा हूँ बर्ना पता नहीं समाज की घाले कब की खा गई होती । मैं टाईपिस्ट से भी बात करवा कभी कोई हंसी भी । घासिर घाम रहने वाले बोलेंगे नहीं क्या हंसेंगे नहीं क्या ? तो फिर समाज को ठोड़ दो अकेसा ब्यक्ति ही रहे ? बर्ना सहकार की बातें करते हो बर्ना समाजवाद का स्वर बिस्माते हो ?

मैं कहता हूँ बड़ बड़ कर बातें करने वालों से कभी अपनी लम्बी जिन्दगी की राह को भी मुड़ कर देखा है ! नहीं मैं सब देखता हूँ ।

घर परसों घाफिस के जनरल मैनजर का एक 'घोपनीय' पत्र मिला । लिखा था कि घाफका सेडी टाईपिस्ट से अनुचित संबंध सुनने में घाया है, क्यों नहीं घाप दोनों को नोकरी से नोटिस दे दिया जाय एक्सप्लेचन बीजिये ।

क्या एक्सप्लेचन हूँ ? जब समाज मैं राक किया तो मैंने उसे घाले दिखाकर डरा दिया जब पत्नी मैं राक किया तो धमका डरा कर दबाया लेकिन जब यातिक राक करे - तोबा ? मैंने अपनी पूर्ण निष्ठा से नोकरी की है । पुरा यवाह है पिछले बी बर्षों में कभी भी छुट्टी भी हो नाबा किया हो या बेईमानी से काम किया हो । मैं सच्चा

हैं अस्तर्भ्य में धीर चरित् में । इन्हीं दो पावारों पर तो मैं जीवन को कंचन बनाना चाहता था लेकिन प्राय मासिक ने बुझाकर अपनी असली प्रकृति से मुझे कहा— यह संभव नहीं है, सही बात है, तुम चाहो तो हम उस पादमी को भी पेट कर सकते हैं जिसने तुम्हें धीर टाइपिस्ट को एकान्त में प्रमदता करते देखा है ।'

मैं प्रभाव दिये बिना प्रफिल से बाहर भा गया । क्या एक्सप्लेनेशन दू ? यदि दिल धीर विमाय को धीर कर देल सेने वाला कोई पंग होती मेरी सच्चाई साबित हो सकती है । यही एक्सप्लेनेशन है कि दुनिया से नारी का अस्तित्व ही मिटा देना चाहिये धीर दुनिया का अस्तित्व बनाये रखने के लिये पेड़ों पर से प्रकृत बेटे छोड़ देने चाहिये । या फिर दुनियावालों से कहो कि एक कपी घनि से एक बार सामूहिक रूप से मुक्त किया जावे धीर संक को निर्मूल किया जावे ।

मेरे में हिम्मत नहीं है कि मैं इस तरह से जूझ सकू । घाये प्राने-वासी पीड़ी को मेरी यही बचीयत छोड़ जाता है कि संभवकर पांव रखो फूँक फूँक कर कब्र उठावी धीर संक करके कटने से बचा— यदि दुनिया को बचाना है तो ।

बिदा नहीं प्रकृतिया ।

मदवीय

इस्तासर\*



## मोह

डाक्टर उस बड़े मकान से बाहर निकले और अपनी नीची लैंड-मास्टर के निकट आकर खड़े हो गये। उनके सामने जो व्यक्ति थे, एक ने उनका रिंग सम्मान रखा था, दूसरा जो सफेद छाती का कुर्ता और टकने की छूती हुई चोटी पहने हुए था डाक्टर से बात कर रहा था। डाक्टर ने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला, उसमें से एक सिगरेट खींची और उस जसाकर अपने जबाब को शुरू किया।

—देखो ! मैंने देख तो लिया है लेकिन एक्सरे होना जरूरी है। पेट का यह बड़ा लठ्ठलाक है किसी बचत भी पैकेट की जान से गलत है।

यह तो आप जानें डाक्टर साहब मैंने तो अपने पिता को घायल हाथों सौंप दिया है। समय की चिन्ता नहीं है जान बच जाये बस। सफेद कुर्ते वाले व्यक्ति ने निवेदन के स्वर में कहा, उसके बहरे पर जदानी की स्याही थी उसको धोकर सब झाड़ो ही हो रही थी।

डाक्टर ने सिगरेट का धमा मीचा, कुटकी से राख झाड़ी और उन व्यक्ति की धोतों में उमरे हुए कुल को देखकर दिलासा देते हुए बोले 'आपको हिम्मत रखनी चाहिए। हर डाक्टर अपने रोगी को बचाने के लिए अपनी सारी ताकत लगा देता है मैं भी यही करूँगा। लेकिन सबसे बड़ा बह रिकार है, जिस पर विश्वास रखना चाहिए।

डाक्टर ने दूसरे व्यक्ति से बैच से लिया और उसे पिछली सीट पर रख लिया। फिर वह बोले बस घाट बजे मुबह हॉस्पिटल स घाटनेगा, मैं बिट लिल रूपा एक्सरे हो जाएगा। उन्होंने हेल्थिस को दबाकर दरवाजा खोला और स्टिपरिय के सामने बैठ गये।



दुर्लभात्त व्यक्ति ने दुर्लभ की शैव में से दस दस के तीन मोट निकाले और डाक्टर साहब की फीस उन्हें पकड़ा ही। डाक्टर ने मोटों को अपने पर्स में रखा एक बार फिर माह बिताया— 'कल सुबह से घाना। और कार 'स्टार्ट' कर ही।

बढ़ हुए दोनों व्यक्तियों ने अनुपहीत हो नमस्ते के लिए हाथ जोड़ दिये। डाक्टर ने छिर हिलाकर बजाव दिया और कार एक बार हॉर्न बजाकर चल ही। दोनों व्यक्ति मकान में घा घरे।

दुर्लभात्त व्यक्ति बैठक से निकलकर सबसे बड़े हुए दूसरे कमरे में गया, जहाँ उसके रोगी पिता परमन पर सेटे हुए बर्ष से कराह रहे थे। वह बेचैनी के कारण बार-बार करबट बजल रहे थे छिर भी रैन नहीं पड़ रहा था। अपने सीबे हाप से उन्होंने अपने पेट को दबा रखा था।

उसने परमन के निकट पहुँचकर कहा 'पेट बजाओ मत मीम्मा जी डाक्टर साहब मना कर घरे हैं।' वह पिता को मीम्मा जी कहता था।

पिता ने हाथ हटा लिया। अपने बेठे की याचना भरी हृष्टि से देखते हुए बोले— 'इस बर्ष से छटकारा दिलवादे कीघल मा फिर ऐसी दबा दिसवादे को घाघानी से मर जाऊँ। पेट में मरोड़-नी जठी, उन्होंने निचले होठ को दांतों से कस कर दबा लिया जैसे बर्ष की असह्यता पर काबू पाने का प्रयत्न कर रहे हों।

'ऐसा मत कहो मीम्मा जी।' बेटे कीघल ने बने हुए स्वर में कहा। वह निकट की कुर्सी पर बैठ गया। हुल्ले-हुल्ले पिता का पेट सहनाय हुआ बोला—'किन्ता की बात नहीं है मीम्मा जी' डाक्टर साहब कह रहे थे घापरेशन होया उठके बार बीनारी बढ़ से मिट जायेगी।

'दुर्लभ बन जायगी कीघल। मरु मा तो बँसे-भी छिर नरों पेट की बीरा-झड़ी करवाते हो।'

दुध का दिलास लेकर कमरे में लम्बी घा गई थी—समीस-बीस की लड़की। रंग बेहूषा देखने में सुन्दर पर बेहूष दुःख से मुरसाया

हुमा । उसने गिमास मेज पर रखा और पिता को देखने लगी । प्रसन्नता में डूबी हुई थी जैसे उठरा हुआ बासी फूस ।

'मम्मी, कौशल कहता है डाक्टर प्रापरेषन करगा । क्या फायदा अब काट-काँस से ? साठ साल का हो गया पके घाम को एक-न-एक दिन तो मरना है ही घाम नहीं तो फस ! पिता ने स्नेह से बेटी को देखा और देखते रहे कुछ क्षणों तक । उन्होंने देखा कि लकी हुई मम्मी की आँखों से आंसू बह पड़ ।

'अरे यह क्या ! रोती क्यों है ? पिता ने धीमे मीचकर बर्द को घन्वर-ही घन्वर घोंटते हुए कहा लेकिन मम्मी कमरे के बाहर जा चुकी थी और बाहर घाकर बीमार के सहारे अपने गिर को टेककर फफक-फफक कर रो रही थी ।

सारे घर की हवा में सदासी-सी धुंधी हुई थी जिसने हर एक सदस्य को बोल से बबा रखा था । प्रमोसक चन्द की निराशा ने सब के साहस को परास्त कर दिया था । घर की सुर्धी सम्भावित आपत्ति की भयानकता के मारीपन से कठोर हो गई थी । प्रमोसक चन्द अपनी मृत्यु के बारे में धारवस्त से और इस धारवस्तता ने हटाव के बहसे उनको सब के मोहू से और भी परिश्रिता से लीड दिया था । वह कौशल को देखते तो लकी बिबल हट्टि से । मम्मी को देखते तो उसका बीच्य उनको मुनीली कीनों-सा चुभता । वह पानी को देखते तो सोचते मेरे बाब इसका कीन होना ? माई को देखते तो बिस टूट जाता—कितना छोटे से उसे पासा था । माई होकर भी वह उनके लिए कीशल-सा बेटा था । वह सोचते ली दुनिया उनको धाम है कम वह साँठ के टूटने के साब-साप बम्ब हो जाएगी—महाँ का सेन यहीं रह जाएगा । इतना सोचने पर भी उनका अपनी से मोहू नहीं छूटता है । दुनियावी चिन्ताएँ उन्हें मकड़ी के जाले की तरह फंसाए हुए हैं—वह छटपटाते हैं पर निकल नहीं पाते ।

दूसरे दिन हॉस्पिटल में उनका एनचरे लिया गया । डाक्टर साहब ने अपनी तरह उस फोटो की जाँच की फिर दो दिन बाद की टापीन

दी बिज बिज बह उनका भाँपरेसन करने। घमोसक बन्ध को हाँस्पिटल में बाँधिस कर दिया गया।

हाँस्पिटल में घाँकर घमोसक बन्ध घोर भी बिकल हो गये। उनसे उनका घर मासानीसे नहीं छूटा। उग्होंने एक-एक करके सबको बुलाया था। नन्बी का हाथ बह अपनी माँओं पर रखकर धून रोये। जैसे ब्रमाये हूँ बह जो बो साध भी बेटी के सुहाय का सुख नहीं देख पाए। उसकी सारी जिन्दगी नायफनी में संस कर रह गई। ईस्वर कौता निर्दमी हुआ कि पति छीन लिया और छोटी सी एक बच्ची का भार जोद को दे दिया। कौन निषाएगा उनके मरने के बाद ?

नन्बी, मीने ठेरे लिए कुछ नहीं किया—“मी जिन्दा रहता तो तेरी घापी” बह इतना कह कर रो दिये थे।

नन्बी ब्रबाक रह गई थी। उसके कनैबे पर जैसे पत्थर की बोट पड़ी थी और बह झन्डर-ही-झन्डर सी उ करके रह गई थी। एका-एक उसका घन्त जलकर भभक उठा था। बह सिसक उठी थी—“भैया जी क्या कहते हो ? जैसे-ही पाठकी हूँ पाप क्यों बढ़ाते हो ? जब एक-ही नहीं रहा तो दूसरे की क्यों सोचते हो ? फिर नन्बी ने अपने को सम्भाला था और पिता को माया दी थी—विश्वास रखो भैया जी भयवान आपकी हमसे नहीं छीनेवा।

रोते-रोते भी घमोसक बन्ध के हीँठों पर व्यंग्य मरी मुस्कान— एक भाँटी-सी मुस्कान—माँ भी और बिकल गई थी, जैसे कह रही थी—“जीने की बात उससे करती हो वो अपनी भीत अपने सामने देख रहा हा।”

कोयल के सिर पर उग्होंने प्यार से हाथ फेरा था जैसे उस स्पर्श से बाँधने वाली धारिक सिहरनों को बह अपने घन्त में विस्तृत कर रहे हीँ कि मुत्यु की माकौठता को ने हुतार की उर्मगों से बर लें।

पत्नी को देखकर बह अपने सारे पठीठ को बोह्य बने थे और इन्हा हुई थी कि बिजट घापी मुत्यु की मरदन को मरोड़ हँ बह

मृत्यु उनके सामने छटपटा-छटपटा कर वम ठोड़ दे और वह अपनी पत्नी का हाथ पकड़ कर उसे दूर से बायें बहुत दूर जहाँ उनका भतीत घररता निभे हुए बसा हो जहाँ उनकी सुबाबस्था के सुखद धण ग्यों-के-र्यों ताबे संजोए रखे हों । वह पत्नी को देखते रहे व भीर संस्कारमठ मोह उमर कर पत्नी को छापी से समाने को सातवीं हो उठा था । वह बोसे थे—

राधा मैं चाहता था कि तुम पहले मर जाओ ताबि छादी क खन दिया बचन धाखीर में भी निगा मू " पर धामद पहले ही

राधा ने उनके मुँह पर हाथ रख दिया था । वह फूट पड़ी थी नहीं पीठे पी ऐसा अच्युम मठ निकालो । धैरा भगवान मेरे साथ है । वह इतना निर्बन्धी नहीं है । वह कदना सिधु है वह क्या सागर है "पहन वह मुझे ही उठायेगा जरूर मेरी सुनेगा ।

अमोलक अन्द ने धाँखें मूँद सी थीं और जब धालें खोली थीं तो राधा जा चुकी थी ।

उन्हें जब माई और कौणस सम्मान कर ताँम तक साथे वे और ताँगे पर बैठाया था तब उन्होंने माई से कहा था 'विप्यु किंसा भाग्य है कि धर्मी के बजाये जिन्दा निकल रहा हूँ पर से—सांठि से धर में मर पाता तो कितना अच्छा होता ? अब तुम पर ही मार है ।

और जब ताँगा चलने को हुमा था ताँ उनका हृदय सीट पड़ा था । उनका वह मकान उनसे पीछे छूट रहा था जिन्की एक-एक ईंट में उनकी जिन्दगी की कहानी बँधी थी—जो इस समय चुप थी मौन थी विवन्न थी, जैस वह वे दिवदा मौन और चुप ।

दो दिन में अमोलक अन्द का वम फुट-भा गया । हॉस्पिटल के पलंग पर पड़े-पड़े वह पबरा गये । उनका बेहरा और भी पीसा पड़ गया । कितनी भीत-अमृता अमह है ? कितने नजदीक हो जाते हैं जीवन और मृत्यु के दो सिरे ? उन्हीं के कमरे में वह भी हैं जो मौत को छूकर जीवन में लौट आए । एक मुत्तक बिन्दु पर पड़ाव सिद्धर जैस उनकी जिन्दगी फिर प्रोमसल पथ पर चल बी । और और उनके देखते

दिक्कठे तीस-बार का जीवनान्त भी हो गया। साँस के छुट्टे ही मिट्टी पड़ी रह गई थीर वह जो धरणी जो धरणी, जो ऊर्जा सम्पन्न शक्तिमत्ता थी जो अपने घर की बाहर की दुनियाँ को अपने से बाँधे थी उसकी वह धरणी जिम्हरी धीरे से लिखक गई सब देखते रह गये। उनकी मृत निरर्थक देह के लिए पहले तो भोग रोये और फिर ले गये। उन्होंने सोचा, 'उन्हें भी वही तरह ले जाएँगे। वह उस समय देस नहीं सकेंगे। धनुमन् भी नहीं कर सकेंगे। पर जानते हैं कि राजा भी रोएगी नन्ही भी रोएगी कौजस भी रोएगा विष्णु भी रोएगा और उनकी अन्तिम यात्रा हस्पताल से शुरू होगी मरबट तक जाकर खरम ही जाएगी—रोए रहेगी तो मृद्धी भर पाव। और कुछ इच्छियाँ।

सुबह भी बड़े धाँपरेधन होया। सारी रात अमोमक चन्द्र जागते रहे। किशोरी ही अकम-बड पावें उन तक घाटी रह्यी थीर वह किसी दुरागत यात्रा को जाने वाले किसी आप-से उन्हें पुनकारते रहे और लौटाते रहे। वह रात भर अपने मन को निरर्जङ्गम थीर प्रघात करते रहे। वह अपने की समझते रहे—'क्यों नहीं मोह के चाँस्य को निर्बाधित करता है ? रोए है क्या जिसकी भाकाँसा रोए है ? क्या नहीं है जो भोग चुका है ? क्या है जो थीर भोगेगा ?' एक सीछ-सी जिजीविषा की कंपकपाती इच्छा जो उनमें बार-बार छठती थी उसे वह बहुकामना चाहते थे, मह कहकर 'तू जा ! तू जा !

सुबह उनके सामने परिवर्तित रूप में आई। उसमें न घाघा थी न निघाघा। हास्पिटल का रौगियों वाला कमरा उनको कैठा भी नहीं लगा। कमरे में सिटे रौमी उन्हें न अपने-से सने, न बूखरों-से। जैसे वह अपरिचित थे उन सबसे थीर वहाँ के बाठाबरलु थे। घाठ बजे उन्हें नर्स द्वारा बचा भी गई। उन्होंने पी ली।

विष्णु कौशल नन्ही राजा उनसे मिलने आए थीर उन्होंने उदस्य दृष्टि से उन्हें देखा। वह उनका विष्णु या वह उनका कौशल या वह उनकी नन्ही थी वह उनकी पत्नी राजा थी लेकिन वह ऐसे

बेच रहे थे ऐसे बात कर रहे थे जैसे वह इतर हो गए हों। अपनी को देखकर उनका हृदय ठरस नहीं हुआ। उनकी घाँसों में धाँसू नहीं आए। उनका मोह बाइसों का उमड़ा नहीं। उमड़ कर बरसा नहीं। प्रमोसक चन्द जैसे प्रसप हो गये थे, प्रबक ही गये थे कट गये थे। नन्दी लड़ी रो रही थी। राधा की घाँसों उबड़बाई हुई थी। कौशल धाँसुओं को रोके हुए था। बिप्यु अपने घीरब को दूढ़ कर रहा था।

सिस्टर ने अपने स्थान से घाब्रा थी— आप सब आइये डाक्टर साहब के घाने का समय हो गया।

नन्दी की घाँसों छसछसाईं ! प्रमोसक चन्द का जड़ विमोह टूटा किर्च किर्च ही छिटर गया। उगहोने हाब जोड़ें घीर फकक कर रो पड़े !

सिस्टर नाराज होकर बिस्ताई— क्या है ? आप सोम पाते क्यों नहीं रोबी को क्यों कमजोर बनाते हैं।

सब बाहर चले आए। दूसरे रोवियों के रिश्तेदार भी बाहर आ गये।

प्रमोसक चन्द को एक डाक्टर ने इजेरसन दिया फिर उन्हें पहिले वाली मेज पर लिटा दिया गया। प्रमोसक चन्द ने घाँस बन्द करके ईश्वर का घ्यान किया—घ्यान करते रहे।

सब बाहर थे घीर चन्दर घापरेसन पियेटर में प्रमोसक चन्द को बेहोश करके उनका घापरेसन किया जा रहा था।

कौशल बेचैन था धीमे कदमों से घूम रहा था।

बिप्यु बीच पर बैठा था, उसके सिर में दर्द हो रहा था।

नन्दी की मोहों में उसकी बच्ची थी जो अपने छोटे हाथ चमा चला कर खेल रही थी। नन्दी के धाँसू टप-टप पिर रहे थे।

राधा नन्दी को चुप करा रही थी, पर उसकी घाँसों धाँसू रोक नहीं पा रही थी।

धापा घंटा।

देखते हीन-चार का बीजनाश भी हो गया। सांठ के फुटते-ही मिट्टी पड़ी रह गई और वह जो प्रकृति जो प्रकृत्य जो ऊर्जा सम्पन्न धर्मिता भी जो अपने घर की बाहर की दुनियाँ को अपने से बांधे जो उनकी वह प्रकृति जिन्दगी बीरे से लिखक गई सब देखते रह गये। उनकी मृत निरर्थक देख के लिए पहले तो सौंघ रोये घोर फिर ले गये। उन्होंने सोचा 'उम्हें भी इसी तरह ले जाएँ।' वह उस समय बेल नहीं सकते। अनुभव भी नहीं कर सकते। पर जानते हैं कि राधा भी रोएगी मन्दी भी रोएगी कौसल भी रोएगा विष्णु भी रोएगा घोर उनकी धर्मिता माया हस्तगत से शुरू होगी मरणात् तक जाकर खरम हो जाएगी—सोप रहेगी तो मुट्टी भर राधा ! और कुछ हटियाँ ।

मुझ ही बने घाँपरेघन होया। सारी राठ प्रमोक्तक बन्ध आगते रहे। किन्ती ही प्रकृत्य-बन्ध माये उन तक घाती रहीं और वह किसी दूरगल् माया को जाने वाले किसी बाप-से उम्हें पुष्कारते रहे घोर नीटाते रहे। वह राठ भर अपने मन को निरर्थकित घोर प्रघात करते रहे। वह अपने को समझते रहे—'क्यों नहीं मोह के पापक्य को निर्वासित करता है ? सेप है क्या जिसकी धाकासा सेप है ? क्या नहीं है जो मोम चुका है ? क्या है जो और मोयेका ?' एक सीख-सी जिजीविषा की कपकपाठी हस्ता जो उनमें बार-बार उठती थी उसे वह बहकाना चाहते थे यह कहकर 'तू जा ! तू जा !

मुझ उनके सामने परिवर्तित रूप में आई। उनमें न घाया भी न निराशा। हस्तितन का रोमिर्षो बासा कयरा उनको कैसा-भी नहीं लया। कमरे में लेटे रोगी उम्हें न अपने-से लये, न हसरों-से। जैसे वह प्रपरिचित थे उन सबसे और वहाँ क बाठावरण से। घाठ बने उम्हें गर्भ द्वारा बचा भी गई। उन्होंने पी ली।

विष्णु, कौसल मन्दी राधा उनसे मिलने आए और उम्होंने उद्वेग हटित से उम्हें देखा। वह उनका विष्णु या वह उनका कौसल या वह उनकी मन्दी भी वह उनकी पत्नी राधा भी लेकिन वह ऐसे

बेख रहे वे ऐसे बात कर रहे थे जैसे वह इतर हो गए हों। अपनी को देखकर उनका हृदय ठरस नहीं हुआ। उनकी छाँचों में घाम नहीं था। उनका मोह शहरों का उमड़ नहीं। उमड़ कर बरना नहीं प्रमोसक बन्द जैसे प्रलय हो गये वे प्रबक ही गये वे कष्ट गये वे। नन्दी खड़ी रो रही थी। राधा की छाँचें उबड़बाई हुई थी। कीसल घामुधों को रोके हुए था। विष्णु अपने धीरज को दुड़ कर रहा था।

सिस्टर ने अपने स्वाम से प्रार्थना की— 'घाम सब बाह्ये डाक्टर साहब के घाने का समय हो गया।

सबकी छाँचें उमड़लाईं ! प्रमोसक बन्द का जड़ विमोह टूटा किर्ब किर्ब हो छितर गया। उन्होंने हाथ जोड़े धीर फटक कर रो पड़े।

सिस्टर माराज होकर चिल्लाई— क्या है ? घाम लोप जाते क्यों नहीं रोधी को क्यों कमजोर बनाते हैं।

सब बाहर बने घाए। हमारे रोगियों के रिश्तेदार भी बाहर आ गये।

प्रमोसक बन्द को एक डाक्टर ने इन्जेक्शन दिया फिर उन्हें पहिये वाली मैज पर लिटा दिया गया। प्रमोसक बन्द ने प्राँच बन्द करके ईश्वर का ध्यान किया—ध्यान करते रहे।

सब बाहर से धीर प्रबुद्ध घामरेघन पियेटर में प्रमोसक बन्द को बेहोश करके उनका घामरेघन किया जा रहा था।

कीसल बेचन का धीमे कब्रों से घूम रहा था।

विष्णु बेच पर बैठा का उसके छिर में कई हो रहा था।

नन्दी की मोदी में उसकी बन्धी थी जो अपने छोटे हाथ बसा-बसा कर खेल रही थी। नन्दी के घामु टप-टप फिर रहे थे।

राधा नन्दी को घुप करा रही थी पर उसकी छाँचें घामु रोक नहीं पा रही थीं।

घामा बंटा !



कोसम के ग्रन्थ में एक स्पष्ट आवाज हुई—भैया जी डीक नह  
है । संकित हुआ कि कहीं भैया जी का भाखिरी छण ।

बह हिल गया । झुकते हुए उसने पूछा भैया जी कैसी तबि-  
यत है ?

अमोलक बन्ध ने अपने पर शुक्रे कीयल का बेहरा देखा—होठों  
में इतना कड़ा-बर्द आने की बात मुंह में रह गई ।

कीयल सीधा हुआ कुछ ठहरा फिर सिस्टर के पास गया  
कि डाक्टर को बुला साए ।

अमोलक बन्ध के बेहरे पर जीवन-मृत्यु की बृष-झाह प्रकट होने  
घोषास होवे लयी । उनका कष्ट उगरी आँखों में उमर आया वा ।

उन्होंने रामा को देखा जैसे वह उसे अपनी आँखों में उसे बुधा  
रहे हों—होठ फिर हिले और एक प्रीकी परन्तु भारतीयता सिक्त  
मुस्मन उनके होठों पर आई और लीप हो गई ।

रामा के लिए उनकी बधा भरहा हो गई । उसे लगा कि उनकी  
दृष्टि उसे कितनी ही सूझ्यों से कोच रही है । उसकी आँखें धामु से  
भर आई ।

अमोलक बन्ध ने अपनी दृष्टि हटा ली—जैसे वह कुछ भी दुखी  
देखना न चाह रहे हों । वह नन्दी को देखने लगे । नन्दी अमोलक कुछ  
बिधी-सी खड़ी थी । उन्होंने नन्दी को देखा और उसकी मोर की  
बन्धी को देखा । एका-एक एक महरी पीड़ा एक अविहित अन्तर  
देवता उनकी आँखों में भर गई । वह नन्दी को देखते रहे, उनकी  
आँखों में धामु के मोठी बम पये । नन्दी देख नहीं सकी उसकी आँखों  
से धामु रिस पड़े । उसने गरदन झुमायी । अमोलक बन्ध के बेहरे पर  
बैथनी उमरी छटपटाहट उमरी होठ कापे कि जैसे नहना चाह रहे  
हो—'नन्दी मुह मत फेर ! मुह मत फेर ! मैं तुम्हे देखता रहना  
चाहता हूँ । वह आवाकता की छटपटाहट उनकी दृष्टि में पत्थर सी  
कड़ी बर्क-सी कठोर होकर बम गई । होठ हिले कि नन्दी को वह देख

से—उसके बेहरे को देख लें तभी अमोलक जल्य की पुठलियां बड़ गईं, उनकी मुट्टी की पकड़ छिपिल हो गई। सपर्य समाप्त हो गया। उनकी निश्चल परबन एक तरफ लुझक गईं।

कौशल। रामा भील पड़ी उसका सिर घूमा घौर बह बड़ाम से फिर पड़ी। उसका हाथ लोहे के पसंग से टकराया घौर निर्वाक बुझिया टकड़े-टुकड़े हो गईं।

जब तक कौशल डाक्टर को लेकर माया तक तक सब कुछ सतम हो चुका था चुक गया था कौशल पत्पर-सा बड़ा बेबता रह गया।

## मिस मोनिका और पेड़ का तना

उसने मेज पर बसती हुई मक्खी को लपक कर पकड़ा। उसकी चुल्हकी में उठामा घीर उसे फेंकते हुए वह बोली बिबाह एक बीमक है जो स्त्री को लकड़ी की तरह खोजली कर देता है। जब स्त्री मरपूर बचानी में होती है तब उसका डंढा एक मजबूत लकड़ी की तरह होता है। बाब में उसको पति परमेस्वर की वी हुई कई तरह की बीमकें सब कर उसे खोजली बना बेटी है। घीर सबसे खतरनाक बीमकें है—ये ये बन्ने बिच्छुओं के बन्नों की तरह स्वार्थी होते हैं जो अपनी मां को बट कर खाते हैं और उसको कंकामयत छोड़कर कहीं घीर नहीं खाते हैं। बिमला। इसलिए मैं घनेली ही रहती हूँ। मैंने बिबाह नहीं किया। खूब पैसा कमाती हूँ और मजे में रहती हूँ। मैंने बिबाह नहीं किया। हो गयी। उसके बेहूरे पर कैप्टस के पोसे जैसा सुरबर,पन व कंटीलापन उमर प्राया जिससे वह बड़ी डरावनी लयने लगी। बिमला जकृत हो गयी। उसके मुल से एक लख भी नहीं निकला।

तुम तोय बिस्मियों की तरह हो। इसके प्यार के खूब को पोसे के लिए पूंछनुमा साड़ी हिलाती हुई पटुण जाती हों। हमकी बातनाओं के पूरे इसके शरीर कपी मकाल में बड़ी हल-बल मचाये हुए होत हैं और तुम्हारे द्वारा उन्हें मचना कर ये तुम तोयों की सबा के लिए छुट्टी कर देते हैं। ये बड़े स्वार्थी होते हैं। मैं कहती हूँ कि तुम्हारे पान पैसा होना चाहिए, ये लनी मधुमक्खियों की तरह तुम पर टूट पड़े। मजीब-मजीब भाया में मिनमितायेके कि उसके पर्व की समझने के लिए तुम्हें बकर मन्त्रकोय देखना पड़ेगा। लेकिन तब भाया के घाबरण में केवल उनका भिन्न स्वार्थ होता है। बहुत ही संदा। इसलिए मैंने

बात मानो और उस मजदूर की प्रीति को समझे हाथ जोड़ दो। यह प्यार यह भावुकता और यह समझे जीवन के सपना 'हजारों' के फूस की तरह होता है जो देखने में सुन्दर होता है लेकिन उसमें किसी भी तरह की कुछ नहीं होती। वह यह कहते हुए उसी तरह बड़ी हो गयी जिस तरह कामेज में छात्राओं के सम्मुख बड़ी होती थी। उसकी बुद्धि में वही आदेश ब बह्यपन था।

विमला प्रबोध बच्ची थी उसे एक टुक देखती रही। कुछ बेर मौन छया रहा। वह शरा भर का मौन उसे कमखान के सप्ताटे का समा। विमला ने भीरे से प्रश्न किया, 'तुम्हारे पास बहुत पैसा है। निरा एकलत जीवन है। लेकिन मुझे एक बात का बजाब दो कि आखिर तुम्हारा अंत क्या होगा? क्या तुम मरते समय छुटेरे 'मुहम्मद गजमबी की तरह रोभोगी कि मेरी इतनी बीसत का प्रब क्या होगा? —या तुम इन सभी छात्रो-सामान को अपने साथ लेकर मरोगी।

मोलिका घट्टहास कर उठी। उसके चेहरे पर अस्ताओं जैसी सापरवाही आ गयी। वह पलट कर बोली "मैं एक दिन अपने सामने इन सभी को बजा डालूंगी। जब यह राज हो जायेगा तब मैं अपने पास त्यागूंगी। क्योंकि जब रहेगा तो मेरे हजार उत्तराधिकारी पैदा हो जायेंगे और मुझे उत्तराधिकारी के नाम से चिड़ है।

'यह सब स्वाभाविक नहीं है। प्रकृति विरुद्ध है। सामान्यता की जगह तुम में असामान्यता आ रही है। मुझे विरुद्ध है कि तुम्हारी मानसिक स्थिति रोम के बादशाह नीरो की तरह होगी। तुम अपने घर को अपने हाथों से बजाओगी और उसने गाया था, तुम रोभोगी। विमला का स्वर नीम की तरह कटूवा हो गया।

'मुझे उसी में आनन्द आया। वह कम से कुर्सी पर बैठ गयी जैसे किसी ने उसे अबरवस्ती बिठा दिया हो। वह विमला पर दृष्टि फेलाती हुई बोली, 'मुझे सहजता में न विश्वास है न आनन्द।

फिर मरो। मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मान सकती। मैं विमला के साथी करूँगी और अकर करूँगी।'

फिर, मैं तुम्हें एक पैसा भी उधार नहीं दूँगी। मेरा पैसा तुम्हें पोसने के लिये है न कि तुम्हें मिटाने के लिये। सबमुझ तुम बीसी मूर्ख बबली को बंद में बन्द कर दिया जाय।  
 तुम इस बात का है कि मैं इस देश की शासिका नहीं हूँ।'

बिमला उठ खड़ी हुई। उसने मानिसा के कमरे को देखा। उसके दरवाजे पर लटके बमकवार टैपेस्ट्री के पर्शों पर मजूर जमा कर व्यर्थ से कहा 'तुम्हारा दिल इस बन्द सलाखों वाली बिक्री की तरह है जिसमें न कोई आ सकता है और न कोई जा सकता है। यह बन्द है और बन्द ही रहेगी। और तू अपनी ही बुटल में मर जायेगी। नमस्ते।

'अबरा मेरी बात मानलो। इन पुस्तकों को तुम क्यों नहीं समझ पा रही हो। मैं कहती हूँ कि तुमने एम ए० ब्यर्थ ही किया है। मुहम्मद तुपक की तरह अपने मत देखो। वह चीक कर बोली 'मेरे ही तुम मीरसिम मैन्टो की जानती हो न? अमेरिका की बहुत रीन अभिनेत्री। उनके मसम सोम्बर्ग को देखने के लिए वहाँ के लोग दिवाने थे। उस ऐश्वर्य सम्पन्न ब लोक प्रिय अभिनेत्री ने अंत में धारम हत्या की थी। क्योंकि इन मर्द-कपी सेरों ने उसे विरक्त मांस का लोभना मात्र समझा था और तीन सेरों (उसके पतिवों) ने उस लोभने को इस बुरी तरह से काटा था कि उसके भीतर बड़े-बड़े प्राण छट-पटा उठे उसके अस्थि बिनों की आगुलता का आम्बाज में लना सकती हैं। तुमने कटी हुई पिलहरी की पूछ देखी है। वह धारम होकर भी तड़पती है। ठीक उसी तरह उसके प्राण थे। वह धार्तरिक रूप से इस जीवन अवत से दूर होकर तड़पते रहे। सिसकते रहे धीरे-धीरे बर्क की तरह ठंडे पड़ गये --- मेरा कहा मानी अपने दिल से इस विचार की निकाल लो।

मैं तुम्हारी तरह पापन नहीं हूँ। मुझे बिरबात है कि तुम्हारा अंत बहुत जयातक होगा। तुम्हें यह जीवन असह्य हो जायेगा और एक दिन तुम धारम हवा करोगी।' वह हवा की तरह बाहर निकल

यही। मोनिका ने दीसे में अपना बहुरा देखा। क्या मैं आत्महत्या करूँगी? उसने अपने धाप से प्रश्न किया।

विमसा पामल है। मैं आत्महत्या क्यों करूँगी? उसने अपने सवाल का खुद उत्तर दिया।

कमरे में एक बारगी धोर सम्नाटा छा गया। उसक सामने की शूंगार मेज पर (काली मैया दिवली की छाती पर पाँव रखे लड़ी है।) छोटा सा हाथीदांत का स्टैबू पड़ा था। उसकी उस पर दृष्टि गयी। एक अजीब संतोष इसका उसकी धाँसों में। वह उठी। उसने उसे उठा कर धरप से देखा। वह बाहर बरामदे में धायी। एक कत्ता एक वेड़ का इम्सानगुमा तना पड़ा था। जब कमी मोनिका अस्तवृद्ध से पीड़ित होती है इस ठने के पास आकर खड़ी हो जाती है।

वह धमी वहाँ आकर बैठ गयी। अत्यन्त सिम्न धीर टूटी सी। वह उस ठने के अत्यन्त निकट खिसक गयी। अपना मास उस पर टिकर दिया। स्पर्श मादक धीर पुरुष का स्पर्श।

यह धकेला उसे प्यार करता है। यह निर्बल धीर गुमा तना। उसकी आत्मा की बहुराइयों में कोई बोल छठ धीर उसने मावाबेस में मैत्र मुख लिये। बाह्य-जपठ उसकी पसकों में बन्द होकर सोप हो गया। उसके सामने लम्बी-लम्बी धबेरे की घाटियाँ फैल गयीं। वे घाटियाँ सम्नाटों से पूज रही थीं। इन घाटियों में कोई बूल नहीं था कोई पूल नहीं था। सुनी धीर बीरान। उबड़ी धीर बियाबान। वह घाटियों को अपनी अस्तदृष्टि से देखती रही। इन्हीं घाटियों की तरह उसका दिम है। बीरान धीर सुनसान। जूयनधुओं की जमक की तरह सुख के क्षण उसके जीवन में ध्राये। माँ बचपन में मर गई। बाप को धरा वह बहम रहा मेरे कोई लड़का नहीं है इस लिए मेरा बुढ़ापा बिनाइ जायेगा धीर मैं अपने अन्तिम दिनों में जाने जाने का मुहताब ही जाठया इसलिए उसने कमी मी गुसरास जाने वाली बेटी को आत्मा से प्यार नहीं किया। एक पासन पीपण का फर्न जादे वे उसे दो बूल जाना साबारण बपड़े धीर

पढ़ाई का खर्च दते रहे। वह पाठशाला लगाती टीका-टमका करती बासों में जुड़ा बाँधती तो वे सख्त माराज होते और उस तरह के रबीये को वे प्यस्ततु खर्च की सजा देते थे। मोनिका तर्क बकर करती। तर्क पर वे जल मुन जाते और भावख कर्ता की तरह कहते एक परीख बसक बीचन की इससे अधिक क्या धारणकरताएँ पूरी कर सकता है ? आज की सड़कियाँ प्रकृतिजग्य सौम्य को नहीं संभारती बल्कि बनाबट ही बनाबट में दीर्घों को आया करती हैं। मोनिका चुप हो जाती। मस्माहट के मारे वह बुझी हुई हो जाती। उसके पिता जी बहाँ से लिसक जाते। वह शेष में तड़पती रह जाती। उम्र अबान ही गई। आप का रबीया और बूढ़ा हो गया। उनके व्यवहार में कसापन और मुझर आया। वह बी ए० में पहुँच गई। आहिस्ते-आहिस्ते उसने पिताजी से कुछ कहना ही छोड़ दिया। जो वे बस ला देते उसे वह पहन सिती और जो वे बामी में परोस देते उसे वह खा सिती।

उसकी गोनरानी देवी बीरे-बीरे उसकी तरफ धाई। परँ हिने और उसके कमरों की घाहट ने कमरे की सूयता को संय किया। मोनिका को देखकर वह ठिठक गई। कुछ पम स्तब्ध ही लड़ी रही। फिर उसने अपने बाँये हाथ से परँ को पकड़ लिया। उसने सोचा 'यह मासकिन की सजा की घाहट है।—यह पेड़ का तना और मेरी मासकिन।—तना भी गया कमास है। एक बम पादपी की सख्त का। उसने नाक भी सिफोड़ा। 'देवारी के मई नहीं है, मनेली है। इस पेड़ को ही—। वह ही-ही-ही करके मोन हंसो हंस पड़ी। भाव खड़ी हुई बापस।— 'हां मासकिन ने सख्त हिबाबत दे रखी है 'बब मैं इस तने के पास बैठती रहूँ तब तुम मुझे किसी कीमत पर नहीं छोड़ोगी। उस समय मैं बहुत ही संभोर बात सोचती हूँ। सोचती हूँ, सोचती हूँ। देवी ने मुझे बिचका दिया।

अब मोनिका क्या धमिमूठती मुझा परिवर्तन करके बैठ गई। उसका धाँस भी लिसक गया था और उनके दोनों हाथ पीछे की ओर तने की धपने पीरे में से चुके थे।

उसे एक नई अनुभूति हुई कि यह बेरा सरवर के हाथों का है। अनुभूति मुहुनता क घावत में चिरती गई। उसे सरवर याद धाने लगा। उसके साम बिताये हुए हजारों क्षण। समर्पण और प्रीन के क्षण ! फिर प्रसगाव। फिर मंजुस से प्रेम। प्रभाव और प्रेम का समझौता नहीं। इस बरिद्रता ने उसे विवाह का कोई नया संभर्न नहीं बूझने दिया। वह युगों से बने या रहे बाणवरण में झुसती रही। लेकिन उसने एक नये सत्य को जाना कि नारी हर क्षण प्रभास्पा पाकर नये क्षण नई प्रभास्पा ग्रहण कर सेती है। जैसे वह अपूर्ण पाठी है मर्द के बिना पर यह प्रसावा मर्द का प्रपना नहीं युम परि स्थिति से बिबध पुरुष के प्रपच ने उसे फिर ठया। तब बूछा से वह नहा उठी। मंजुस से सैद्यान्तिक मत-मतान्तर होने के बाद वह प्रपने में प्रभनिहित हो गई। सिमट गई। और फिर उसके बाप ने कभी भी उसके विवाह की चिन्ता नहीं की। वह एक भी रूपया खर्च करना नहीं चाहता था।

परन्तु उसे ये सब स्मृतियां बला डालती हैं। वह प्रमस हो जाती है।

तना हिलने सम गया था। उसकी बटकटाहट ने उसका ध्यान भंम किया। घलीत की बटनाएँ कापच के व्यर्थ टुकड़ों में बिखर कर उड़ गईं। वह उठी। उसे चारों ओर से भाग सी जसती हुईं प्रतीत हुईं। बदन बसने सा लगा।

माय ! माय ! माय !

वह स्नान घर में जाकर पानी से भरे हीन में डूब गई। वह बड़ी बेर तक स्नान करती रही। बाहर आई। बाहर भाकर उसने अपने बाल सुब्बोये। देवी से चाय बनवा कर पी। कमरे में आई। अपने बाप की बबानी की तस्वीर को देखा। बुझाने की सारी तस्वीर एक दिन उसने धनजाने में (केवल अभिनय भाव) जला ही थी। उसे अपने बुड़े बाप से सख्त लफरठ थी। वह सोमी और कंजूस बाप जिसने रुपयों के खालच में उसे प्रान्त्रम कंधारी रखा। उसके जीवन को बहर



बना जाता। उसके मन में सदा की तरह बसात था कि वह इस तस्वीर को भी तोड़-फोड़ कर बना डाले ताकि उस कंचूत की कोई छेप-स्मृति भी न रहे। लेकिन अपने इस हिंसक व बुण्णित विचार को मिटाने के लिए वह तुरन्त कमरे के बाहर ही गई। उसी धर्म-नाम प्रबन्धा में वह तने के पास आई। वह निर्फ ड्रेसिंग-याउरन पहने हुए थी। उसका शरीर भीया-भीया था उसने उसे भी उतार दिया। उतारने के पहले वह सदा चिकों को डेकती थी। चिक सदा की तरह कीचारों से चिपटे हुए सोने थे। वह तने के पास धाकर फिर खड़ी हो गई। उस पर धीरे धीरे हाथ फेरने लगी। सोचने लगी “मुझे पुरुष खाति से सख्त नफरत है। उससे सी कसम दूर रहना चाहिए। पुरुष का चरित्र “पिकातो” की चित्रकमा है धीर दिल बातचाप” की गहरे धनेक मर्मों वाली चित्रकमा। धर्म धीर धर्म। किन्तु प्रमाध धामी धत्यन्त प्रमाधधामी। बेचारी स्त्रियां मोह जाती हैं। सम्मोहित भी प्यार करने लगती हैं। पर मुझे उनसे दूरणा है। बेहद दूरणा धीर उसने अपने विचारों के विच्छ उस तने को अपनी बाहों में भर लिया।

वेनी ने धाकर उसके ध्यान को धंग किया, धमोत्सना बीबी आई है।

“मैं धाती हूँ। वह धतरी से कपड़े पहन कर बैठक में आई। धमोत्सना ने नमस्ते की।

‘कहो कौंसे धाना हुआ ?’

‘यू ही।’

‘धमोत्सना। तुम विधवा हो न ?’ उसने हठान् प्ररत किया।

‘हां।’

पुरुष की बनने के बाद तुम्हें धाजीवन धैर्य्य मिला ? धिमला भी धाज पुरुष की होने जा रही है। उसे भी धरम हुआ मिलेया।” धमोत्सना धिमला की सहेली है।

वह धड़क उठी ‘धाप बहुत धिरती था रही हैं। (धम्यामियत उसने अपने मन में कहा) वह धापकी नमेरी बहिन है। धापको उसके

सुहाग की कामना करनी चाहिए। ऐसी बहनुभा कोई दुश्मन भी नहीं देता। मैं बिबना बकर हूँ पर माँ भी बकर हूँ। उस पुरुष का बेटा मुझे इम्बत और सम्मान के साथ ही जून रोटी देता है। प्यार और स्नेह देता है। वह जब माँ कहता है तो मैं अपनी सारी बकान भुल जाती हूँ। मोनिका बीबी आपको बिन्दमी में जो नहीं भिन्ना उसके लिए सबको बंचित करने की चेष्टा न कीजिए। आपका मह धन किसी को आर्कषित नहीं करेगा। सही बात यह है कि आपको अभी भी किसी से बिबाह ।

‘ज्योत्स्ना तुम जा सकती हो। उसने क्रोध में मधुनै फुरका कर कहा। ज्योत्स्ना खली गई। उसके बाते ही उसने गुस्से में चाय की प्याली व सस्ती को बाहर फेंक दिया।

क्या देखती हो? मोनिका झत्सायी—देवी को देखकर। कुछ नहीं मानकिन कुछ नहीं।’ वह बेचारी काँप रही थी।

‘देवी! ज्योत्स्ना पयली कहती है कि मैं बिबाह कर नू। क्या नू नहीं जानती कि ये पुरुष सपोसे होते हैं। इनका प्यार केवल बीबा और धन होता है।

‘आप ठीक कहती हैं।’ देवी जानती थी कि जब कभी भी उसकी मानकिन पुरुषों को मासिबां बेठी है और अपनी सहेलियों से झगड़कर उन्हें कौसती है तब उसे अपनी मानकिन को ऐसा उत्तर देना चाहिए। वह रटेरटये सबों को पिन्ने के छोटे की तरह बोली ‘ये पुरुष धाँप हैं। उनको चाहने वाली स्त्रियां कुटियाएँ हैं। ये पिल्ले पैदा करेंगी एक साथ तीन-तीन बार-बार। फिर मर जायेंगी। ये सब ऐसी ही हैं मानकिन। उन्हें मरने दो रिरिवाने दो। जब बदन में जून नहीं होया और ये पुरुष रुपी जोंकें उन्हें छोड़कर किन्हीं दूसरी स्त्रियों से बिपटेंगे तब इनकी धाँखें खुलेंगी। ये आपकी बातें अभी नहीं सुनेगी। बहनुम जाने बीबिये इन सबको। जलिए जाना जा बीबिये (या चाय की बीबिए)।

मोनिका हमी नारी की तरह कदम उठाती हुई आर्द्रात्म्य रूप में जाती है। कुछ देर तक चुप रहती है।

माज भी वह चुप थी। बेबी ने आग्रह किया 'घाप खाना कुछ कीजिए, ठंडा हो रहा है।'

उसने सामा झुक किया।

बेबी ने सहमते हुए पूछा 'घापने भी जीवन में कभी किसी पुरुष को धूसा होगा ?'

मोनिका ऐसी हंसी जैसे उसे बेबी पर तरस भा रहा हो। बानी मैंने अपने में भी किसी पुरुष स्पर्श का स्वागत नहीं किया। मैं इन्हें कंटीले तार समझती हूँ इनके पास से गुजरो तो वे अपनी मजबूती घांस से इनारे आंगुल को अपनी धोर खींच कर अपने कांटों में घससा लेंगे 'धीर चुपके ?'

बि. छि. घाप भी कौसी बाँधें करती हूँ। मैं आपके कदमों पर चलती हूँ। वे पुरुष निगोड़े बे-सयाम के बोड़े हैं कील इनकी सारें खाने। धीर उबर बेबी के मस्तिष्क पर उसका प्रेमी बन छा गया धीर उबर मोनिका को सरवर व संबुल पाव भा गया।

शूठ ! एक विस्फोट की तरह शूठ ने उन दोनों के दिमाग में धमाका किया धीर वे बिमूढ़ हो बची दोनों की नजरें टकराईं। दोनों एक साथ हंस पड़ीं।

'बेबी ने कहा 'बिमसा भकर घापी करेयी।'

'मरने दो। उसने बिड़कर कहा धीर वह उबास सी सोच बैठी सभी शारिर्वा कर सेवी धीर करती पामेयी। मैं विरोध करनी धीर करतो जाऊँगी। एक दिन ऐसा घायेया कि मैं मर जाऊँगी। मेरे काँडे नहीं होया। मकेली रैगिस्ताज भी साड़ी की तरह मकेली। नहीं-नहीं मैं मर जाऊँगी मर जाऊँगी अपने सारे सुख को मिटाकर पहले ही मिठ जाऊँगी। सब कुछ जाक कर डूयी। पर दू टपी नहीं। अपने को घब मैं बीच बबल सकती हूँ। बराजव ! वह बराह उठी।

घौर फिर वह उठकर अपने बाप की अबान तस्वीर के पास गई। मैं इसे फोड़ डालूँगी। इसकी स्मृति मिटा डालूँगी। घौर वहाँ से वह सीधी उसी इन्साननुमा तने के पास घायी घौर उसे जार जोर से हिंसाने लगी।

देवी ने मुँह बिचकाकर मन-ही-मन कहा यह इनका सदा का काम है। कभी न कभी ये बकर पायल होगी।

घौर वह सदा की तरह अपने काम में व्यस्त हो गई।

मोनिका की घाँटों में घाँसू घा गये। वह टूटकर पककर तने के सहारे बैठ गई—सदा की तरह—बिलकुल पस्त होकर।



● गोपीबल्लभ गोस्वामी 'उपेक्षित'

## काया सस्ती जिन्दगी मंहगी

दिसपित्तस्ती बूय, साँय साँय करती बर्य लू घोर दूर दूर तक फँसे  
बीरान रेमिस्तान के बीच एक छोटा सा मकालपस्त माँव है, भोजाबास ।

उत्ती बाँव के बीबरी पुराने के भर भात्र बीबा बच्चा हुआ । सारे  
बर में लुप्पी की एक सहर बीड़ पर्य । सेकिन पुरखा इस सब से दूर  
बाहर बीपाम पर जाने क्या सोच रहा था । उसने सुना था मयबान  
जब बाँव देता है तो चुम्मा भी देता है सेकिन उसको ती माँव बाँव ही  
बाँव मिली थी । चुम्मा का नाम नहीं । उसे कभी मयबान पर ती कभी  
सपनी पल्लि पिबारी पर कोब छाता । हर साल एक संतान एक  
बाँव । जब मयबान भी हुमेसा हर साल एक सामान 'जमाना'  
नहीं करता तो फिर पिबारी को क्या पड़ी है कि वह हर साल ?  
पुरखे को याद घामा जब उसका पहला बच्चा हुआ था तो वो  
'जमाना' हुआ था कि बाबरा लसिहान में समा नहीं रहा था । सारे  
कोठार बान से ठस्राठस मरे पड़े थे । बीसियों मन बाबरा तो उसने  
बच्चे होने को लुप्पी में ही बाँट दिया था । उसके बाद दूसरे साल जब  
सूनटा बच्चा हुआ तो भी 'जमाना' ठीक ठाक था । कुछ पिछले साल  
का जब क्या था कुछ इस साल हो गया था । सेकिन फिर तीसरे घोर  
बाँव बच्चे के बन्म से तो जैसे मयबान को नाराज कर दिया उसने ।

पिछले साल मामूसी बरसात में पाँच पाँच साठ साठ मन बाबरा  
बड़ी मुश्किल से हुआ घोर इस साल ती चारों तरफ साँय साँय करती  
सू के सिवा कुछ भी नहीं था । सेकिन बच्चे तो चले धा रहे थे जैसे  
कर्म की फिल्लें । घीह ! उसे याद थाया इस साल फिल्ल में महाबन को  
बहु क्या देगा ? पिछले साल भी बड़ी मुश्किल से हुआ जोड़ी बरके

महाजन को इस साध का नाम लेकर टरकाना वा पर 'जमाने का तो यह हास है। बरसाव का नाम पर एक बूढ़ पानी नहीं घीर ठंड तो इस सात ऐसी जैसे कि बाबी माँ से कहीं परदेस की कहानियों में सुना करते थे। थोड़ी बहुत इधर उधर साग सखी की जेठ बची थी वह भी बर्फ की तरह जम गई थीत से पीली पड़ गई। भरती बाँस हो गई पर पर पियारी उसे फिर से पियारी पर ज्येष्ठ धाया लेकिन वह जानता था कि उस धरती का इसमें होय नहीं। तो वह क्या करे ? मन ही मन उसने कुछ निश्चय किया और घर से कुम्हाड़ी भी और खेत की और चल पड़ा। लेकिन खेत में खड़े हो चार दूठ के समान देकों को झट भी से तो क्या होगा ? कितने दिन इस प्रकार चलेगा ?

खेत में खड़े खड़े उसे अचानक एक विचार धाया कि वह शहर जाकर कहीं मौकरी क्यों नहीं कर लेता। मौकरी 'वह जैसे करेगा ? "कहाँ मिलेगी" ? कई विचार प्रस्तावक चिह्न की तरह उसके सामने खड़े हो गए। लेकिन नहीं सोचने पर शहर बसे हैं उसके पाँव के जम्होने भी तो कहीं मौकरी की है वह भी कहीं दूँड ही सिवा। उसने मस्तिष्क को एक झटका दिया और चला धाया घर।

लेकिन इस घर बाहर, इन बच्चों को, किसके मरोसे छोड़ पाय। पियारी क्या ये सब संभाल लेगी ? दो पायें दो बैल" क्या इन सब को दो बैल सकेगी ? हाँ जरूर देखेगी नहीं देखेगी तो 'घोर पाप भी क्या है ? मुँहों तो धरा नहीं जा सकता।

घाम की धंधेरी परतों ने जैसे जैसे पाँव को लपेटना शुरू किया जैसे-जैसे पुरख का शहर जाने का विचार हड़ होता गया।

रात को उगने पियारी की सखी तरह से सब कुछ समझा दिया पियारी भी बैचारी क्या करती न चाहते हुए भी मूख के सामने उसने बूटने टेक दिये। धीघ्र बोट धाने की घोर पैसा बरसकर भेजने की कसम का अपना सम्बल अपनी निधि समझकर उसने बूटे मन से अपने पति को सहमति दे दी और दूसरे दिन पुरखे से पाँव छाड़ दिया।

पियारी को पुरखे के बिना बर सूना-सूना लयता राठ काटने को बोझनी पर बसा करती। अपने को समझा लेती गम के बूट पी सिती। बच्चों की बैल भाल में ही बिन काट सिती।

धीरे धीरे तीन महीने हो पये पर पुरखे का कोई समाचार नहीं आया। हाँ बाने के पाँच साठ दिन बाद एक समाचार कहबबाया गया था कि बहु बाहर पहुँच गया है और नौकरी की तलाश में है। तो क्या उन्हें अभी तक नौकरी नहीं मिली। 'नौकरी के बिना और बाहर में कहीं रहते होंगे? क्या काठे होंगे? धन्धर-ही-धन्धर पियारी का दम बूटने लगता। यद्यपि यहाँ बर का दिन उस दिन से अधिक बिन्तायुक्त था। बर में बाबरे का एक बाना नहीं था। पायें टल' चुकी थी एक बैल पहले ही चल गया था। बाप इतना सा बसा था कि मात्र समाप्त हो' कस समाप्त हो। फिर क्या होगा? बार बच्चे को जानकर एक स्वयं और ऊपर से पति की बिन्ता बहु तो सुन कर काँटा हुए था रहीं थी। बुरे-बुरे विचार उसके मन में उठते कि कहीं उसके पति को कुछ हो गया तो बहु कहीं की नहीं रहेगी।

मात्र यह तीसरा दिन था बेचम पड़ोस के बर से माँकर लार्ड यह छाछ पर गुजारा करते हुए इन चारों बच्चों का पेट गोबर के उपले बेचकर कहीं तक भरती। गोबर भी तो सुखे पेट से कम तक निकलिया। चारा भी तो बहुत महंगा हो गया है। 'यह अपना मन' उसने स्वप्न में भी ऐसा नहीं सोचा था।

धीरे-धीरे उसका बाँव भी खासी हो रहा था। धकास पीड़ित घामील घरखाबियों की तरह अपना बर छोड़ छोड़कर इधर-उधर बिचर गये थे।

पियारी को भी धन्ध में गाँव छोड़ने की नीजत था गई। उसने सुना कि पड़ोस के बाँव से एक लड़क बनेगी और गाँव के लोगों को धक्कुरी सिधेयी। बस लोप बर बार छोड़ छोड़कर था पड़े लड़क के किनारे। एक अपना बाबची बाटू बना घीर घीर - ठ बाना

बच्चा मजबूरी तय हो गई। पिपारी सोचती कैसी बिडम्बना है। बाकी दुनिया की सारी वस्तुयें मंहनी पर प्राबली सस्ता। दिन भर सिर पर मिट्टी डोकर सड़क पर बिछाओ घोर घाम को १२ घाना लेकर पेन करो।

लेकिन सिक्कों से भी तो पेट नहीं भरा जा सकता। सिक्कों से भी तो कोई भान ही खरीदेमा। लेकिन भान कहाँ ? एक दो बगियों ने दुकान खोली है पर देता इतना महंगा है कि एक दिन की मजबूरी का भान बूटने पिन भी नहीं बसे। पिपारी सोचती क्यों नहीं पैसों के बदले भान ही सरकार बे देती इन बगियों से तो फुटकारा मिलता। पर क्या करती उसके बस की बात ही नहीं। घोर प्राक्खिर सरकारी भान की दुकानें खुल ही गयीं। उधे इससे बहुत राहत मिली।

इधर बच्चे दिन भर माँ की अनुपस्थिति में इधर-उधर बिभबिसाठे फिरते। बड़ी भुली भुनिया ६ साल की होने को पाई दिन भर छोटे भुले को लिए-लिए उसके हाथ ही भक जाते "जब एक जाती ही रोने लगती, पर कोई पास हो तो रोना भुने ही रोते रोते समय कटता जाता घोर जब भानू सूख जाते तब कहीं माँ जाती लेकिन माँ को इतनी फुसंत कहाँ कि वो भुनियों के भानू देखे। दिन भर काम से बड़ी माँकी जाती घोर बूझे जाँकी में उसमा जाती घोर वहाँ दूर कैम्प से उधे पानी भी तो लाना पड़ता" राठ के प्रथम पहर तक उधे रोने लगी ब होती।

किर मन-ही मन पति को डू बने निकल जाती घर। घर उसका देखा हुआ नहीं लेकिन किर भी कल्पना के पक्षों से ठहरता उसका मन इधर उधर घर में बढ़ता घोर अपने पति को डू बता। कमी फुटपाथ पर बड़े मिखारियों में तो कमी किसी बाधु के दरवाजे पर बहीं पहने जपराधियों में तो कमी डरते डरते घर की उन नायिनों में जो भोसे भाने प्रापीण देहातियों को इन कैली है घोर गाँव सौटने लायक नहीं रहने देतो। बस इन्हीं बिस्ताघों में उमकी



रात कट जाती थीर मुबह फिर वही सड़क वही मिट्टी थीर वही बारह घामा ।

उसे विचार थावा कि वह भी शहर जाम, जाहे मीव ही मांगनी पड़े पर पति की दू ड निकासे । कैम्प के बाबू ने उसे शहर बतने का इस्सारा नी किया । लेकिन मांष के एक माने जाने वाले चौबपी घराने की बहू मीख माने धपनी इज्जत बेचे नहीं धनी छसक स्वामिमान बाकी है । वह मर जावगी पर ऐसा सोचेयी भी नहीं । पर सड़का पति' वह फिर विचारों में डूब जाती ।

धीरे-धीरे सड़क जैसे-जैसे शहर के नजदीक पहुँचती जाती छसके घन्स में वही एक बेवना कचोटती कि कहीं शहर में छसने धपने पति को नहीं देखा मा कुछ ऐसी बीसी परिस्थितियों में देखा तो क्या होगा ? उसको विस्वास ना धपर उसका पति कुछ जाने-पीने कमाने मायक होता टी उसको बकर याद करवा 'लेकिन फिर' इतने दिनों बाद उसने कोई समाधार क्यों नहीं देवा ? हे मयबायू वह कहाँ होवा कैसा होगा ?

घन्स में छसने निरबय कर ही लिया जाहे कुछ भी हो धब वह शहर जावगी थीर पति को दू ड निकासेवी । धब जसने धपने हानों वनी उसके धम थीर पहीने छ छोपी सड़क शहर से केवल एक मील के करीब ही रह गई थी वो रोज शहर जावगी थीर पति की दू ड करेयी । थीर सधपुच ही वह एक दिन शहर पहुँच गई ।

लेकिन यह क्या ? वह तो बेखकर बंन रह गई । जममपती धपन घुन्सी घट्टासिकारों कपाचीपी थिकनी सड़कों पर हूवा समान पाकती मोटर गाड़ियाँ । सड़क पर चलते मुबक युवतियों की थिसखिताहुट' वह सोचने लयी कहाँ है धपाल वह मयंकर धवास थिसके कारण गांव के गांव उबड़ धये । हजाराँ हरे भरे बेठ समसान छ बीछन हो धये' कहाँ है वह धपाल थिसके कारण गांव के मोने भाते बन्ने रोटी रोटी करते इधर उधर थिधर धये । हजाराँ धुछे परिवार धर धर की ठोकरें का रहे हूँ । नहीं है वह 'काम थिसके कारण वह

घाब भीख मांगने और इज्जत गंवाने तक की स्थिति में पहुँच गई। नहीं यह सब झूठ है यहाँ कहीं कोई प्रकाश नहीं है कोई कमी नहीं है।

यहाँ किसी का कोई घर नहीं उबड़ा किसी का पति किसी को छोड़कर नहीं गया। यहाँ किसी के बच्चे मूल से नहीं बिलबिसाये। हे ममजान—ये सब क्या है ?

क्या प्रकाश हमी है ? क्या प्रकाश हमारे लिए ही है ? क्या प्रकाश से गांव ही उबड़ते हैं शहर नहीं ? प्रकाश से बरीब किसानों ही के गाय-बैल मरते हैं शहर की बोझा गाड़ियों और मोटर गाड़ियों को कुछ नहीं होता ? प्रकाश से गांव के बच्चे ही मूल से तड़प-तड़प कर मरते हैं—शहर के टोस्ट मकलनों को कुछ नहीं होता—प्रकाश में हमारे सौंपकों में ही घाय सपटी है शहर की अट्टासिकाओं की कुछ नहीं होता ?

नहीं-नहीं यहाँ कुछ नहीं है कुछ भी नहीं है। उसके मस्तिष्क की गर्तें फूल गईं—बहु पानन की मांगि बिधिप्त हो गई। उसकी इच्छा हुई कि वह ओर-ओर से चिन्ता चिन्ताकर शहर के इस व्यस्त जीवन को जहाँ का तहाँ रोक दे और एक-एक भावमी को धपने गांव का हास बना फाड़ फाड़ कर कह सुनावे कि जहाँ जिन्दगी में संघर्ष है तो केवल मूल से—सगड़ा है तो केवल पेट से—जहाँ भावमी केवल रोटी की बात सोचता है—जहाँ की व्यस्तता बच्चों की मूल प्यास बुझाने के लिए ही है—घाब उसे पहली बार सया जैसे मनुष्यों की वो घनम-घनम जातिवा बरती के एक ही टुकड़े पर पल रही है।

मोटरोँ और बसों के पीपीँ तथा धर्र-धर्र के बीच उसके मस्तिष्क में काब और परशाताप की घुटन बढ़ने लगी और कुछ अर्णों बाद उसे लगा जैसे वह धपने मस्तिष्क का सतुसन लो देयी। घवाने ही उसके मुँह से एक भीख निकली और वह देमुख होकर सड़क पर गिर गई। कुछ ही अर्णों में उसके घास-घास लोग इकट्ठे हो गये। ठर्र...

तरह की व्यक्तियों का मुना मुनाकर भीड़ छंट गई। लोगों ने ममता कोई पापल घोरन मर्मा से बेहोश हो गई है। लेकिन इस भीड़ में फटे हालाँ में एक धावमी भी था जिसने उसे पापल नहीं समझा घोर भीड़ छट जाने के बाद भी उसके करीब लड़ा घासू बहाता रहा घोर उसके होश में घाने की प्रतीक्षा करता रहा—बह था उसका पति—गांव का बीबरी—पुरजा !



● दीपकर चौहान

## एक चंगुल : एक वंदी

गौकरी करोमे ?

बड़ी दया होमी सरकार । इसीलिए तो इतनी दूर से आया हूँ ।

कोई बड़ा काम नहीं है । बस बगीचे की रखवासी करनी है ।

लेकिन तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं ?

'मुझे जग्गू कहते हैं तुम्हारे ।'

'कल से बगीचा तुम्हारे बिम्बे रहा । देखो कोई शिकायत नहीं आने पाये ।

'मासिक को कभी शिकायत का मौका न दूँगा ।

'इसी की चिन्ता कर रहा हूँ, सरकार । घासपास कोई सस्ता मकान मिला जाय तो'—

रामचरण अपना यह जो नीम के पास बासा मकान खाली है न इसी में जग्गू रहेगा । क्यों छोटा तो नहीं पड़ेगा रे ?

'नहीं सरकार वो ही तो प्राणी है ।

'अभी कोई बाल-बच्चा नहीं हुआ ?'

नहीं सरकार पारसाल तो खासी हुई है ।

'कोई बात नहीं हो जायेगा । फिर यह नीम बाबा मकान ही ऐसा है ! बिरजू के भी पहला बच्चा यहीं हुआ था ।'

बिरजू की अब क्या प्रसन्नो जैसे बाला बन गया है सरकार । अब तो उसने एक मच्छा-बासा मकान भी बनवा लिया है । यह सब आपके पास रहने का ही प्रयास है ।

हा रामचरण जग्गू को मुनीम की से पचास रुपये पेसगी दितवा—

हो । जम्बू जाकर अपनी घर वाली को ले आवेगा धीर फिर माकर काम शुरू कर देगा ।'

'बड़ी बमा है सरकार । पर मैंने मकान का किराया तो पूछा ही नहीं ।

×

×

×

'सेठ जी कम तुम्हारे यहाँ ही भोजन करने दे ।

मेरे बड़े भाग्य जो मेरी कूटिया पबिल होगी ।

सेठ जी मस्त प्रकृति के हैं । इनमें डंब-जीब का भाव ता है ही नहीं । दूसरा कोई होवा तो सीमे मु ह बात भी न करवा ।

"रामचरण तुम्हारा भला हो जो मुसँ देवा मालिक तुमने बिना दिया ।

सब नाम की बात है ; देखो जम्बू बमादा तैयारी न करता । सेठ जी का सादा भोजन ही पसन्द है । उम्हाने यह कहलबाया भी है ।

×

×

×

"रामचरण रात अपने महा कोठी हो गई । तिखीरी का ठाला तोड़कर कोई बारह हजार बपवा ले गया ।

'सरकार यह तो पत्र हो गया । पुलिस को जम्बू रिपोर्ट कीजिए ।

"हाँ जरा जम्बू बने तो बुलावा ।

मैं वहीं से भा रहा हूँ । जम्बू अपनी घर पर नहीं है ।

'रात को यह मेरे पास ही था । फिर जाने कब बमा बमा । तुम जाओ उनकी तलाश करो । मैं-पुलिस को मारने रिपीट देता हूँ ।

×

१ टिन-जम-रम

'हलो बहाँ से !

'सुसिस स्नेहन से । प्रापका नीकर बम्पु विरपतार कर लिया गया है । इस सम्बन्ध में रामचरण से काफी सहायता मिली । प्राप अल्प प्राण्ये ।

'बस अभी प्राया ।

×

×

×

'तुम्हारा ही नाम बम्पु है ?

'हाँ सरकार ।

तुमने अपने मातिक सेठ चरणदास के यहाँ चोरी क्यों की ?

इसलिए कि इस रकम से पिस्तौल खरीदू और सेठ जी का काम ठमाम कर दू । हालाँकि मेरी नीयत केवल पिस्तौल चोरी करने की थी पर उसके अभाव में मैंने रुपये छुराये ।

'ऐसा तुम क्यों करना चाहते थे ?

'सेठ जी ने बिश्वासघात करके मेरी स्त्री के साथ बलात्कार किया ।

'तुम बस समय वहाँ थे ?

मेरी स्त्री को अर्पणा करने के लिए सेठ जी ने मुझे किसी काम से कानपुर भेज दिया था ।

'क्या तुम्हारी पत्नी सब कुछ यहाँ कह देगी ?

'हाँ, कहना ही पड़ेगा सरकार ।'

'और वह स्वयं ।

मेरे पास है । बस कुछ ही अर्ध हुए हैं ।

×

×

×

बम्पु जो कहता है क्या वह ठीक है ?

हाँ सरकार ।

‘उस समय तुम्हारा पति कहाँ था ?

‘रामपुर । सेठ जी ने ही घण्टे वहाँ भेजा था ।

‘सेठ जी तुम्हारे घर में चुसे तो घण्टे तुमने रोका नहीं ।’

‘नहीं सरकार ।

‘क्यों ?

‘वे इसी प्रकार उनकी उपस्थिति में भी कई बार घाते के घोर भोजन भी वही करते थे ।

‘क्या उस दिन भी तुमने घण्टे भोजन कराया ?’

‘हां, सषा की तरह ही समझकर ।

‘क्या सेठ जी धकेले ही थे ?

‘नहीं घमका मीकर रामचरण भी था ।

‘जिस समय तुम्हारे साब यह पुर्भटमा बटी, उस समय भी क्या रामचरण उपस्थित था ।

‘नहीं ।

‘तो वह वहाँ से रुक गया ?

‘जब सेठ जी भोजन कर रहे थे ।

‘रामचरण को घाते बलत क्या तुमने देखा था ?

‘नहीं मैंने सिर्फ बरबाबा बन्ध होने की घाबाज सुनी थी ।’

‘भोजन कर चुकने के बाद सेठ जी ने हुरकत शुरू की होगी ।

‘नहीं, वे कमरे में बिछे बिस्तर पर जाकर लेट गये ।

‘जब तुम क्या कर रही थी ?

‘रसोई पर का बाकी क्या काम ।

‘फिर क्या हुआ ?

‘बहु कब जायें घीर में कब बरबाबा बन्ध करके सोई, इसके लिए मैं इंतजार करती रही ।’

‘फिर ।

‘सेठ जी गए नहीं । बोल अब मेरे से नहीं बोला जायगा । मैं आज रात यहीं रहूँगा । और मुझे तुम बाहर बँधी बना कर रही हो ?’

उन्होंने मुझे पुकारकर भीतर बुलाया । मैं कमरे में जाकर वहीं बूझी घोर बिज्जे बिस्तर पर बैठ गई । उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया लेकिन मैं वहाँ से उठी नहीं !

तब वे बोले— गाँव बासियों में यही तो बात है ! बस धर्म ही ही धर्म । अभी कोई बहुराजनी होती तो कमी की बहुराजनी कर बोलने लगती ।

‘इसके बाद तुमने क्या किया ?

मैं उनके पास जाकर लड़ी हो गई । उन्होंने बैठने के लिए अधिक प्रार्थना किया तो मैं उनके पर्जन्य पर बैठ गई ।

वे बोले—‘आजकल घर का धर्म कैसे चलता है ? कोई कमी तो नहीं पड़ती यह कह कर उन्होंने मेरे हाथ को सहजाया । मैं धर्म से गड़ी जा रही थी । बड़ी मुश्किल से फिर अपना हाथ छुड़ाया ।

‘फिर क्या हुआ ?

‘क्या नींद था रही है उन्होंने मुझसे पूछा ? और मैं हाँ कहकर झट से जा कर पास के बिस्तरे पर सो गई ।

‘क्या तुम्हें सेठ जी की बुरी नीयत का तब भी सम्भाव नहीं हुआ ?

‘नहीं पहले तो मैं बुरी । बाद में साधा सब साधमी एक स नहीं होते । फिर सेठ जी तो ब्यापु है ऐमा-बैसा क्या करोगे ? यदि चाहते तो अभी ही क्यों बँधी ?

‘फिर क्या तुमने नींद स ली ?

‘नहीं मुझे बल्कि ही सेठ जी के खरटि मुनाई दिए । सोलना-सी हुई । फिर मुझे भी नींद ने साधर नेर लिया ।



‘उस बड़ो का हान क्यों नहीं कहती जब तुम्हारे माथ बह बार पाठ हुई ?

‘मैं परसून से हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई थीर मानने लबी । लेकिन बन्दिनि की तरह दरवाजे के पास धाकर खड़ी हो गई क्योंकि दरवाजे की बाहर की कुन्डी बन्द थी ।

‘फिर ?

‘उन्होंने जमहू-जगहू से मुझे मोच डाला । ऐसा लभा जैसे मैं किसी पशु के पल्ले पड़ गई हूँ । मैं बेहूष खबड़ा गई थी । अन्त में मैं बेसुच हो गई थीर मुझे कुछ होश नहीं रहा ।

×

×

×

जब दिन रामचरण दरवाजे की कुन्डी लपटा कर सीमा सेठ की को पत्नी बीछा के पास पहुँचा । उसने जब रात्रि का सेठ जी का सारा कार्यक्रम बीछा को सुना बिपा ।

बीछा सेठ जी की सारी करतूतों को तभी से जानने लगी थी जब से उसने सेठ जी के निकटस्थ सेवक इम रामचरण को पाँठ लिया था । सेठ जी के प्रति बीछा पहले से ही संदिग्धील थी । उनके रस-बंध धाकिर कहीं तक छिपे रहते । इनीलिए बीछा ने एक दिन रामचरण को अपने पास बुलाया और कहा ‘तुम मुझे सेठ जी का सारा हान बाल रोज दे बिपा करो । मैं तुम्हें बुपा करने में कमी पीछे नहीं रहूँगी ।’

जसू की पत्नी जैसे सेठ जी के कार्यक्रम कई बार निरिचल होते । रामचरण बीछा को एक-एक कर हान लफसील के साथ सुनाता । इस मुनामें-मुनामे में रामचरण सेठानी से काफी गुल बसा । बीछा का धारैल का सेठ जी की पति-बिधि सम्बन्धी छोटी से छोटी बात ही बह न छोड़े ।

एक दिन बिरजू धीर उसकी मुन्दर पत्नी नीब बसि इसी बानाम

में धाबे । सेठ जी ने परिचय की धारमिक मंजिल पार की । एक दिन घरसर पाकर सेठ जी ने बिरजू की पत्नी को छू लिया । बिरजू की पत्नी का विरोध करना तो रहा दूर, उसन धनाकागी जैसी कोई हरकत तक न की । फिर क्या था सेठ जी और बिरजू की पत्नी के सीने सम्पर्क का मुहुत भी जल्द ही सम्पन्न हो गया । उस समय रामचरन भी उपस्थित था ।

यह तथा इस तरह की घम्य घटनाओं की सारी कहानी रामचरन मौका पाकर बीणा को सुनाता । वर्णन के एक-एक घम्यव को उमार कर । बाबिबर इत्तान ने यहाँ तक पैर फैला बिए कि बीणा को इस राग में बोझा-बोझा मुक्त मिलने जमा ।

एक जमाना था जब पति से उपेक्षित इस पत्नी ने कूब-कूब धासू बहाये थे लेकिन अब यही बीणा इन कहानियों को सुनकर उत्तेजित हो जाती और लपककर रामचरन से क्लिपट जाती । फिर दोनों मिल कर सेठ जी को नीचा बिलाने और भाग कर कहीं जसे जाने के मन्सूबे बाधते ।

जम्नू और सेठ जी के मुकबमे की भी सारी बातें रामचरन ने बीणा को धाकर कह दी ।

इसी संदर्भ में बीणा ने सोचा—ये रात्र रात्र के किस्से कब तक चर्चेंगे । क्यों न मैं सेठ से सबा-मबा के लिए पीछा छुड़ा नूँ और इन पित्रे से मुक्त-मुक्त हो जाऊ । मेरा और रामचरन दोनों का छोटा सा संसार बस जामेबा जहाँ किसी भी प्रकार की उपेक्षा घवमान और बंधित नहीं हावे जहाँ धासुओं से मरी धाओं की भील हर्षोत्साह से साहच उठेगी ।

कोट के कटपरे में लड़ी होकर सेठ का सारा मंडा फोड़ कर दू की और नहूँकी बिस रात्र जगनू की पत्नी क माध यह बारबाठ हुई, उस रात्र सेठ जी अपने बंगसे पर नहीं थे । साब ही मैं ऐसे कई और मामलों से भी सरकार को घबगत कराऊँगी और कर्तूंगी कि सेठ जी ने मुक्त पर बहुत धायाचार बाये हैं ।

कहने के लिए मैं छिठ जी की पत्नी बखरव हूँ मगर सब पूछा जाय ता मैं उनके बंगस की केवल एक बन्दिनी बन कर रह रही हूँ। मैं धब छिठ जी से सदा-सदा के लिए बिच्छोर चाहती हूँ। मैं अपने सुखों को बीस पर लमा कर ही बड़ों पर भाई हूँ। मजबूर होकर ही मुझे यह कदम उठाना पड़ा।

×

×

×

अदालत का कमरा। जम्मू की पत्नी का मामला पेश था। छिठजी का बकील बहस कर रहा था "योर ऑनर छिठ जी पर जम्मू की पत्नी बिल्कुल झूठा इन्जाम लगा रही है। आप जानते हैं कि एक पत्नी अपने पति के बचाव के लिए क्या कुछ नहीं कर सकती? इन तिन्हाए-फ्फाए और रटे रटाये बयानों के आवरण में वह अपने पति की खोरी के इतने बड़े कैस को बिपा देना चाहती है।"

जम्मू का बकील— "जही योर ऑनर जम्मू की पत्नी के साथ जो इतना बड़ा मर्यादा हुआ है उसका बहरी मरामान होना ही चाहिए। छिठ जी ने अपनी खुरी नीयत के कारण जम्मू को कामपुर भेजा और अब उसकी पत्नी अदेसी रह गई तो ।"

जम्मू का बकील अभी अपनी बात पूरी कर भी न पाया था कि रामचरण के साथ बीछा ने अदालत के कमरे में प्रवेश किया और अपने बयान से मामले का उल्टा ही जलट दिया।

जब ने छिठ जी को कुमूरवार ठहराया। उन्हें समाजशोही माना गया था। रामचरण सहायक कुमूरवार ठहराया गया। जम्मू भी पूर्णतया होपमुक्त सिद्ध नहीं हो सका क्योंकि उसने कानून को हाथ में लेकर खोरी जैसा अंपराध किया था।

दौलत के बाब बीछा सीपी जम्मू की पत्नी के पास पहुँची और उसका हाथ अपने हाथ में धाम अदालत से बाहर धा गई।

तब से बीछा भीट जम्मू की पत्नी किराये का मकान लेकर एक साथ रहती हैं।



आवश्यकता नहीं। वह उनके लिए सहर से यहां घबलक प्रसन्न  
 कल्पनातीत नितान्त आश्चर्यजनक और मनमोहक वस्तुएं लायेगा। वह  
 उनके लिए न अथवा समझे नाम लोने के से रंज वाले टाप्पे की बड़ी  
 बानियां लाकर देगा जिन्हें वह एक साल से पाने की इच्छा प्रकट करती  
 आ रही थी। यदि हो सका और बमिये ने उसके मारे जान को बच  
 दिया होना और उससे अपना विम गमा हो वह भी जान से प्यारी  
 प्राणों की समझें थोरिया को हाथीबांत का बुझा लाकर देगा जिसे  
 वह पहनकर चारों ओर लिपट-लिपट लायेगी उसकी बाहों में भूम  
 भूम जायेगी।

सूर्य का घाबा भाग पश्चिमी घाकाघ की कोर में दूब चुबा था।  
 बाकी घाबा भूरी में तपाये लाल लोहे की तरह बमबमा रहा था लेकिन  
 उस भार दकने पर प्राणों को चमक मा बीच नहीं लगती थी एक  
 प्रकार का मुस ही मिलता था। नेतों की हरियाली में वह किसी पील  
 बरनाबता शीघ्र-बिहारिणी के धारकत मुल का स्मरण कराता था।  
 पूर्व की ओर से धम्बवार का ईश्वर बढ़ता जाता था रहा था। जीपु  
 धभी घाबा रास्ता ही नाप पामा था। अधिक धंभेरा पड़ने और रात  
 के गाड़े होने से पूर्व ही वह अपने गाँव पहुँच जाना चाहता था। मरक  
 वह चारों ओर देख भी लेता था। उसे धायब धपनी हठबर्नी पर  
 गुम्मा आ रहा था। वह स्वय की मर्स्ना करनी ममा। इस गुमताम  
 प्रदेय में उसने धकेले घाबा कर धच्छा नहीं किया यदि वह अपने  
 मिर्षों—बेबासिह और स्वर्णसिह का कहना मान लेता उनके साथ इन  
 ही बीच लौटता तो उनके लिए अधिक उचित मुरयिन और हितकर  
 रहता। उन्होंने तो बहुत रोका था धर्मन दिन और नई-नई चीजें दिखाने  
 का नायका किया था लेकिन वह किसी भी तरह स्वय को इनके लिए  
 लैयार नहीं कर सका था। वह पीप से पीप पर पहुँचकर बाट जोड़ती  
 थोरिया को लब बुझ बठा देना चाहता था सहर का आकर्षण बही भी  
 अम्भना विभाव घट्टामिकाएँ, बमबमानी हुई इ तनादी मोटर गाड़ियाँ

जगह-जगह पर रेडियो और लाउड स्पीकरों से निकलने वाला सुमधुर सम्मोहक संगीत—सब कुछ उसके सामने उड़स देना चाहता था।

वह सोचने लगा—इस सबको सुनकर गोरिया के विद्याल गणप पाठशाला से विस्फारित और अधिक विस्तृत अधिक गोबालाकार हो जायेंगे मीनों की कमलों को अधिक तामकर फूले पहराये बालों में उगनी गढ़ाकर पूछेगी— यह सब सब है ? झूठ बोलते हो। यह तो परलोक की बातें हैं बाली हटो। और उसे धीरे से ठेक देगी। जिसका मतलब होमा कि वह घाये बढ़कर उसे अपनी बाहों में कस ल और वह मना करती रहे ।

'कितने बाग्याम्हाई ? सासगढ़ बिल्ली दूर है —सुनकर उसकी तन्हा कण्ठ धामे की तरह निःशब्द टूट गई। बाबाई तरफ उसके साथ साथ उम से उम मिलाकर दो व्यक्ति और चल रहे थे। वे सब उसके साथ था मिले वह जान नहीं पाया। बोलों हट्टे-कट्टे बकि जवान थे। सिर पर गहरे सात रज्ज के चाकैं धरीर पर महीन मसमल के चोल जिनके भीतर से गुलाबी बनियानें झांक रही थीं व नीचे मौले तहमब पहन रखे थे। कपड़ों में एक चमक सी निकलती। कपड़े इतने बढ़िया कि उनमें से सरसराहट की ध्वनि उभरती थी।

दो बिचरा पमा —बीतू ने अपने कपड़ों की तरफ देखा। उस समुदाय हुआ कि पहनावे में वह उनसे कम नहीं कि उसके बस उतने ही बढ़िया उतने ही चमकदार, उतने ही रब-रंगीले हैं। सीना ठाककर वह तेज चाम से घागे बढ़ने लगा।

सह्यायिनों को अपने कल्पनिक सुख में बाबक समझकर उनक प्रति निर्मित विचार-शुद्ध को पकड़ कर वह पुन सोचने लगा। धात्र का मिनेमा विचारा बढ़िया था। इतनी जल्दी-जल्दी ये धात्रमी परदे पर कित प्रकार लड़े हो जाते थे और घाघस में कुछ धुन-धुनाकर कर्तब दिनाकर फिर चले जाते थे। एक दो धात्रमी नहीं मीड़ की मीड़ मुण्ड के मुण्ड बढ़ी-बढ़ी इमारणें घापी और एक और सरक जाती। एक के बाब दूसरी घायब कारे पीछे से बोरी नीचता था रहा था और वह मोटों की बर्षा

उसने तुरन्त मुककर अपनी जे की तरफ देखा। उसे सम्भोष हुआ और फिर धार्मिक बतने सवा उसी ठेक बाल में यन्त्री में बहना की उड़ान में लोया हुआ।

उन्होंने जीतु से पुनः प्रश्न किया 'जवान ! तुम्हारे पाँव में बेटी कंधी है ?' हमारे यहाँ तो घबकी बार कमाद न जमान कर दिया। जिनक पास एक भी बीगा बमोंन थी वह तो सखपती हुआ समसो। सर बार में छरम क्या खोला है। दोनों राहगीर देन-देन प्रकाशिए उससे हल-मल बढ़ान उसका ध्यान अपनी धीर आकर्षित करने न उससे कुछ न कुछ कहसवाने का प्रयत्न परियम कर रहे थ। लेकिन जीतुनिह भी एक था जो न बायी तरफ के ईस के नेतों से सजब था, न बायी ओर सहसहाती बेटी के हरे सोने का उसके लिए मूल्य था न कभी भूरी नङ्क के नमानान्तर बहने बासी नहर उसका उबलापन किनारों पर प्रमुल भर पास की लोबी सुपम्ब था न सहयाधियों की बातों में रन वह ना। अपने तक ही अपने पाँव के बर में बैठी सोरिया तक सीमित था। बहना का मूब ज्यों-ज्यों बस पकड़ता उसमें वह उठना ही बिभीर होता जाना। उसके लिये परि कुछ भी मरुत्पणुण था ही अपनी नबेनी बरबाली को शहर के धारधर्मिबन कर देने वाले उपकरणों का सम्पूर्ण बिबरण मुनागे था। मुबत ही धारधर्म उसकी धाँकों में समाया जाता जायेगा। मुन्बर बस्तुधर्मों का धर्णन मननशील बना देना। उन समय की उसकी जुता धालों में गड़ी हुई जैवनी कोहनी तक गरक धाया हुआ हाथीरान का जुड़ा उनकी बरोनियों का ललाच यह सब दिजना मुन्बर होया।

बह रन सब बातों की मूठ मानेगी बहेवी—वह किजना बानुनी हो गया है। वह उसे सब धहर नहीं जाने देवी। जिनकी बाने लीब पया है। मैं उसे मनाऊगा कि वह नब सच है। सी बिस्वा सच। तब वह पचनकर कहेगी कि वह भी उसके नाच एक बार शहर जायेगी। उन समय धूधिया रंग की मोहरी पर देन हुनी बानी देवनी मलबार

मुनहरे रंग की बुन्दो बाहों व कफों पर जरी का काम की हुई कमीज पहनेगी—जिन्हें उसने घासी पर पहिना या धौर अब बड़े बतन स घरे हुए हैं। वह पीछे होगी वह घागे। जसते समय पीरों के गठने जो बज्ये ती राहगीर देख्ये सड़क पर बसते धोग देख्ये वह सिनेमा जायेगी वहाँ मोटों की बर्षा ।

धौर उसका हाथ फिर जेब तक गया। उसने टटोसकर महसूस किया धौर फिर सीमा तान कर धौर सीमा से घागे बड़ने सगा कि रास्ते पर पड़े पत्थर से उसका पांव टकरा गया। ध्याबा चाट तो नहीं घाई है देखने के लिए नीचे मुका ही जा कि उसकी बगल में एक मुकीली नीब घुस गयी। वह सम्भल कर सीमा भी नहीं हो पाया जा कि एक दूसरा छुरा उसके धीने में घा बंमा। वह एक नीब के साथ बही डेर हो यथा उसकी पोसेदार जाठी पास ही गिर घयी व कन्धे पर से सरककर मठी एक धौर जा पिरि।

महयानियों ने धंधेरे में एक दूसरे की धौर देखकर धपनी-धपनी सफलता पर धाँधों ही धाँधों मुस्कणकर एक दूसरे को बघाई थी। जोनी हो ने मुक कर उसकी बेब में मरे कड़कते मोटों की निकाला धौर इस कामासनापी में अब धचानक ही बँट्टी का तीव्र प्रकास उन मोटों पर पड़ा तो वे सहम घये। उनमें से एक बिस्ताया “धरे से तो नकली मोट हैं, एक-एक घाने घाने जो बाजार में बिकते हैं।





●मनोहर बसा

## और मान वह गया

बबलू ने आज कोई पहली बार ही बूब के रूप में ठोकर नहीं मारी थी। पहले भी कई बार रूप तक उठा कर फेंक चुका है। इन बारों की पुनरावृत्ति इसीलिए होती या रही है कि शेखर बबलू को हर बिंदु पूरी कर देता है। और उमिन को यह बात नहीं मुहाठी। शेखर का बबलू के प्रति यह अत्याधिक प्यार उसे बुरा लगता है। इसका मतलब यह नहीं कि उमिन के हृदय में ममता न हो या कि बूब क प्रति प्यार न हो। धम कुछ है पर उनके ज्यादातर सारे बान्हठ को वह किसी भी तरह स्वीकार नहीं कर पाती।

आज जब बबलू ने रूप को ठोकर मार कर बूब फेंका दिया और गुस्म में धाकर जब प्लेट से डबलरोटी काटन की छुरी उठाकर उमिन पर फेंक दी तो उमिन का हाथ उठ गया। एक ही पल में बबलू की हिलकी बंद गई।

जया बात है उमिन' बाबकूम से निबसते हुए शेखर से दूखा।

उमिन कुछ नहीं बाली। बृपबाप डबलरोटी के टुकड़े पर लकड़न लगाती रही। शेखर ने बेग्रा-बबलू फेंके हुए बूब में ही नोट रखा है। हाथ मार-मार कर बिलना रहा है। तो शेखर जिसे बबलू का जरा सा राजा भी अलरता है ममा कैंसे चुप रह जाठा।

उमिन ! तुम कैसी मां हो ! तुम्हारे हृदय में बच्चे के प्रति जरा भी प्यार नहीं। इस बच्चों से माछे हुये धर्म नहीं घाली तुम्हें ?" बबलू को पुचकारते हुये शेखर बोला "धर तुम्हारे हाथ रखने ही मचमने हैं तो बीबारों पर क्यों नहीं जाताओ।

‘मगर मैंने इसे कहा क्या है ? क्या पुच्छिमे ता ? उमिस धीरे से बोली-इस डर से कि कहीं सुबह-सुबह तकरार न हो जाय । बबनू खेबर की मोह में घाकर धीर जोर से रोने लगा । शेरार ने बबनू के पास पहुँचते हुये पूछा ‘क्या हुआ बेटा ? मम्मी ने मारा ।’

‘मम्मी’ ‘बिस्फुट’ नहीं बेटी सिसकियां भरते हुये बबनू ने माँ की चिकामत की ।

उमिस बड़ी गम्भी भावत है तुम्हारी । परा-सी चीज के लिये उसे सुबह-सुबह क्या दिया । बच्चा है इसी उम्र में नहीं खायमा लियेगा तो फिर क्या खाएगा ? तुम्हारे हृदय में ममता तो सेस मात्र भी नहीं है उमिस । पता नहीं क्यों ईश्वर ने तुम्हें माँ बनने का सोभाम्य दे दिया । भावाज को भीमें करता हुआ खेबर बोला ।

‘मैंने कौन से इसक बात कर लिये हैं । कुछ तुनकटी हुई बोली उमिस । यही तो कहा था कि पहल मंजन करतो एक डूमी बिस्फुट । कोई बुरी बात कही थी मैंने ?’

क्या हा जाता मगर भाव बिना मंजन लिये बूब पी सेता तो ? बच्चा ही पी है । खेबर के कवन में तेजी घा गई । सच बात ता यह है उमिस कि न तो तुम्हें बच्चा रखना ही आता है धीर न तुम्हारे हृदय में बच्चे के प्रति साहजुतार ही है ।

बस । आपक यह प्यार ही किमी दिन इसक लिये घमिछाप बन जायगा । आप हमेशा उसकी जिद पूरी कर देते हैं धीर इसीलिए वह जिही धीर उखण्ड होना था रहा है । बच्चे की जिद पूरी करना भी कोई प्यार करने का ढंग है ?

उमिस न शेरार व बबनू की धीर जाय व नाशता बड़ा दिया । बबनू ने फिर प्लेट में ठोकर मार दी— मैं मम्मी के हाव की व— नहीं पीऊँगा ।

उमिल ने बिजरा हुआ नास्ता, प्लेट में डालते हुये खेबर की तरफ देखा खेबर उमिल से घाल नहीं मिसा सका। नजरें झुक गई। ज़मीन पर झुकते ही नजर उमिल के हाथ पर गई। कमाई के पाप ने जून बह रहा था। बच्चे के घासु से इतित होने वाला खेबर, बली का जून बेल कर भी स्तब्ध रह गया। उस जून नरे घोंरे घोंरे कोमल हाथ को पकड़ कर उमिल की घोंर बेलते हुके बड़ी कोमलता से पूछा क्या हुआ उमिल ?

बबलू को प्यार न करने की सजा। उमिल की भीषी पलकों से दो घासु बुझक पड़े। खेबर कुछ बोल न सका। उठ कर चम दिया ।

इतिफाक की बात की कि घाम को जब खेबर बफ़्ठर से बर लोटा तो फिर बबलू रोता हुआ मिसा। खेबर बुबह की बात से सुन्न था। बिन भर उलका उदासी में ही भीता था। फिर घाटे ही बबलू का रोना मिसा। तो, लीबते हुये खेबर ने उमिल को घाबाब की घोंर बोसा

“क्या बात है उमिल ? तुमसे बबलू नहीं उमलता तो उसे बहूर क्यों नहीं बै देती ? या किसी घनाघालक में क्यों नहीं बेज देती ? खेबर गुस्से में फड़े का प्ला का घाबिर इमने तुम्हारा क्या बिनाहा है ? क्यों इम लम्बी मो जाल के पीछे पड़ी हुई हो ?

“घापने मेरी भी बात मुन कर बहू बातें कही होती तो कोई बात की। समका रोगा तो घापको बिबता है घोंर में मन ही मन रो रो कर मरी का रही हैं, बहू घापको नहीं बिबता। एक बिन भर पर रह कर देखें तो लालसे को करतूनें माजूम पड़े।”

“क्या किसी पर घुरिया बलाठा है ? खोंरी करता है ? घाबिर क्या कबू करता है ? खेबर गुस्से में उबल पड़ा ‘बब्बा है, यू ही लड़-लपड़ भैता होया। खोंर ना बब्बा मां-बाप के घापे हठ नहीं करता।

“धरर वही एक बात हो तो बर्दास्त की जा सकती है। पर दिन भर कमी इसे थोड़ा उसे छोड़ा। इसे मारा उसे पीना। किसी का कुछ खीन कर का गया तो किसी का कुछ बिबेहर दिया। यह सब बातें भी घर में हों तो सहन करम्। पर झड़ोमी-पड़ोमी कब रोख रोख के मुकसान धीर मार-पीट सहन करेंगे? सेखर चुपचाप सुन रहा था। उमिल कहे जा रही थी, भापको दफ्तर में कोई कुछ कहने नहीं आता। सब सिबायते धीर भसा-बुरा मुसे सुनना पड़ता है। कोई हो माजी नी देता है, तो सहन करना पड़ता है।” कुछ बेर ठहरी उमिल फिर धीरे-धीरे दांति से बोली—भाज ही राकेस की गौरी खीन कर का गया। दोनों लड़ पड़े, तो बहु राकेस की नमीज फाड़ गया। इस मंहवाई के बमाने में भसा कौन महन करेगा रोख-रोख के मुकमान? राकेस की मां ने बीच गली में बड़े होकर नासिबां ही—कि बच्चे सम्भलते नहीं और बन-बन कर छोड़ देते हैं। खिला-खिला कर सोइ कर रसा है छोरे को। हमारे बच्चे कमजीर हैं तो क्या पिटने को हैं? अब भाप ही बठाइये—कौम मां अपने बच्चे को बकत—बकत बन-बन के मुह जाने देना पसंद करती है? पर क्या करू, सब मेरी किस्मत की बात है। धीर उमिल की धांस से फिर भांसू टपक पड़े। पर बहु कहे जा रही थी

“साइ-प्यार तो सभी करते हैं पर साइ-प्यार के भी बंद होते हैं। कौम मां अपने ही बच्चे को प्यार नहीं करती किन्तु भापकी ती भपरी ही दृष्टि है। सोय जो मन में घांती है कह जाते हैं—मसा कब तक चुप रहा जा सकता है और फिर भी बोप का मांडा बैचारी मां पर ही तो फूटता है—कि मां ने बिबाइ दिया कुछ सिबाया नहीं। बीसी मां बीसे बच्चे। प्रापको कोई कहने नहीं आता। और भाप भी मुस ही पर बरसने लगते हैं। कहते कहते उमिल छूट पड़ी।

बबम् की जिद धीर उह्यता बढ़ती ही गई और उभर पति परनी के बीच बरत का सेकर उकरारे। इसी से पति-मस्ती के बीच एक हुस्की सी बीमार बगठी जा रही थी। दोनों एक दूसरे से दूर-दूर

लिचे खिचे रहने लगे । उमिल ने लाज प्रयत्न किये । बबनू को प्यार से समझाया डांटा बमकावा मारापीटा पर वह पिता की सह पाकर विनम्रता ही बना । पति के स्नेह से बंचित रह कर उमिल सुनी-सुनी, लोई-लोई-सी रहने लगी ।

हजर शेखर की कुछ प्रकृति ही ऐसी हो गई कि उमिल की हर बात में त्रुटियाँ ही निकालता । बात के—बात डांट देता । उमिल मोन रहती । बस उसकी सहन-शीलता ही बात बनाये हुए थी ।

एक दिन तीसरे पहर तीनों बाब पीने बैठे । उमिल ने अपना प्याला बना कर केतली खर की घोर बढ़ा दी । शेखर ने स्वयं अपने ब बबनू के लिए चाय बनासी । बबनू फिर भी खामोश बैठा रहा । चाय-नापते के हाथ तक नहीं लगाया । उमिल ने समझा मैंने पहले केतली क हाथ लगा दिया शायद हठी लिये बबनू चाय नहीं पी रहा है । वह बड़े स्नेह घोर प्यार से बोली— पीतो बेटे चाय ।

बबनू फिर भी खामोश बैठा रहा । इस बार उमिल जरा तेजी से बोली— पीता क्यों नहीं है चाय ? अब क्या बसर रह गई ?

बिस्फुट घोर मूँहा मुँह फुलाये बबनू ने शेखर की घोर देखते हुए कहा ।

‘उमिल बिस्फुट घोर बो इसे’ —शेखर प्यार से बबनू के सलाह पर बिकरी रातों को सवारता हुआ बोला ।

“क्या ये उह बिस्फुट कम है ?” उमिल ने व्यंग्य से पूछा ।

तो घोर वे तो क्या हो चायमा ? वह कोई चायमा पीई ही । लासी जिर है । शेखर ने समझाते हुए कहा ।

लासी जिर है ? तो उसकी जिर क्यों पूरी करते हैं चाय ? समझ में नहीं आता उसकी हर जिर पूरी करके उसे जिरि क्यों बनाये जा रहे हैं ?

तुम तो क्यामक्याह छोटी-छोटी बातों पर बहुत करने बैठ जाती हो उमिल मैं तुमने बच्चे पालने का कोई 'डिप्लोमा' पास कर रखा हो ।

'डिप्लोमा' पास करने की जरूरत मर्दों को है । हम स्त्रियों को नहीं । हम तो ईश्वर के घर से ही सीखी-सिखारी घाती हैं । उमिल ने बीरे से कहा । बहुत करने को उसका मन नहीं था ।

निकुंजर सेहर सट से बोला, अच्छा अच्छा उस बिस्कुट हो । उसकी चाय ठंडी हा रही है ।

घौर बिस्कुट नहीं है । खत्म हो गये । अपनी चाय समाप्त कर उठते हुए उमिल ने उत्तर दिया ।

'उमिल मुझे यह बात बिस्कुट पसन्द नहीं है । क्या हो बिस्कुट के पीछे, ससे बटे भर रखा कर तुम्हारा मन खान्त हो जायगा ? उसे खता-खता कर खिलाओनी तो क्या प्रेम सयेना उसक ? सेहर का पुस्ता कुछ बड़ बुका वा उमिल को प्रपन ही काम में व्यस्त घौर मीन देख सेहर घौर अधिक सस्ता उठा । "इसे तिस-तिस खताने से अच्छा है उमिल बहर दे हो इसे । ठाकि दूसरी माँ के पेट से खत्म सकर उस माँ का तो प्यार पा सकेया बह । कोई छिलेसी माँ भी ऐस व्यवहार नहीं करती । सब बच्चों की अपनी इच्छाप होती है । सब अच्छा खाना घौर अच्छा पहनना चाहते हैं ।

उमिल ने बह बिस्कुट बामा नाच का बर्तन खाने लाकर रख दिया । सममें थोड़ा-सा चुप या बस ।

मर उमिल की बारी थी । सेहर चुप था ।

उमिल अपने बेहरे पर बिलरी बटों को समाप्तो हुई बोली 'घापकी तो घाबत ही गई है आजकल छोटी-सी बात का बर्तनड़ बना बैठे हैं । बबसू मेरे भी कुछ सपता है । ऐसी कौन माँ होनी वा अपने

कोख से बच्चे के साथ सोत का सा ब्यबहार करेगी । उमिल क हृदय में खबर के ये सन्ध जुम गए थे । इसकी एक ठंढ-सी सपी कि खेबर ये जरा-सी बात क पीछे मुझे इलगा हीन समस्त लिया । उसका पता भर आया । धाँसों से धाँसू टपक पड़े । कस्तुर मीगी हुई आबाज में उमिल बोली— 'खेबर ! तुम्हे क्या मासूम कि इसकी उम्ही आबतों के कारण मुझे इस दिन मुकेश की बर्ब है' पार्टी पर कितना सञ्चित होगा पड़ा था । जेट म रबी बीजों से तो इसकी तृप्ति ही नहीं होती । आना मुक करने से पहले ही 'मीर लूँगा की रट जमा बी ! मिसेज गुप्ता के पीढ़ो-बी मिठई मीर रज बी ती बोला—'बिस्कुट मीर लूँगा मिसेज लमा मीर मिसेज माधुर बपीरह मुंह के समाज लबा-लपा कर हुँव रही बी । मीर जब इसे बिस्कुट मिल पये, तो बीसे चर पर साता है, बीसे ही सबको भाव में निबो दिया मीर इससे की तरह चाटने लमा । इसकी एक भी ता भावत सम्झी जाती हो तो कहीं । टोंकी की जेट मरी रबी बी मुट्टी भर कर बेब में डाल सी । बहुर कीचिप की पर जिब के पक्के बेटे ने बाप की ही भाग रबी ।

'उमिल' । खेबर सुसै में बीजा । सारे बीपों को मुस पर थोप कर अपने भापको बचाने की कीचिप मय करो । यह क्यों नहीं कहती कि तुम्हें बच्चे पालना ही नहीं आता । मीर यह सब तुम्हारी ही कमजोरी है ।

बी' हाँ सारा थोप समटे अपने ही पर भावे पैस उमिल को भी गुस्ता था क्या—'यह क्यों नहीं कहते कि यह सब भाप ही की सीख का फल है । सायर पूने नहीं होने भाप जब बबसू को यह कहा जाता था—'मुँह बनाती हुई उमिल बोली—'देखो ती बेटे । मम्मी धमी तक पापा का आना क्यों नहीं लाई ? जाओ मम्मी का नाम पबड़ कर कहो—कि पापा था मये है, आना मायो कमी—'मम्मी ने मारा बेटे ? जो यह जाहू तुम भी लगा हो वो चार मम्मी को बबसू मम्मी से पूछो ती हमारे कोट पर बटन क्यों नहीं टकि-

में कहती मुम गई । तो बबसू की हुनम मिमता कि— बाघो बेटे हमारी तरफ से तुम उजा बो मन्पी को । चार बख उठ बैठ करबाघो प्रीर उसकी सब बिद को पूरा करबामा जाता । हमी का गतीबा है कि बाहे कहीं भी बैठी होऊँ बाहे चार प्रीरों ही पास क्यों न बैठो हों—इसकी बात न मानने पर सटासट मारने बैठ जाता है यह सब किसने सिखाया ? मैंने ?”

अच्छ ! अच्छा ! बकवास बन्द करो । ऐसी सस्ती-सुस्ती बातें करते प्रीर मुम पर बीप मंडते सम नहीं प्राती तुम्हें ? अब देखो तब बच्चे को कौसती रहती हो । भागे से कमी कोया तो मुम बीसा हुए नहीं होगा ?

ममी ही कौन कुछ अछाई हो रही है । जिनकी कसह बन गई है । बीना तो ममी ही हुमर हो मया है । अब प्रीर क्या होगा बाफी है ? माँओं से टपाटप प्रासू गिराठी हुई बोली उमिल 'ऊपर से हर बाबाम की पुत्ती सकैब प्रीर मबुर दिखाई देती है, पर किस पुत्ती का अन्तर अहर या कड़ुवा निकल जायेगा बीन जाने ? यही हाल ममी का है ऊपर से सब सफेद प्रीर मोसे दीबते हैं पर किसका हुरप कड़ुवा अहर पीका प्रीर अन्त के प्रावेष्ट में उमिल निमकते हुए कहे जा रही बी ।

“उमिल ! ” खेहर बुस्से में धिलता उठा । पत्नी का इतना तीखा प्रावेष्ट खेहर नहीं सह सका । 'तुम्हें अपर मेरे साथ रहने में विकल है तुम सुखी नहीं हो तो या सकती हो प्राब ही । ममी । 'खेहर कोब से कपिता हुमा बोला ।

उमिल की भी सहन-शक्ति अबाब बे गई बह तड़प सठी । 'अपर पों ही पर से निकलना या तो पत्ने बाँध कर क्यों लामे के पहने ? क्यों हाल पकड़ा या मेरा ? अवने साथ निबाह नहीं सकते तो पर बात अचूरी ही रह गई । प्रीर प्रीर बुस्से में पावल खेहर का हाब उठ गया । 'बती बाघो मही से ।'



“बहुत धन्य ! सिस्कियी भरती थोट लये धान को सहलायी हुई उमिल सिहरती हुई कुनरे कमरे में बस ही ।

उमिल को अपनी बहन के मही घामे छ. सात दिन हो गये थे पर जिस दिन से वह घोंबर व बबलू से मिलन हुई है एक दिन भी धाम्य नहीं रह सकी । कहने को तो कोई कुछ न था । लामे-मीने उठने-बैठने का सब सुख था । पर उमिल को धारमा तो जैसे भटक रही थी लभी कुछ सुना-सा लपटा लने । प्रवरन करने पर भी वह अपनी बहन के बर्षों से भी नहीं बहला सकी । धाम कर सिमट कर वह एकान्त की ही टोह में रहती थीर अपने अतीत के सुखद दिनों की स्मृति में धींच बहामा करती ।

धीर सोचती रहती—मुझे उनके बहे का इतना पुरसा नहीं करना चाहिए था । मैं क्यों बली आई मही ? धन्य नहीं किमा मीने अपना पर छोड़ कर । मीने स्वयं अपनी बदनामी धीर कमजोरी कुमिका को बाहिर कर ली । पर सारी पलठी मेरी अपनी ही ली नहीं है । विचार करबट बबलू—उम्हें भी मुझे इस तरह नहीं कहना चाहिए था । धीर प्रगर में हठ कर, गुस्से में लोभे-समझे बिना धा ही रही थी तो क्या के रोक नहीं सकते थे ? मना नहीं सकते थे ? उमिला सोचती रहती—जममें धईरार ने बर कर रखा है । लेकिन मैं भी तो बर लीड़कर बसी धाई । क्या यह धईरार नहीं ? कमी वह सम्पूर्णत अपने धाएको लोपी मान लेनी तो कमी मन करबटो लेने लपठा पर लैन कहा ।

किर सोचती मेरा कुमुर इतना हो ली था कि मैं उन्हें बैलम की तरह लड़ावड़ बबाव बैठी रही । धीर बर लीड कर लमी धाई । अधिक गुमुर तो उम्हीं का है । वे क्यों बलत-बलत मुझे उंड देते । मेरे हर काम में मीन-मेज निकालते । बर्षों व बर की ईख भास का काम धीर लताइरामिल हम लिनयो का है मरबों का नहीं ।

मारी-सारी सब एक के बाद एक, इमी तरह कई विचार धाठे रहे

धीर उमिल लड़पती रही। दोस्तर का घमस्त प्रेम धीर विवाह के बाद सुखर बपों की याद धाते ही उमका मन पूरने मयना। प्रस्तन उठने मगतै—क्या धर उन्हे मससे प्रेम नहीं रहा? क्या मैं मचमुच उनके साथक नहीं रही? “वे मुझे मनाने क्यों नहीं धाये? जैसे तो जीबी धीर जीजाबी स मिलनै हूर दूसरे नीमरे दिन बस धाते थे। पर मुझे धाये मात दिन हो मय एक बार नी नहीं धाये। क्या बबनू को भी मेरी याद नहीं धाई? “बहू नी भूम क्या” धीर ऐसे ही बिचारों में उमिल लोई रहनी। इसी तरह रात बीत जाती सबेरा हो जाता।

एक दिन—उमिल को डाक से एक पत्र मिला। धंका धांपना धीर कौमुहल के बीच बकड़कते हृदय से जस्पी पत्र खोला कांपते हुए मन मे बहू पढ़ गई—

प्रिय उमिल

त्रिस दिन से तुम यर् हो मैं परेखान हूँ—बबनू के धारे! बहू कई चीजें लाइ फोड़ चुका है। तुम यर्, उसके दूसरे दिन बोला—“पापा मम्मी कहाँ यर् है? कब धायेगी मम्मी ?

“मम्मी नहीं धायेगी धर! मैंने बांटते हुए कहा।

“क्यों नहीं धाएगी पापा?” बबनू ने मूरत बियाड़ते हुए पूछा— मेरे मुँह में रोटी का कोरा धा। मैं बोल नहीं पाया। तो धपन नन्हें नन्हें हाथों से मेरा मुँह धपनी धार मोड़ते हुए बोला—“बलाधी पापा मम्मी कहाँ यर् है? क्यों यर् है?

“इमलिए कि तुम मम्मी का कहना नहीं मानते। उसे परेखान करते हो। जिर करते हा। धुरे लड़के हो। मम्मी को मारते हो।

बबनू चुप रहा। पर उदास हो गया।

फिर एक-दो बार जिर की उसने तो मैंने कहा—“बस! ऐस जिर करोगे तो मम्मी कभी नहीं धायेगी। मैं धाब तुम्हारी मम्मी स

घाकर कहूँ मा—छि बबलू धामी नी जिब करता है बुरा लड़का है ।”

“कहाँ है मम्मी ? मुझे भी ले जाओ पापा ? बबलू कबे पले से बोसा । उसकी छाँचें भर घाई थीं । मैंने कह दिया— नहीं मम्मी तुमसे नहीं मिलेगी । मम्मी जिही बेटे को नहीं रखता चाहती । वह अपने लिए छोटा-सा प्रणवा बबलू लेने गई है । उसे रखेगी ।

तो एक बस रो पड़ा बबलू । “नहीं पापा बुरा बबलू मत सामो । मम्मी के पास ले जाओ पापा । मैं मम्मी का कहना मानूँ पापा । मम्मी को बुलाओ । धीरे मेरे बिपट कर रोने लगा ।

सब कहीं उजिल मेरी भी छाँचें भर घाई । तुम्हारे बिना बबलू ही दुसी नहीं तुपा मेरा भी सब कुछ सूना धीरे अस्तम्यस्त हो गया है ।

तुम जली धामी उजिल । हम दोनों अपने किए की जमा माँग लेते हैं । बबलू भी सब जिब नहीं करेगा सब कहता हूँ ।

बबलू ने एक दिन बुस्से में घाकर फूलदान मेरे छिर पर ले माघ बा । पट्टियाँ बंधी हुई हैं । इसीलिए स्वयं न घाकर अपने ‘पत्र बूत’ को भेजा है ! जली धाघो मेरी उजिल ! मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठा हूँ ! तुम्हें बबलू की खोज है उजिल—जली धाघो धाज

तुम्हारा—खेतर

धीरे उजिल का सारा मान लख भर में बह गया

## तीन कोर्ना वाला मन

घभी-घभी उसके राजन मया नये ये । बाणी सोचती है राजन मया कैसे बोलते हैं । उनके जाने के बाद भी बहुत देर तक उनके कमरे में घूमते रहते हैं ।

बाणी कहती है—मनमें—राजन मया कैसे भीरे से कमरे में घाते हैं । मांसे बाबी से प्रणाम करते हैं कमरे के बीचोबीच मुझ्हा बिसकाकर बैठते हैं फिर ध्यानक लड़ हो जाते हैं । फिर एक-एक कम पर ओर बैठे हुए घुटनों को कुछ मोड़कर झुकते हुए, मुस्कराती घाबों को जमकाया-सा नजरों में घोर बाबी पर दास कर बीवार पर टंगी कैसेडर की घोर बड़ जाठ हैं । फिर गौर से बड़े-बड़े हुरफों को भी ऐसे देखकर जैसे भीटियों से हों ओर से पड़कर कहते हैं—  
‘ओ हो घाज घमक तारीख है । मैं तो भूस ही पया पा ।

राजन मया के जाने के बाद भी जाने क्यों समझा है जैसे वह घभी-घभी घपनी घडी घलमस्त स्टेशन में मुझ्हा से उठकर कैसेडर की घोर बड़ रहे हैं बड़ रहे हैं घट् । घाते हैं बोलते हैं कहती या रही हूँ हूँ मैं फितनी बुरी हूँ ईडियट । ये घाते हैं बीसते हैं, जसते हैं । घोर इडी तरह बाणी सोचती ही जसती या रही बी । मन ही मन घपने से बातालाप करती ही या रही बी । मगर जाने क्यों बार-बार उसकी नजरें ठाक में रखे मयबान बी के चित्र पर घटक जाती बी । रोज सार्थ मां या बाबी या वह इन मयबान बी की घारती करती हैं । मगर जाने क्यों घाज वह उन्हें एकटक देखती ही जसती या रही बी जैसे वे घपरिचित हों कि घते घारधर्य है कि इनके बिन बाप घते यह कैसे पया जसा ।

धनी धनी राजन भैया धान्ये वे धीर कह रहे थे 'हूँ मां न;  
 है राजन भैया देवता धान्यो हूँ । धान्यधन के जमाने में ऐसा धान्य  
 माकों में मिलना मुश्किल है । माकों में क्या करोड़ों में है ।  
 बाणी मे इस तरह से बूढ़ बनावा कि कोई बैल सेता तो समझता  
 उसे बिड़दा रही है । मां कहती हैं ताना जी बड़ते ये उन्होने ।  
 नर्ब की हेडमास्टरी म कमी ऐसा सड़का नहीं देता है । एक ।  
 की बाण है गां बतताती है । तब मैं छु, बय की भी, नग्ही-सी मुड़ि  
 भी । हूँ हूँ मां तो धनी भी मुझे मुड़िया ही कहती है । मगर ।  
 भी तो धुमरे सोचों क सामने कितनी लाज लगती है । धपने न  
 भैया के सामने भी कितनी धर्म धातो है । मां कितना बड़ती है तब  
 पानी का गिलास उनके सामने लाकर डगहूँ नहीं दे पाती । बघ फुरती  
 बरबाजे के पाग पड़ी तिराई पर रखकर भाग जाती हूँ धीर धर्म  
 बाहर सिद्धी की धाड़ में कड़ी मुतली रहती हूँ राजन भैया  
 मच्छेदार बाते । राजन भैया बोसते बीसे है । बोसते-बासते ही जोद  
 धापर ह्वाब-पाब बसाने लगते हैं कड़े भी हो पाते हैं कधी-कभी ।  
 मेम के मँधान में धड़े हूँ । हमारे राजन भैया कलिय के वेस्ट जिनसि  
 में है । धामराज्य बँगियन । हाँ 'मधी टीमों में उनका म  
 धाता है । जी बड़ती है राजन भैया स्मून के बिनो के ही म  
 सेमते है 'उन बिनो जब मां गानोबी के मरुं यवी वी मैं जब छ-  
 की भी राजन भैया धान्यो मे पड़ते थे । हम जोप निक्कर हो  
 गये थे धीर दो पुशों के मां धीर मीनी को छिड़ दिया था । दुपे  
 ताना जी से भी भीनाजोरी की भी 'दुसरे दिन राजन भैया को  
 लया था ती जमी बदन धामूम किया कि मुझे बोज मे । धीर है  
 दुपे को पड़क कर साथे के तानाजी के बाण । उनसे धीर मां मं  
 सं मांधी मांयो वी उन पुशों के । कभी पिलाई की वी राजन भैया  
 बनकी ।

धपने धाप ही बाणी की मुठियां बँग यवी थीं । वह इमर-उ  
 नजर कर लेती थी । फिर भी बरबस उसकी नजर धमधान जी  
 का घटवती थी वह धपने में कोई मोचती था रही थी ।

धमी-धमी रातन भैया घाये थे । हूण्डे में दो बार के जकर घाते हैं हमारे यहाँ । देखो यह भी 'धाम्न ही है कि वो इसी मगर में एम० एम० कर रहे हैं । पिछले तीन वर्षों में उन्होंने कितनी मजदूरी की है हवापी । बारी बहरी है ऐमा ति-स्त्राकी और त्पोगी लड़का उन्होंने कमी मही रेखा । धीरठों की धीर ता कमी मगर उठकर गोर से बेबता ही नहीं । बाउं करना रहेया खूब खूब लक्ष्मिदार मगर पावें बीबार पर या पावों पर ही घटती रहेयी । कमी मुहम्मने की मी कोई बहू-बेटी बीटी होमी तो वह बड़े मजदूरी से मौन घातर बैठ बावना । बावने के लिए मजदूर करोये कोई बर्षा सेहोगे तो बोलना शुरू कर देया । परन्तु उन तरफ मूस से मी नहीं ताकेगा बिघर वह लक्ष्मी बीटी होयी ।

बारी कहती है, जब से पिताजी का स्वर्णवास हुआ है किसी पुत्रप को मजदूरी ही नहीं रहा है हमें । बाहर का काम कोई देख ही नहीं पाया । मां भी क्या देखे ! कितना देखे ! बाबाजी बाहर रहते हैं कमलत हैं । पर बर्ष के लिए कुछ रुपया भेजते हैं । पिताजी को मुजरे कितने शाप हो बने बार साल हो गये बार साल हो गये मैं जब दस साल का थी । धमी मी याद है मुझे पिताजी की बीमार यकल ।

बां ने कितने कष्ट उठाये हैं उन पिछले साल-घाठ वर्षों म । तीन वर्ष तक तो पिताजी ही बीमार रहे ।

धीर एकाएक ही बाली का हूबय मां के लिए कल्याण स मर पाया । पिताजी की याद घाते ही वह कुछ रघांसी हो मयी । पर मां के संकल्प धीर शाहन की याद ने उसे धाम्नी भी जाने नहीं दिए कुछ बन को । वह सम्पूर्णत जो गयी । वह मूस मयी कि वह क्या मोच रही थी संवेरी पल्लियों में रास्ता नूले मुसाफिर की तरह मन-ही-मन उस बिचार का धून टटोमती रही थी जो धमी-धमी सोचते-मोचते उससे घूट गया था । जो वह सोच रही थी वह उसे धाम्नि दे रहा

पा सुनि है रहा था 'बहु विचार फिर से पुहराना चाहती थी बहु कल्पना का धारण से रही थी । उसे समझी जाती थी आना चाह रही थी वह ।

हो, माय मायी 'भीर यह माय उसे मयदान का विष देकर मायी कि वह राजन जैसा भी बार्ते तोच रही थी 'हो राजन प्रिया एक दिन अचानक बाजार में मिल गये थे । जो यहाँ होस्टल में रहते हैं । किसी तरह समय निकालकर हफ्ते में दो दिन घाते हैं । बाजार का धारा काम करते हैं । माँ के लिए जाने कहा कहाँ से कपड़े सोने के लिए से घाते हैं । काढ़ने-बनने का काम से घाते हैं । कहते हैं हाथ का कोई काम हुआ नहीं । हुआ है निटल्ला रहता भीर दूसरे की कमाई खाना । वे तो मुझे भी पढ़ाकर लीकरी करवाने की कहते हैं । पहले तो दादी जी ऐसी बात हरपिच पसन्द नहीं करती पर राजन मया की तीन बवों की लयातार सेवा देखकर वे उनकी बात टालने की हिम्मत नहीं जुटा पाती हैं । चलते बड़ी कहती हैं 'राजन कहता है तो बकर कोई अच्छी बात होनी घब हमारे बूँदे विमान में क्या ठमस घाये है । तु जो गमझे सो कर बैठा । मैं क्या कहूँ तुम्हें । मया यह जमाना ही ऐसा है उस पर किरमत भी ऐसी लिखाकर लाये हैं । जबान बैठा अर्धों के सामने से बला गया । भीर दादी, पिताजी की बाह बरके रोने लगती है --- । मुझे दादी को देखकर भी बड़ी बका घाठी है । यपर मेरे पास लक्ष्मण कोई जानू की छोरी हो तो छ मस्तर 'छू' राजन भैया को पिता की बना हू । दादी पिताजी बुग हो । 'तू राजन भैया को पिता जी ? नहीं राजन भैया को ही राजन भैया ही रहने हू । नहीं तो उनके जैसा घाबरी कहाँ से घायेगा ? मैं तो इन मयदान को ही पिता जी बना हू ही' ।

राजन भैया अर्ध-अर्ध घाये थे । अर्ध-अर्ध घाये हैं । कह रहे थे— यह वाली जिता घरघाती है न दादी मैं उसे इतना ही घाट-भौंडर्न बनाना । अर्ध क्या है ? अर्ध तो यह घाटर्न मैं ही बहती हू न ।

बैठना इनसे मैट्रिक करते ही टपुसत करवाना शुरू कर दूंगा। करा-बच्ची भी काम। फिर पढ़ो। फिर पढ़ो अब वह जमाना था मया है अब प्रीटों को अपने पाँवों पर खड़ा होना चाहिए। 'अब बेलो दाबी' राजन भैया भीमी घावाज मे दाबी का जैसे पूरे धर्म विषयों से समझाते हुए कहते हैं, अब धरर दोबी (बो मां को बोधा कहते हैं) मैट्रिक पास की हुई होती तो कोई तकलीफ होती घर में ? किसी का धार्मिक होना पड़ता ? अब चाहे आपके सपे बेट है मगर बीबी तो बेबर के धार्मिक ही हैं न ? बार-बार फिटनी हिबायतें मुननी पड़ती हैं वह खर्चा भठ करो बहुत खर्चा ही गया है बाखी को घर पर ही सीना-परोना सिखाओ धीर बस—क्यों पढ़ात हो स्कूल में ? पढ़ाई का खर्च धार्मिक बैठता है। इस बार हमारे खर्चा जवाबा हो गया इसलिए कम ही भेज रहे हैं मगर तुम्हारे लिए धार्मिक ही पढ़ेगा—धार्मिक-धार्मिक। दाबी बताया यह सब मुनना पड़ता है आपको धीर बीबी को। दाबी कम से कम मैट्रिक पास तो सड़का को होना ही चाहिए। है न ? कुछ कमा का तो सक। बचना धार-दाबी में बाखी को बहुत बड़ी धफसर बनना हुआ नहीं ता प्राफेसर ही।

धीर राजन भैया मेरे बारे में कहे जा रहे थे धीर मैं हूँ कि कमी तीन बपों में पूछे तरह सामने भी नहीं पड़ी हूँ राजन भैया के। मां धीर दाबी फिटना बंटती है—'घर का ही सड़का है राजन तो। मैं कम कहती हूँ पराय है। मगर नहीं होता है मुसस उनका सामना। बड़ी का धावर करना चाहिए। पर मुझे ताज भी सगती है 'डर भी नबता है कही राजन भैया मेरे फूहड़पने पर टोक न हों वे सब को टोक देते हैं।

मैट्रिक एक बात है बाखी ने इस बार मयदानजी के चित्र बाल ताक के दोनों धीर हाथ टेककर चित्र को एक टक देखना शुरू कर दिया। वह सोचे जा रही थी कि हम तरह जैसे चित्र से ही पूछ रही थी क्या बात है कि राजन भैया ने कमी मुस से अपने सामने खड़ी



रहने या बायबीठ करने को नहीं कहा ? कमी मुझे बीर से देखा भी नहीं ? यूँ तो वो मेरे लिए इतने बड़े-बड़े प्लान बनाते हैं मगर यूँ मुझे मेरे हाव-भाव पहचानना-संवरना कुछ भी नहीं देखते हैं। बस कमरे में उन्हें जैसे ही कारें क्लिफ्टर वाली या मां के पोशों के बिछाने, यही दिखलाई बैठे हैं। घोर बालें डेर सारी करते हैं—काम की, बे-काम की। अजीब-अजीब सपनों की। प्लानों की। घपने खेती की। इनामों की। ट्रॉफियों की। कमिजों में मार-पिट्टाई की। ये कर दिया हमने वो कर दिया हमने हुह। क्या खाक कर दिया। मुझे एक दिन त्री पढ़ाकर तो जाना नहीं। बाकी ने फिटना कहा। मुझ से बत यह काम नहीं होता, बाकी ! मुझ से तो खिलवा लो। प्रैधान में झुंके छाड़ा हुआ। पढ़ना-पढ़ाना नहीं होता। घोर फिर बाणी तो लूक मुझ से इतना धरमाती है नि उसे सामने देखकर मैं भी धरमाने लगता हूँ। बाकी सच। अब बछापो भगवान् मुझ से राजन भैया धरमाय यह नहीं हो सकता है ? वह भोज में भी हो सकता है ? झूठ है न ? राजन भैया बरकर बहुत गप्पे मारते होते । गप्पी कही के ! घरे यह इतनी बेर से भगवान् के बिच में राजन भैया की तसबीर क्यों दिखती है ? हाँ घोर मुझे बार बार सगता है जैसे यह राजन भैया की तसबीर है। बतू तेरे की ।

बचछा धब की बार राजन भैया धार्ये तो मैं बिस्कुस नहीं धार्याऊंगी। धर्या-मॉर्टन बनाये का ऐलान कर दिया है तो मैं भी बर्बय घोर 'कारबई' सड़की बनकर दिखानेकी जैसे हमारे कालेज को बहुत ही लड़ुनियाँ हैं जो ताड़को को भी धर्या बना देने वाली हैं। मैं भी धब उनसे-मे बाल दनाकर जाना करु की कलिय। उनसे-से बपड़े पहनूंगी। उनको तरह बोसूंगी। धब की धाने वो राजन भैया को। बरकर में डाल दूनी मैं उम्हें। 'बाणी बाणी' मां की धावाज धायी— 'बाणी धारती का समय टस रहा है बैटा। भगवान् की धारती कर सो । घरे बचबुच धाम बनने को धायी। धारती ही बुकनी बाहिण की। बह तो बूम ही यबी की।

उसने हाथ जोड़े और बड़े मनोवेग से प्रार्थना की। घाज उस रह-रहकर मनवान के चित्र में राजन भैया दिख रहे हैं और साथ ही खिड़की की घाड़ में लड़ी लड़ भी। वो अपनी बड़ी-बड़ी धाँसों से राजन भैया को चाते हुए देख रही है। घाज उसने प्रार्थना मन समाकर मारी। उसे बहुत अच्छा लगा। मन ही मन उसने प्रतिज्ञा की इस बार वह राजन भैया के सामने ऐसी आयेगी कि उनका मुँह लना का लुना रह जायेगा।

बाणी धमी-धनी कसिज से लौटी है। घाज वह बहुत उमंग में है। वह फुरती से अपनी किटारों अपने पल्लव पर पटक बेटी है और मनवान के चित्रके सामने लड़ी होती है। एकदम उस चित्र में सर्कती जाती है और मुसकराती जाती है। कुछ पल्लवों गम्भीर होती है मगर धाँसों से ज्योति-सी बरसती समती है। फिर एकाएक मुसकराने समती है। कमी मन्हे पल्लवों होंठें हँगते हैं तो कमी बड़ी-बड़ी मावमरी धाँसों। समता है जैसे मनवान का चित्र भी बाणी को देख-देखकर मुसकरा रहा है। बाणी ने एक-दो बार मुँह खिड़ाकर भी तयवीर की और देखा है जैसे बलवाना बाह रही हो कि बेचना में तुम्हें चौंकाकर इन चित्र के जोखट के बाहर न ले घाठ तो बाखी माम नहीं।

मुँह खिड़ाते हुए घाज घाठी है अपनी स्कूल की सहपाठिनी रीतू-का कहना—'भई हम तो मौसम के साथ बदलते हैं। हम तो मनहून नहीं रह सकते।' बड़ी धमी मौसम के साथ बदलने वाली खंचल तितली कहीं की। पर समती प्यारी है। जिम्बादिल। जब तक साथ रहो हँसती रहेगी। लड़ भी खिलखिलाती रहेगी, घाजको भी पुलकों से भर बगी। भलायास ही घाज बात दिखाने लख जायेगे। सब उसक माय रहकर तो कोई मनहूस रह ही नहीं सकता। है मी कमबस्त सुन्बर। हाथ तितली सुन्बर है। घोर रहती भी है मस्टु-मोडर्न फैसन में। भई, बरना ही ऐसा पसर है। बाप पुराने धाई सी एस पफमर। माँ रिटायर्ड प्रिन्सिपल डिप्टी कसिज की। माई बिनायत में पढ़ते हैं। बहन भी बिबाह करके धमतीका लुमने मयी हुई है। लड़



इसका भी पूरा भयं बह नहीं जानती । भारतीय संस्कृति क्या है ? बह तो बस मां को जानती है बाबी को जानती है, बिबंगल बिमार पिता के ममिम बेहरे को पाद करती है । मां के संभर्ष को जानती है चाचा की बया को धनुकम्पा को और उनकी कङ्कुवाहट को, उमी को मन से बिमुख बस मर्यादा निभाने वाली उनकी मङ्कुजरी को जानती है । हाँ राजन मैया को भी जानती है । और किसे जानती है ? कुछ भी तो नहीं । कितना नन्हा है उसका संसार । कितना मम्हा है उसका बिस । बह सोचती है राजन मैया से बह बहस करे । उनसे इन मये मये बिचारों पर लिबेस माये मगर राजन मैया है कि उसकी और देखते भी नहीं । भाये हैं बड़े राम लक्ष्मण व प्रबतार । हाँ तो वाली भववान की टाक से मुक जाती है ठोडी टिकाने जाने कहां को जाती है । उमी मां टोकती है— 'भारती का समय मा क्या है' 'वाणी स्वत' कई बिनो से बिस मनोयोग से भारती कर रही है उमी बडा-मुभा के माब से भाब भी करती है ।

वाणी रास्ते भर धपनी हवाई रोके रही ।

धर में कुसते ही बह सबसे पहले धपने करमरे में बीड़ी बिखारें फेंको और पसंज पर तकिये में मुह गड़ाकर फफक-फफक-कर रो पडी ।

रो पडी ओर ओर से 'उसकी इच्छा हो रही थी सीता प्यङ्क कर रोये' पला प्यङ्ककर रोये' यह तकिया यह बिस्तर यह कमरा यह प्रकाश प्यङ्ककर रोये' । बह ओर से रोई और मां रसोई से माब कर घायी । बाबी बर्जा छोड़कर, ठसकती हुई, फुरती से घायी । क्या हुआ ? क्या हुआ बिटिया 'क्यों रो रही है ? किसी ने कुछ कह दिया कसिज में । कुछ बता ली ? बहुत पूछा । लोगों ने पूछा मगर उसने नहीं बताया । बस रोती रही बीरे बीरे । मगर कुछ नहीं बताया । नां बाबी मुक-मुक कर हार गयी और बह नहीं हारी । उसने धने का कारण नहीं बताया । हतास होकर बाबी उठ गयी, मां भी उठ गयी । लोगों कह गयी 'प्रच्छा धपने राजन मैया को ही घाने दे के ही पुछेंगे । तु

वह रही थी न कि रातन भैया के सामने बिल्कुल नहीं धरमाऊँगी देखती हूँ उनके पूछने पर जैसे नहीं बचावकी रोने का कारण ।

धीरे वह रोते रोते चुप हो गयी । बस रह-रह कर हिनजियाँ धा जाती पता भर जाता । धासू की लड़ी बुझक पड़ती ।

धीरे वह एकटक भगवानजी के चित्र को देखती जा रही थी रोने की वजह से देखती जा रही थी । एकाएक जाने क्या हुआ कि वह उठी धीरे उस चित्र को उठा कर उसने दरवाजे के बाहर पत्नी में फेंक दिया ।

‘क्या करती है ? क्या करती है बाणी ? पापस हो गयी है क्या ? सेरा दिमाग तो नहीं खराब हो गया ?’ कहती हुई माँ उसके हाथ से चित्र लेने के लिए छपटी ।

वह तो चित्र फेंक कर बीड़ी धीरे फिर अपने कमरे में अपने पलंग पर धा बिठी । उसके कानों में कुछ सम्ब, कुछ फिररे, धँपारों की तरह चल रहे थे । उनकी गूँज जैसे छबसठे हुए पारे की तरह जन-पटी की गर्दोंको जला रही थी—वे सम्ब उसने धनी-धनी मुने से जब वह अपनी छोसियों के साथ बाजार से धा रही थी । बाजार में राजन भैया भी बोले थे उठ नई है राजन भैया जो उसके भवधान थे । सभी लया मानों बाहर राजन भैया बील रहे हैं माँ कुछ कह रही हैं ।” माँ धबधई हुई है । राजन भैया कुछ कह रहे हैं धावक उसे धावाज दे रहे हैं । वह नहीं जाती है वह छटक धीरे से दरवाजा बन्द कर लेती है ।



● हरीश मादानी

## अनाम अपने

घो मेरे अनाम अपने,

तुम्हारे नाम पर लिखना उसे कई बार पढ़ना फिर सुटनेस की सुफिया बेव में रख देना मेरी आबत हो गई है। अब तक किनमे ही पर लिख चुकी हूँ पर कमी नहीं आहा कि मेरे पर तुम तक पहुँचें। मन पर आए माहों के बोझ को उतार दू, एगजिप्ट की लीज को अम्बों में उतार दू तुम्हें मुस जाऊ। पर कमरे के बाहर फैसली हुई सल्लि खिड़की से झाँक कर टोक जाती है। घीर में बिबस फिर सुटनेस की घोर बड़ जाती हूँ। अंगन से आता हुआ कोलाहल माहों को पढ़ना मुसा देता है इस तरह हर नया पर मनपड़ा हो कैब हो आता है किसी कर्कस आवाज को पढ़े से बचने के लिए।

मैं दिन भर घेरे खिड़के-अम्बे दोनों से बातें करने जाती हूँ उन्हें क्या बहलाऊंगी मैं स्वयं उनसे बहलती हूँ। बार बजते-बजते ये बीने टा-टा-टा के शोर के साथ मुसस बिबा से सेते हैं। मैं न चाहते हुए भी अपने ऊँची-सीवारों वाले घर सीट जाती हूँ। हमेशा खूनी रहने वाली मेरे कमरे की खिड़की मुस बकी-हाटी को सहारा देती है घोर में खिड़की के सामने कड़े दूँठ को तक तक निहारती रहती हूँ जब तक नाम के लिए पराए से स्वर मुझे सकसोर नहीं देते।

अमी-अमी अपने बीनों के देख से लीटी हूँ। खिड़की पर बूहियाँ टिकाए मुझे दूँठ को निहार रही हैं। यह दूँठ ठीक तुम जैसा ही है न बनी साबें हैं न यत्तियाँ हैं, निपट अवेसा अवेसा लड़ा है। सरफते समय के साथ कई मोसम आते हैं बी पड़ी रकते हैं बस देते हैं। किसी सावन एक हरी कौपम पूर आई तो कूट आई बँसे सदा एन-सा।

देखती तो इस ठूँठ को हूँ पर सामने तुम भा जाते हो, इतने दौम जाते हो कि घाँसों की सारी सीमाएं भर जाती हैं। मैं देखती हूँ— तुम धमी होटल में हो सुर्ख बेहरा मुठियाँ बंधी हुई ऐसे उबसते हो कि मेरे मंचेस भी नहीं देखते। मैं कहती हूँ—इस तरह बहस मत किया करो पर तुम हो कि एक प्रयोगवाद-प्रयतिवासी कविता यह है, यह है घोर दुःख भी नहीं।

यह सो भा गए ना। अपनी ताकतनुमा कोठरी में। नहीं गए वे सोसत कहीं खो गया वह प्रयतिवादी? पक्षीकी घाट पर घब लटे से घालें फेंकाए, मैं तो कांप जाती हूँ। बत्तापी न किते दू डती हैं ये घाँसों कीज है जो इतनी खोज के बाद भी नहीं मिल रहा है।

मेरी कुहनियां बुझने लगी हैं। निहास भी घाट पर भा बड़ती हू। मैंने क्या बिगाड़ा है इस निचोड़ी नींद का जो मुझसे लडा कलपार्स रहती है। नींद की मगौठी करते-करते घाँसों बीच कर प्योड़ी करबट बदलती हूँ कि तुम मुँह-बपि मुबकियां मरते दित जाते हो। बंद चार बीबारी घोर घकेने तुम कीज देखेमा तुम्हें ऐसे रोते? मैं क्या जानूँ कि मुँह बांध कर रोने से सारे दुःख पिपन जाते हैं, रिछ जाते हैं। मैं तो ऐसे रो तो नहीं मकती—बरे चारों घोर तो हर समय एक भीड़ रहती है जो मुझे एक ही रास्ते के हो बिबुधों पर काठी-लौटाठी रहती है। इन हो बिबुधों से बाहर की घोर जाकना पाप है। इस छोटे से रास्ते की सीमा के भीतर बसना मेरा यद्य है। मेरी दग्दता है मेरा जीवन है।

मेरे अनाम लघो ! यह ठूँठ एक पोस्टर है जिस पर तुम लिखे हुए हो—अपने अस्तित्व अपने भार संहित। घोर मैं बड़ा करती हूँ पड़ती बसो जाती हूँ कि नीचे से लाना बनाने का लपाना बुझे तुम्हारे इन पास्टर के सामने से खीज ले जाना है। मैं रोटियां बेकती हूँ—बोल-बोल। लौपी गब वाली सखी घोर वाली पर भुके हुए सो-चार कसे खाली बेहरे। इन बेहरों में है एक बेहरा घसबाद के बस्तर में

देख पर झुके हुए तुम हो जाता है जो घाटे की सोलियों के लिए झुकती मछलियों की पेट की छटपटाहट के बिना भाव करता है जो भांगल में पड़ी लकड़ी साध को धोपने के लिए कफन कुटान की योजना बनाता है। यह तुम्हारा केहरा ठाका लिखी किताब बेचने से मिले रुपये और इन रुपये से घाने बाल बना के तौस का और अपनी भुल की शर्त का अनुपात बिठा रहा है।

बूढ़े की घाम बहुत तेज है। बैठना मुस्लिम हो रहा है महा धार्मिक पसीने से। घाम बुझाने पानी की तपीली सठाही है कि सुलगती लकड़ी की भाग में तुम सामने ऐसे घाटे हो। तुम बसते बर्हा हो ? तुम अपने का ऐसे हो रहे हो जैसे सर पर पीठ पर मारी बोझ रख बिमा हो किसी ने।

अपने अपने से बुझी अपने अभावों से बुझी मेरे अनाम अपने। चाहती हूँ तुम्हारा बोझ बाँट लूँ तेरी बुझती पीरों को पहला घु बीबार में बड़ी पचरीली लाट के सिरहाने पड़े तेरे कबे बालों को अपनी अनुसियों के संभार लूँ, घूप से बनी कोसठार की सड़क पर न सही किसी एक अपने में ही भाकर तुम्हें अपने माच का बिरवास दिना लूँ और घाम अपने घाप बुझ जाती है।

अधिरा घर और मुझे बेर कर भरी-की सोई हुई यह भीड़ बिरका कड़ा पहरा मुझे देखती लीपने से रोक सकता है मगर जामन से नहीं घाँसें मूँह मन ही मन तुमसे बठियाने से नहीं।

ठार-ठार हुई अपनी अमिस्तापामों पर कबिताई-मास्ता के बेमड़े लगाकर बीने बाले धो मेरे अदेखे साथी। मुझसे कभी मत मिलना मुझे अपना एक अणु भी मत देना। मुझ में इतना बल नहीं कि सीमाएँ साँच कर तुम तक आ जाऊँ वह तन कहीं से जाऊँ कि तुम बिलनी बूँध घोट मऊँ वह मन कहीं है मेरा कि सब कुछ जो लूँ मेरे पास के धाँसें नहीं कि बचा क इतबार में मेरे किसी लकड़े की भास



रत लड़ । मेरे पास वे हाथ नहीं जो रोटियों के बदले बहाने के पू  
घोर मेरे पास वह बीरब भी नहीं जो भभावों की कविताओं से वह  
साठा रहे । सुन रहे हो ना सुन नभो मत देखना मुस से नभो  
मत मिलना ।

बन

पुन्हारी

परिचित अपरिचिता ।

या अपरिचित परिचिता

एक भीड़ है घाँवों में डूब जाये इतनी दूर का सिलसिला है  
इस भीड़ का । मैं स्वयं को बनेसँ बसता हू इसमें प्रकाश ही । नहीं  
जानता कि कभी मुझे करना है इसमें से किसी किनारे के लिए ।

दीवार बाजार के कोसाहल से कहीं अधिक कहीं लीला ठहरे-या  
बसता यह मकर । बहुत से अपने-पराये घा-जा रहे हैं घोर में इस  
घब का लांभता घाये ही घाये माय सेना चाहता हू पर मन का घकेसा  
पन टोक देता है, बीच बैठा है मुझे । सँभ घाँव घाँव अपने घकेसपन  
को कम करने अपने मुतहा भवान के तहखाने में बैठा सिलता हूँ—  
कुछ छोटी-बड़ी पंक्तियाँ लायक पन नी ।

बस मिना भी ली नहीं जाता । कभी-कभी पुराने सिलसिले  
खोसता हूँ । जब भी खोसता हूँ एक भीड़ बिकर घाँव है सामने ।  
इस भीड़ में से एक-एक घाद अपनेपन के नारे बजाती है, मुझे बीच  
सेना चाहती है अपनी बाँही में मगर मैं भाव जाता हूँ एक टूठ  
पथराकर रोक देता है मुझे मैं क्यों से जानता हूँ इन टूठ को यह  
नहीं ठेरे बनरे की तिकड़ी के सामने बासा टूठ है जिसे तुम बुहनी  
टिकाये देना करती थी मेरी इनसे तुलना किया करती थी । मैं इस  
घाद के घनघाये पर एक कड़वी सी हँसी हँव देता हूँ । सोचता हूँ  
बिठनी समानता है मुस में घोर इस टूठ में । तुम से इन टूठ की  
घोर मेरी निकटना का बीच बुधा देता है मुझे । पर ऊँचें शंभ कपाटों  
की बरतों से घन कर घानी ठेरी बिकपटा बुजरती हुई बहुत कुछ नद  
जाती है ।

यह बिबसता इस ठूठ के कभी न हरिबामे की स्थिति की उपज है मपना तेरे जीवन में बैठे पहरेवारों की नींद के जय की उपज में नहीं जानता !

तुम घायल बाहों के सहारे ही जीवन जिवा बाहूठी हो लेकिन मझे किली के सहारे जीने की शक्ति नहीं ।

मैं मान पड़ता हूँ और मेरे सामने धुँवभी मुझ पड़ने लगती है बिबसे नीचे से कुछ सुलभता सा ऊपर उठने लगता है मुझे यह सुलभाव माता है यह सुलभाव पकड़े-पकड़े काँधी की गर्त-सा बिबहर पाता है मेरे ऊपर मेरे चारों ओर दूर-दूर सारी परतों पर मैं इस पर लिखना चाहता हूँ, लिखते बने जाना चाहता हूँ । मैं यह सोचना भी नहीं चाहता कि ठूठ कभी हरिबामेवा ।

सुम्हारा मपना  
मन्नाम मपने



## ● पूरव दर्शना

## धुंधला पट . उदास चेहरे

पूरवमे पट पर उदास चेहरे की परछायायां रोज घपनी कोई न कोई पडानी कडनी ही है । घीर ये उदास चेहरे बिनके लिए जीवन है भी घीर जीवन मृत्यु भी है । जीवन घीर मृत्यु का यह फरकला उदास चेहरों के लिए खरम होला ही नहीं । खरम हो भी तो कैसे बड फलला पाटने का मकर कछ इस तरह से टेड़े रास्तों से होकर जाता है कि हर रास्त के बाद उतनी दूरी बनी हुई भगती है घीर बलठे-बलठे घालिर पडरी घरान घा जाती है—बचना पडता है—परछायायां रोज घपने उदास चेहरों से इन पूरवमे पट पर उतर जाती है । ।

राजन की कलम बड बयी । मक मया बा बहु भी । घाराम के लिए उमने मामने की कुर्सी पर वीर कैलाये ठिबरेट बलाई—बू ऐ के बादन छाने लने—धुंधला ! उतने घरर की लफिम का—उतके घबरने मन बा धुंधला हटाव् बहु बीड बवा ।

‘उमके नामने एक चेहरा उभर घामा । बुबिन घाकठि स्पष्ट हुई । रेला ।

मै काम की लनाय में मटाना फिर रहा बा । बिस्ती नी उहरा । फीटिब के पाम लडा बल बी प्रनीषा कर रहा बा—रुने में एक छोटा बच्चा जो घपने मां-बाप से पयक ही गया बा दूर से मागना हुपा बा रहा बा घबानक एक घबठी की बिस्ताइट घीर मोटर के एकरम डोक लपने की घाबाज से मै बीड गया । मने तुल्ल ही बच्चे को उठा लेला बाजा । घुबठी के मिया मेरी घीर देले उने घपनी घोदी में उठा लिया’

मेरी मजर अब मुबती पर पड़ी—मैं मौबक रह गया—रेखा थी वह।

उसने बाल्यबाद बेने को मेरी घोर सिर उठाया कि वह भी सत्य सा लड़ी रह गयी—

तुम।

तुम !!

सोह ! यह बरबा घापका है ?

थी हौं।

उदाय बेहरों की भीड़ पीले-पीले बेहरे खुशियां न जाने कहा मूम हो गयीं ? प्राकृतियां क्यों बुबली हानी जा रही हैं - जीवन फिर से क्यों अपने हरे रूप के लिए बाहू करटा है ???

इतने में उमका पति धा गया था। उमका पति - रेखा का पति— बहुत ही सामदार शूट पहने था। पहल मेरी घोर उसने बेना फिर रेखा की घोर—रेखा ने मेरा परिचय दिया—

किशोर ! ये मेरे पड़ोसी थे, मित्र भी ये इनका नाम राजत है। राजत ! ये मेरे पति हैं।" घोर सुनन धम्मिल्ली उमके बेहरे पर वीड़ घामी, किशोर ने बलुछी मेरे से हाथ मिनाया, मेरे दिक्की घाने का कारण पूछा—मैंने बीसे ही कहने की मूँह खाला रेखा बोल पकी

किशोर ! ये किन्ही इण्टरव्यू के मिममिल में यहाँ धाए हुए हैं। अपने यहीं ठहरते। हम तीनों टैक्नी पर बीठ उसक बयल की घोर रबाला ही गये।

ये खामाध धर्में जो रहकर कुछ कहने को उद्यत रहीं हैं— पर उमकी सुनने खाला कोई नहीं। तो क्या जीवन से इनको नाता टाक बना चाहिए ? क्या बुबला पट किमी तुकाम से फट नहीं सकता ? क्या उबास धहरों पर बनी रेखाय मिट नहीं सकती ?

रेखा का धासीसाज बगला। हम झाइग कम में बीठे। रेखा बरब

को संबर मुलाकर हमारे पास आ बैठी। बातचीत नहीं हो रही थी। बस बैजल सामोरी। टेनीफोन की बंदी बजी और किन्नोर ने कुछ बातचीत की। "बहु रेखा से बोला

रेखा! साहब ने अभी बुलाया है। एक जरूरी काम आ गया है। राजन को लाना खिता देना—मैं इनके साथ साम का लाना आ लूंगा। धीर बड़ कम पड़ा।

मैं धीर रेखा होगी रह पड़े। दोनों एक-दूसरे की धीर देखते धीर नजरें नीची कर सते। मैंने सिगरेट निकाली धीर मुंह में लपारी ही थी कि—

'राजन! मैंने तुम्हें कितनी बार मना किया' सिगरेट मत पिया करो। फिर घाब क्यू पीने लगे? यह घाबल क्यू खानी तुमने? धीर उसने सिगरेट खीन छोड़कर फेंक दी। मैं कपचाप उगकी धीर देखने लगा। उसके बिहारे पर एक भाव जनरता धीर डूमरा बड़ता पर कुछ नहीं कहती। यह उसकी पुरानी घाबल है कि जो भी दिन मैं होता है उसे कहती नहीं कपचाप लहम कर लेती है।

स्नान करोये या पहले नास्ता साऊ ? धीर फिर कुछ ऐता मुंह बनाया कि जैसे कोई भूमी बात याद आ गयी।

'धरे! तुम तो स्नान से पहले चाय पीने के न? ठहरो पहले चाय मंगानी हूँ।

'नहीं मैं घाबलल स्नान से पहले कुछ भी नहीं खाता पीता। धीर चाय की घाबल तो कभी से छूट गई मिस जाती है तो पी सेता हूँ। पहले स्नान ही कर ना। ---इन बेहरों पर नचाब भी लगे रहते हैं कभी-कभी परन्तु कोई भी संबीबा बटना इनकी समझियत भुंजसे पट कर बिघेर देती है। मन की छुगी बात भी कही भुंजली रह पायी है -- धीर इन बेहरों की जिन्की रीनक न जाने कब से उड़ चुकी है ये बेहरे! उम्र में पहले ही बढ़ियाये से मगते हैं बेहरे ॥ जो पठभ्र

। छापी बना चुके हैं' जिनके लिए अब बसन्त आया ही नहीं' और  
 ० हर समय मरमि रहते हैं जिन पर पाँचुरगी लेप क्या फ़बटा है ??

मैं अब स्नान कर, उसी चींते पायजामे वेस्टकोट को पहिन ड्राइव  
 म में आया तो रेखा चाय सिधे पहले से ही तैयार बठी थी। चाय  
 पीकी लगी। मैंने कहा रेखा ! क्या चीनी दिल्ली में मँहगी हो  
 यी ?

नहीं ता तुम जो चाय मे चीनी मही लेते थे ।

'किन्तु धाजकम पीकी चाय बन्धी नहीं मगती रिखा ! जीवन से  
 मेठास तो बली गयी है—चाय की मिठस तो मठ चीनी ।

रेखा चुप । हमेशा बचत बोस, चुमकुली रहने वाली रेखा  
 किती बन्धीर साँठ एब सड्मुहस्त हो गयी। जीवन के दिन खोये  
 मही—बतिशील है—कस क्या का धाज क्या हो क्या कम क्या होगा  
 मनुष्य जामते हुए भी धनजान बना रहता है। क्या कभी मैंने और  
 रेखा ने स्वप्न मे ऐसा भी सोचा ना कि हम मसग हो जायेंगे। मैं  
 धपन में सोचता ही रहा रेखा न मासुम कब से पास में लड़ी थी।  
 मेरे कंधे को हिलाकर बोली—

जाने का समय हो गया सन्त थी। कब से पास में लड़ी हूँ।  
 सत्ब रही थी तुम कुछ बोसी परन्तु तुम तो ' मैं और रेखा जाने  
 की मेज पर गये। कुछ बेर फिर वही जामोसी।

राजन ! तुम इतने जामोस गयो हो ? पहले तो एक मिनट भी  
 चुप नहीं रहते थे ?

और तुम कहा करती थी—क्यावा मठ बोसा करो। मैं बोर हो  
 जाती हूँ है न ?

'किन्तु धाज तो मैं तुमने खूब बीजना चाहती हू 'वु यह  
 जामोसी तो मेरे इस जीवन में है ही' ।

'क्या कहूँ रेखा ! मेरा जीवन तो तुम देस ही रही हो। बस  
 मिस्रता हू और पेट पालता हू तुम्हारे बीसा सुख मेरे पाम कहां।

तुम्हें क्या मासूम मैं तुझी हूँ या तुझी। मैं कुछ बोलती नहीं तो इसका मतलब यह हुआ कि मेरी माबतायें समझे क्याहिं सब मिट गयीं ।'

धीरे रैना राने लगी । लाना वहीं छोड़ दिया । बेसिन पर जाकर उतने मूँह बाँधा । मैं भी हाथ बोककर ड्राईंग रूम में घा गया ।

इन अहरो पर बिकरती स्मृतियाँ जिनका एक-एक इतिहास है यदि ये इतिहास के पन्ने खींचे हों बोल उठें तो समाज ही बरस जाम । टिप्पू इन अहरो में बह ताकत नहीं क्योंकि ये अहरे चुंबक हैं बीरे-भीरे बूमिस होते जा रहे हैं। पपने हर प्रबल से वे उन स्मृतिओं को धरम कर देना चाहते हैं जो हर बार उनके इतिहास के पृष्ठों को लोम लेती हैं। इतिहास जो बरस कहानी है। समाज की धीरे ये स्मृतियाँ उभरती नहीं केवल इसलिए न कि हमने समाज को या समाज के हमको पसल समझ लिया ।

रैना भी मेरे नामने धाकर बैठ गयी । समझे कहा राजन एक बात कहना चाह रही हूँ ।

बोलो' मैंने बदन से इछारा किया ।

तुम राजन । अभी तक गलत समझे हुए हो—घाज इतनी एडवांसमेंत बिगई देनी है । प्यार में स्वतन्त्रता की चाह बनी रहनी है । ऊपर से सभी इस बात की हामी हैं कि प्यार के बीच में बीबारें न लड़ो की कार्य परन्तु राजन ! मैं मनीष विचार केवल ऊपर ही ऊपर तीरते हैं। धन्दर समी तक बढ़ी पुराने संस्कार पर किसे हुए हैं । अपना ठाढ़ी सुबा जीवन भार बन जाता—इस संसारों पकित दुनियाँ में । मैं छोटी करने के लिए मजबूर हा गयी थी क्योंकि मुझ धीरों की तरह समाज में जिंदा रहना था ।"

रैना यह कहने-बहुते रो पड़ी थी । गामोठ रैना ! जितने भीदम की हर बात के साथ समझना किया था । अपना मन की बात कभी कहनी भी ली नहीं । बह उठी धीरे मूँह धीकर बापिस बनी घायी ।

राजन । होपहरी में कुछ देर पाग वाले कमरे में जाकर धाराम कर लो ।'

इन बेहरों की दुनिया भी धलप ही होती है । इसकी बातें कोई समझता तक नहीं या समझने की कोशिश नहीं करता । ये अपने में ही घुटते बेहरे उन पुनरावृत्तियों के लिए स्वप्न संबोते हैं जो कभी साकार नहीं होते । इनकी सड़क पर चलती लम्बी कठारें जो न मासूम बहानों से कहीं जाती आ रही हैं—ये बेहरे मूखे हैं—ये बेहरे जो तपित की भाँस छोड़ बैठे हैं । इनकी धाबाध बरू गयी है—इनके गस धक्कड़ ही चुके हैं—ये सामोसकंठी जो अपने कंधों पर कुस्र का कुस्र सिमे सम्माने ढीले आ रहे हैं ।

मैं भारी मत लिये पलंग पर बैठ गया । न मैं यहाँ घाटा घोर न ही यह दुःखी होती । मैं भी कितना अधीन आदमी हूँ—एक क्षणिकमय जीवन में कुछ दिनों के लिए तो अशांति के बीज बिखार ही दिए मैं यहाँ क्यों आया जसा आठा रेखा से उस समय जिस तो लिया ही था पर रेखा ने मेरे लिए झूठ क्यों बोला ? तो क्या रेखा धक् भी मुझे नहीं मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए ।

—इन्ही रात में अपनी इरियाँ मापने के स्वप्न लिए बेहरे । चाव-सिंघारों के साथी सड़कों के प्रेमी—एक ही नाम से चलते—मझीनी जीवन की रेश को चिपकाये हुए—घुतलो की तरह-जाग होते हुए भी छाँसों पर विश्वास न करने वाले—ये सब बेहरे । बुधसे पट पर एक के बाद एक छाय जा रहे हैं इनकी परछाइयाँ तक दिम्हें छोड़ नहीं हैं और जो दृकाधी हो गये हैं—।

रेखा कमरे में घायी धीर मेरे पास पलंग पर ही बैठ गयी । मैंने उसे पलंग कुर्सी पर बैठ जाने के लिए कहा ।

"तो क्या धक् तुम्हारे पास भी बैठने तक का अधिकार नहीं रहा ? बहु बोसी ।

रेखा । शारी सुबा हो कोई रेश मेरा—वई प्रकार की बातें बन पायेगी ।'



‘तुम्हारा यह ज्योतिष घास्त्र तुम्हारी जीवन नीया खेद में समर्थ हो सकेगा ?’ मैंने उससे प्रश्न किया ।

‘कमिज के बाद में यही मेरा जीवन बताया था और समाज में मुझे इज्जत देया । मुनिकुमार ने हड़ स्वर में कहा ऐसा तुम्हारा घास्त्र विश्वास है पर यह निरर्थक है सही तो यह है कि धर्म मनुष्य को जग पर विश्वास हो तो वह अपना भाग्य चाहे जैसा बना सकता है ।’ रमेश ने तनिक बिड़कर यह बात कही ।

‘हो सकता है । लेकिन मैं इतना जकर कह सकता हूँ कि कबल विश्वास से भाग्य नहीं बनता । यह लिफाफा मैं रमाकान्त को देने जा रहा था इसमें उसके पांच वर्ष के घाने वाले भविष्य का पूरा चित्र है । यह मैं तुमको दे रहा हूँ । कमी भी तुम्हें समझ हो तो इसे खोलकर पढ़ना और उस मनुष्य के बारे में जानना । रमाकान्त को तुम बम्बई तरह जानते हो । इसी वर्ष भाद्र, पी एम में जून मिया गया है और अब यही नजदीक वाले घाहूर में एम पी समा हुआ है । कम मिलने प्राया था मुझ से । मैंने सोचा और तो क्या छोड़ा हूँ भविष्य के लिए कुछ जो दिखाई दे रहा है बतमा हूँ ।’

मैंने घास्त्र ही नभ स्वर में कहा ‘मुनिकुमार तुम अपने जीवन को बरबाद करने पर तुम हो गए । यह ठपोरी बिद्या कैबल धनपड़ और धन्वविदवासी लोगों के लिए ही मार्ग प्रदर्शित कर सकती है । हम पढ़े-लिखे के लिए नहीं । और मैंने वह लिफाफा सापरवाही से एक पुस्तक के बीच रखा दिया ।

तुम ऐसा दमतिह् कहते हो मित्र । कि इस बिद्या को जानन वाले तुम्हारी हमारी तरह कमिजों में नहीं पड़े और न ही उनका रहन रहन घाज के घुम के धनुवार है । यदि यह भी मूट-बूट पहन कर धन्वे घो-नीम की तरह अपनी जीव का प्रदर्शन करें तो सभी जने मानो घाग—गाये घायें । फिर भी मैं जिन्हें विश्वास बिताया हू कि यह एक बिज्ञान

साईंस है, यशिव है। और तुम सभी सोम पूर्णप्राही हो। निमर्श  
र सिया कि यह एक भासा है, छत है प्रपंच है। इसको कभी  
बसते ही नहीं।

बात उसी दिन घायी-गयी हो गयी।

उस दिन के पश्चात् मैंने उस लिफाफे को संभाषा ही नहीं।  
विश्व में अनेक परिवर्तन घा गये। मेरी भी बबली हो गयी और मैं  
जना साठ सामान लेकर कड़ी पीर जाने की तैयारी करन सदा तो  
प्रत्याशित यह लिफाफा मिल गया और इस लिफाफे न उन छणों  
मे पुनः जीवित कर दिया। मैंने लिफाफा खोलकर पढ़ा—

११ अक्टूबर १९६२ की घायी।

२२ सितम्बर १९६३ पत्नी की किसी रोग से मृत्यु।

२८ सितम्बर १९६४ तक अत्यन्त सुखी जीवन और उसी दिन  
अचानक मृत्यु यह भी हुआ था।

रमाकान्त की घायी और उसकी पत्नी की मृत्यु वाली बटना को  
मैं बहुत करीब से देखा चुका था। और उनकी तारीखें भी सही ही थीं  
मैंने एक संका उठी कहीं रमाकान्त की मृत्यु वाली बात भी सुन  
व हो जाय। सभी मैंने मृत्यु वाली तारीख को गौर से देखा।  
२८ सितम्बर १९६४ सिखा का और मात्र तारीख २७ सितम्बर है।  
मैंने सोचा—कभी न रमाकान्त को इसकी इतना दे ही जाय। टेभीकोन  
करने पर माजूम हुआ एव पी साहब रीरे पर गये हैं। घाव घाव  
तक सीटेंगे।

कार सेकर मैं एम पी साहब की तरह रवाना हुआ। वे मेरे यहाँ  
से घस्ती नील दूर एक सहर म एम पी य। रास्ते में कार का  
पिछला पहिया बस्ट हो गया। जैसे-उसे दूसरा पहिया सवाकर रवाना  
हुआ। रास्ते में पड़ने वाली पुलिस चौकी के पास रुकते हुए सोचा

कि क्यों नहीं महीं एत पी, साहब के बारे में पूछ लू । चौकी में जाने पर मामूम हुआ एत पी साहब घाट को पास वाले गाँव में तकनीत करके यही भाकर बिशाम करेये । सोचा भ्रष्टा हुआ यही मिल लूँवा रात के दो बजे तक इन्तजार करने पर पी अबका भावा न हुआ तो फिर हुई बीर उही समय ईशार्न चौकी को कहा कि किती आइमी को भेजकर उनका पता करवाइए । बार बजे सिपाही ने भाकर बत साया कि साहब तो गाँव से तकनीत करके सीधे शहर चले गये हैं ।

उसी समय शहर की तरफ तेजी से रवाना हुआ ।

सुबह हो गयी थी ।

मैं जैसे ही वहाँ पहुँचा जैसे ही मुझे रमाकान्त के बंगले में प्रीड़ नजर आयी । मामूम हुआ कि कुछ लोगों द्वारा कल रात उनको मार दिया गया है । उनके घरे में एक रस्ती का फँदा था ।

मैं मरणात्मन्-सा बड़ा रहा । सोचने लगा कि मैं क्यों नहीं सोचा यहाँ जा गया ?

## काची-केल

पम पुनन

मन मानवे

टिकियो जेसमेर ।

इधर के किसानों में घाब भी यह उक्ति प्रचलित है । भ्रमाल को बिंदी माँ का बच्चा समझ कर उसके विषम में कड़ा क्या है, पूषन में यह घावा-बाटा रहता है मामबे में बाने की घमिसावा रहता है और बैसमेर तो उसका स्पर्श निवास है, वहाँ हुमेया रहता है ।

रोहपाँ एक छोटा सा पौव है । बैसमेर प्रवेश का एक छोटा कस । बारह बर्य बीत गये एक बार बहूँ सपावार साठ बर्य तक भ्रमाल पड़वा रहा । एक बार थोड़ी हल्की बरसात पयती अपने हुपप से किसान बीजों को घंझुर देती, वे थोड़े मुस्कणते और पानी के समान में प्यासे लड़क कर प्राण त्याग देते । पता नहीं यह पुष्पी कहीं बीज छुपावे रखती है कि हर बप इसी तरह पीबे लगे और मिट जाते, कभी बीज न बना पाते ।

घाठबें बर्य के प्रारम्भ में ही आलातीज के दिन लोगों ने समुनों के आचार पर इतलाया कि घान बासा बर्य खोलह घाने फलेगा । प्राणीणी का किज्ञान चिकिर्षी की भाषा-कौन सा पक्षी किञ्च समन किठनी दूर पर जैसे स्वर्गों में बोला । इनका हिंसाक ही उनका विश्वास का आचार होता है । मेवा किसान इस पौष का चौबरी का । उसके लिए इन बातों में बड़ा आकर्षण था । चौबरी होते हुए भी लक्ष्मी पससे कूट गई थी । उसे यह पर सम्मान दीसत वे या जाति समर्बकों ने नहीं दिया था उसकी

न्याय प्रियता निष्पलता और ईमानदारी ने ही अपनी स्वर स्वर्य मुखरित किया था। वह निश्चय अपनी की माता बना करता था भक्त जनों में भी उसका मान था। परन्तु इतना सब होने पर भी उसे दुःख पर दुःख के सपेड़ झेलने पड़े।

ऐसी मामी हानत इस पर सात वर्ष का सम्बा दीर्घायु अकास। चौबरी के सब पशु एक-एक करके उसकी धाँसों के सामने धाँसों में धाँसु भर भर कर मर गये। उसने भरसक प्रयास किया था उन्हें बचाने का। अपनी स्वर्यबासी पत्नी के सहने भी उसे बेचने पड़े बिन सहनों को अपने अपनी एक मात्र कन्या कथा की धारी के लिए संजोकर रसा था उन्हें भी पेट की अग्नि दान्त करने के लिए हृदय पर पत्थर रस कर महाजन को देना पड़ा।

बदने में उसे दिसे बुन खाटे मोठ और पले बीज। मोठ-बीज की रोटी उनके लिए अनुचित भोजन था बिन में संजोये विटामिन उनमें लताई पैदा कर रहे थे।

सस्ती अठारह वर्षीया मुखरी। सदरया पीवन मंभ्रमा कर बड़ी पथि फुलकरी पास कभी हुई थी का फणारा, कभी मुस्से की समतनाहट बुल विभाकर बड़ी अजीब फिर भी सुहानी लड़की थी वह। सिर प्रायः मया ही रखती बराबर बाले बहिन छोटे बच्चे बूबा कह कर उसे सम्बोधन करते। यही गाँव की रीति है। वह चौबरी का संसार भी जो उसे साधुओं के हाथ अयत्न में जाने से रोके थी।

सापाड़ मात्र लगा। सासमान पु बसा गया। एक दो पहर को उत्तर दिया से तितर पंथी बादलो भ्रंजने सगी। किसान प्रसन्नता से भूम सटे। उनका विश्वास अनुजों पर अटोसा। मारों वर्षात हो गई उनके अमिहान अनाज से भर गये हों। वास्तव में उनका विश्वास सत्य सिद्ध हुआ। बदली ने रंग बदला। वह अनुजनी बनी नहरी बनी और फिर कासी बटा बन कर चारों ओर छा गई। बोरे की बोटी पर बड़ा किसान था उठ

“रतप रे बायोबा,  
मोठी नीपत्रे’

रात के प्रंबरे में झूटा गलने लगी । कंबारी बरती की प्यास बुझने लगी । घसने लुप्त होकर पिया । सारी झुंडे मर गई । प्रातः कामीन पबन बसल लगी लोपों को घाव नीव नहीं थी सेतों से घाखी सोंबी बास मानों अम पीडित पृथ्वी के पसीने की हल्की महक हो ।

हस्के प्रकाश में किसान अपने हस बैल लेकर बैठ जाने लगे । प्रामीण बासायें प्रसन्नता में फूटफूटी अपनी पेशियों में रखे नये सलबटे मरे कपड़े पहन बड़े मटकियाँ लिये ‘मांडे’ की घोर बस पड़ी । साप-वधमा पानी पीते हुए सात बर्ष गुजर गये थे । यह पातर पानी उनके लिए अमृत तुल्य था । अकलियों से पी रखी थी एक दूसरी पर उद्यास रखी थी । हृदय की उद्यास बाहर आ रही थी ।

मेधा चौबरी की हासत अस्ता थी । कभी समय था जब एक साव मात हस झुटते थे । मयबान की लीला । एक-एक कर उसके सात बेटों को किसन उठा लिया । वह मूक बना सब कुम्हरेमता रहा अपन खिलाये सुमनों की कौमला बनाता रहा । एक मात्र उसकी अन्तान क्या बची बिसे वह स्नेह में निबोकर ‘स्नीया’ कहता था । घर में बाप-बेटी लो थे । हल झुटना मुश्किल था । वर्षा के प्रथम दिन किसान के खेत में हल न झुटे धीरे उसके बाप के लीने पर काढ़ान न बड़े इसका बुन्ध बही महसूस कर सकता है ।

चौबरी महाजन के पास गया । उसका पहले का काफ़ी उबार पड़ा था । अपनी पत्नी की अन्तिम निशानी नाक की नय लेकर वह बोने के लिए ‘बीज धीरे जाने के लिए बही पुचन जुग जाये मोठ से घाया बिन्हीं घायद उसी ने कभी चौबुना सस्ता दिया था ।

दूर-दूर तक सुनसान फँसा हुआ बीरान । अयाद की बिसमिताती ठेक धूप । धूप के पहाड़ ही पहाड़ नबर घाखे थे ज्ञाप्य लो घरीर की भी पर्मी से डर कर घरीर में ही समा गई थी । हवा के झरने पर साप

तून पसीना बनकर बह जाना चाहता था। एक बुढ़ा किसान अपने अस्तित्व से चूम्न रहा था। वह अपने कंधे पर 'हम' रखे हम सींच रहा था। पीछे उसकी लड़की रुपा भीच बो रही थी। इन्दियों का डींवा मेवा बीबरी स्वयं हम सींचकर अपनी छपिया को गुल्ल देने का भ्रम से रहा था। इत्यान का फर्म उसकी भूख कितनी कड़वी होती है इसका अनुमान उह्व ही लगाया था सकता था। प्रभी माया दिवस ही बीत पाया था बुढ़ा एक बया।

बाप-बेटी एक गए। सूखी खेजड़ी के नीचे बंठमों की बीमार छाया में बैठकर 'भोटड़ी' का पत्र पानी पिया। प्याज रोटी खाई यही उनके लिए 'पूट केनी' थी और वे हिम्मत बटोर कर फिर चूम्न पड़े।

रूपा ने ऐसा कड़ा परिश्रम कभी नहीं किया था। पहले वह साठ माइयों की बहिन थी वह भी सबके बाद जग्मी छोटी बहिन। घात्र उस अपने अकेलेपन पर रोगा घाता था। पता नहीं क्यों बीबरी ने जबसे अपनी छिटिया को बीज बोने के लिए कहा था सभी से वह बहुत ही सम्मीर बन गया था उसने अपने दिम पर सामर कोई पत्थर रख लिया था। बिसका बजन सहन उसके लिए मुश्किल हो रहा था। इसलिये रूपा को भी बाठबीठ करने का साहस नहीं ही रहा था। उसके हाथों में कफोले पड़े पड़कर पूट भी पड़े। उनमें सकेर पानी घाता था जब हल को जटाती तो उनमें एक टोस उटती जिसे वह अपने घोटों को बीतों से बचा कर प्रन्वर ही पी लेती। अपने बुटनों तक चापरा को सपेट रखा था साठ छरीर पसीने से चू रहा था जोभी पर पसीन के बार बार लूब जाने से सफेर पारियां डिबाइन बना रही थी घोटों पर पपड़ियां कम गई थी। साठ पसीना घोटों में गिरकर फिरफिरा था। वह बीसवीं छरी में जग्मी बामा घारिम मुम से चूम्न रही थी।

घन्ट में पून्वी का बुमाब पूर्ण हुआ। वह छुट्टी होन का मोधु का बीबरी न हल छोड़ कर एक सम्मी साठ सी। पीछे मुड़ कर अपने भ्रम से बनाई नाम बरती को देता मनमें एक घातम सन्तोप की प्रसन्नता

मनक उठी । हिंसाब सगाया ।

“बीस पारंगडा चुठ गई है क्या । एक डंटकी बाजरी चाहे चाहे में समझो ।

क्या ने कोई उत्तर नहीं दिया । जैसे ही उसने बीजनी को एक तरफ छोड़ा । धन 'न' न ! वह पड़ी से बोटी तक कांप उठी । उसका अधिष्ठ हृदय एक गहरी पीड़ा से रो उठा । बीजनी बन्द हो गई थी करीबन उसके घाबा सेर बाजरी भर गई थी प्राप्ते दिन का भ्रम बैकार हो गया था । उसने पीरे से कुम्हे रिल से बीजनी को अपने बिले में लासी कर लिया । चौपटी किसी बिचार में लौ गया था । वह इस परिस्थिति के बारे में कुछ न जान सका । वह चाहती भी नहीं थी क्योंकि इस घटना से अपने बाले बस्के की वह कल्पना कर सकती थी । चाहे उसके बापू उसे कुछ न कहते परन्तु वह कड़ा भ्रम समायया हुआ हिंसाब घपाड़ का दिन हाथ से जला गया था । क्या एक बने पहर बोझ स बर गई ।

बक मादि बाप-बेटी भर घाये । बही कखी रोटियाँ । मेपा में घोड़ा सा गुड़ हाँडी में से निकालकर क्या को देते हुए कहा—

‘स बिटिया पक गई है बुड़ से पकाबट मिट जायेगी’ यद्यपि यह कह तो दिया था परन्तु उनके मन ने बीच में ही जैसे उस रोक दिया । उसका मुर्गियों पड़ा बहरा भासुर्षों से बिलस गया । वह कुछ और बहना चाहता था परन्तु दण्ड बीच में ही बुझ गए ।

‘साबरिया लेरी मरबी है, कितनी बन्दी पस्ता है । यही क्या खीर बुरमा नहीं खाती थी ये दण्ड उसने अपने से ही कहे मन बीर्य का पस्ता पकड़त हुए प्रकट में इतना सर कहा—

‘भीरब बर बैटी हमेपा ये दिन नहीं रहेमे ।’

वह पका माया पीछे बीबास से भ्रम गया, वहीं भायत में उस नींद ने समेट लिया ।

क्या रोटी न खा सकती । उसके कौमल निश्चल हृदय बर पड़ा



भाटी बोझ उसे बार-बार रूपासी बना रहा था। अपने बापू से धिपान के कारण—वह बोझ उसे घन्डर ही घन्डर सुबका रहा था। वह सोचने लगी। बार दिन बार जब ऊमरे खाली होंगे तो मेरे अकस्मिक प्रकट होना उस समय मेरे बापू को कितना दुःख होगा और वह बार ही हुई परती शाम मेरे लिए बर्णित रह जायेगी। यही कुछ सोचते-सोचते वह भीर से उठी सीधी खेठ की तरफ चमपी।

रात पट गई थी। घाबा चौब घासमान में हल्का प्रकाश फैला रहा था रूपा खाली कमरों में अपने हावों से धीरे-धीरे बाजरी के बाने बाने रही थी। क्यों-क्यों वह जाने बड़ती जाती उसके हृदय का बोझ हल्का होता रहता वह कल्पना करने लगी जब यहाँ बूटों वाली बाजरी भूम रही होगी वह उसकी छाया में बैठ अपने बापू के साथ मठीर जाती हुई यह बात बतायेगी। उसका बापू एक हस्त्री-सी चपत उसके मात पर लमा कर कहेगा—

‘धरी पगली मुझे क्यों नहीं बताया। उसने एक हाथ अपने पास पर रखा था कि उसके मुँह से एक ग्राह निकल गई।’

तड़कड़ाहट एक बेहोशी पानी-पानी की भीमी घाबाज। और सब कुछ धास।

प्रातः चौबटी ने देखा रूपा की खटिया खाली पड़ी थी और से घाबाज लमाई—रूपा ! रूपा ! खटिया !

कोई उत्तर नहीं मिला। वह पर बिम्हों को देखता भानता खेठ गया। वहाँ जो कुछ उसने देखा और प्यासा न देख सका। उसका सरीर मुन्न हो गया। एक ग्राह के साथ वह फिर गया जिसके बार फिर कमी नहीं उठा।

लोगों ने देखा—गधनाम की लकीर थी। रूपा का सरीर बिसभुल हरा हो गया था। बिड़िया उड़ गई थी। बिम्ह सेप था। पाठ में बाजरी का बँला पड़ा था।

उस अन्ध धान भी एक ही कण्ठी खेजड़ी है। सोन करने है वह

## ● काशी खेल ●

कभी बदरंग नहीं होती नित्य हंसती रहती है मयाङ्ग मास में वहाँ  
 मेसा लगता है। कबारी लड़कियाँ जाती हैं 'क्या' को बेबी मानकर  
 पूजती हैं। उसके मीठ माती हैं—

‘भारी बाबोजी बुसाने  
 क्या बर्हि

परे पवार ।

अब वहाँ प्रकाश नहीं पड़ता ।



## कस्तूरी-मृग

'धमी छोई नहीं डा० ?' कहते हुए डॉ० ब्रजपाल ने अपनी यह बीगी लैडी डा० सुभा के कमरे की बलती बत्ती की घोर देखा बाप कम की घोर बढ़ गये ।

डॉ० ब्रजपाल शय्यरोग के विशेषज्ञ हैं और बस्ती के लोग कहते हैं— प्राय से तीस वर्ष पहले सुभा मैडिकल्स कॉलेज से डिग्री लेकर सरकारी नौकरी को त्याग इनकी प्राइवेट क्लिनिक में आई थी । दोनों की उम्र साठ की पूरा की गई इस रही थी । दोनों आपसी सहयोग से मातृक कल्याण के लिए भी रहे थे जिता रहे थे ।

डॉ० ब्रजपाल धीमी मति से अपने शयनकक्ष में घापस जैसे गये और उनके कमरे की बत्ती बुझ गई । लडी डॉ० सुभा के कमरे की बिटकनी खुलने की आवाज हुई और वे बरामदे में गयी दरवाजे से बाहर आई । टुड्डी के नीचे का नाँव बुझाने के कारण कुछ घटक गया था । साँबें मास भी सगता था धमी तक उनको नींद नहीं आई है । रात का आखिरी पहर चल रहा है । लडी का अनुमान उनके वर्णिते हाथों से सगाया था सगता है जो उनके बेक्टर में टुस से मये हैं । वे बरामदे से उठती और कड़कती ठंड में भी नये पाँव डूब में घोस के उमरे बलों पर चलने लयी ।

डॉ० सुभा जब भी बरेयान होती हैं इसी प्रकार नुमती हैं मूक हो जाती हैं बाग की सिलती रात रानी पर नजर कम जाती है या फिर दृष्टि शून्य में दूर कहीं घटक जाती है । बड़ी मजीब सामोरी-नी लयती

है, उस समय जैसे रात के तीसरा पहर समुद्र में ज्वार भाटा घाटा है फिर सभी कुछ चुप चुप शान्त हो जाता है। यह जाती है महर्षे को घाँट पानी की सतह पर ससबटें बनाती है मिटाती है। पूर मधुमों की धम्बीरी बस्ती में सिंवार पीकते हैं, समुद्र की लहरें भीमी बबराहट पीवा करती है।

डॉ० मुबा की बिन्दयी भी कुछ इसी तरह से सुनसान है। कभी-कभी ज्वार घाटा है हिनोरें बेता है, बाठें मारता है उनके बूढ़े दिन पर अधिक समय तक नहीं टिकता। भाटा जैसे अधिक स्पाई होकर भाटा है और घाब भी उनका बुढ़ा दिन जामोषी में एक 'टीस' बेता है धम्बीरी सी। जब भी वह 'टीस' उठती है, बरबराहट होती है और हारकर दृष्टि धून्य में घटक जाती है।

उनके हाथ संभवत फलक को खोलकर धाने बड़े और फुटपाप पर पीरे-पीरे बढ़ने लगे। दूर बने गोल चक्कर तक रात की कालिमा घपना घाँचस फेंसाकर लड़ी थी। दूर-दूर तक इस्पात के तारों से जुड़े खम्भों पर रासनी के पंच बुड़े-बुड़े मूक मुटे-मुटे से लटके हुए थे। सगता या रात की कालिमा प्रकाश को प्रहस करन के लिए घपना घाँचस ऊपर की ओर बढ़ा रही है, घाँचस फेंता वा पर प्रकाश नहीं हो रहा वा। घामर खम्भें लूट-लूटे से घपने न मूक पाने की असमर्थता पर झुनाये बैबसी लिए खड़े थे।

तभी उनके पाँच ठिठके। उन्हें सबा कि उनके भारी पाँच धाने स्वतः ही बढ़ लगे। मेर्षों से कर्लम्ब की ली चमक उठी। बेला एक बुढ़ा करण्ड रहा है, पास ही में जून की कं पड़ी थी। उनके हाथ अपरिचित बुड़े के कम्भों पर जा लगे। खाली रह-रह कर बढ़ती वा रही थी।

किन्ती तरह वे बुढ़े को सहाय देकर किसनिक में से घाई। चौकीबार को बबाकर पानी पर्य करन को कहा और डॉ० ब्रजपास के वरबाजे पर लयी बंटी का दबा दिया। वह फिरर फिरर बब उठी। डॉ० ब्रजपास सर्षी से बचकर बुँधियाठे से बाहर धाने और भारतवष 'ऐनी ईमर्बेन्सी

कॉस' पूछा और डॉ० सुधा ने स्वीकृति में सिर हिला दिया ।

बुड़ा विस्तर पर सर्ती से कांप रहा था । रू-रू कर खांसी के दौरे पड़ते और बसगम के साथ जून के गहरे बकौले निकल पड़ते । डॉ० ब्रजपाल उसे देखने के बाद काफी धम्कीर हो गये और 'नो होप' कह करके उन्होंने चार हफ्तेकबल कुछ समयान्तर से समाये और डॉ० सुधा से कहा 'इफ यू डॉट मारिग्ड कृपया मरीज के बेहरे को साफ कर लीजिये । उसकी दाढ़ी तथा बसे तक बलमम व जून लगा है । फिर जठ रुक कर 'सोरी' कहा और अपने कमरे की ओर चले गये ।

"बीकीराट, चार कमल से घाघो जरा जस्वी' कहकर डॉ० सुधा ने टेबिल लैम्प पास खींचा और 'गॉज' गर्म पानी में डुबोकर मरीज का बेहरा साफ करने लगीं । न मासूम कितने महीनों की बई बलमम व जून से सनी दाढ़ी जो लूज गई थी घीने में काफी समय लगा । पर ध्यानक उनके हाथ बमक मये । बुड़े के झुर्रियों भरे हाथ कांपने लगे । उन्होंने बत्ती से लैम्प बजास्वाम पर रक्त किया दृष्टि धीरे की बिड़की में से बाहर घोस से गीसी छड़क पर सूम्प में लो गई । रू-रू कर वे मरीज की धोर धोर से देखती धोर फिर सूम्प में लो जाती । छड़क की रोपनी के बन्ध के चारों धोर पतले मित्र-भिन्ना रहे हैं । उनका मन भी इसी प्रकार नुनमुना रहा था । एक घड़ी-सी 'टीस' फिर जगर रही थी । रात की कामिमा घांचल फिर लम्बों से प्रकार की भीष मांजने लये ये पर वे मुठे-मुठे वे छहारे बुम्मे-बुम्मे धरं लड़े थे । दूर प्राची में धीरे धीरे लाल लकीरें उभरने लगी । उनके हाथ बजने लगे । वे बापस मुड़ी पर बेहरा लटक गया था झुर्रियों जैसे बड़ गई थीं घांछें जैसे मिडाल हो गई थीं । हाथ कांप रहे थे । बुझाने की चमड़ी में सलबटें पड़ गई थीं । वे मरीज के पास की चाराम कुर्गी पर लुड़क गई धोर न जात कज घांछें भरक गईं ।

'डॉ० डॉ० 'उठो-उठो देगो घाठ बज गय हैं । तुम्हारे मरीज की हामठ बहुत पराब हो गई हैं । बह बेहोश है । डॉ० ब्रजपाल डॉ०

सुबा को बगा रहे थे। उन्होंने चौंक कर देखा-उसका स्टाफ झूटा पर धा गया था। नर्स मरीज के बिस्तर के पास लड़ी थीं। डॉ० मरीज पर झुके हैं। वे सोचने लगी कैसा भयानक स्वप्न था। किसी बहुत बड़े पुत्र पर वे डाली जा रही थीं किसी छाया के पीछे न माझूम बर्षु घोर फिर पुत्र काफने लगता है पक-पक बढ़ रही है। भालते-भायते प्राय वाली छाया पुत्र से नीचे गिर पड़ती है। बिशाम काय काली कोई भीज उनके ऊपर से गुजरने ही वाली हैं। वे संम्मसी घोर लपक कर पलंग के पास पहुँच पाई। डॉ० ब्रजलाल व नर्स घाबिरी काशिध मरीज को बचाने की कर रहे। कुछ ही मिनटों बाद मरीज की घाँसें कुली एक हम उन्हें बुझनी पालें, किसी घोर से अणु लकी घोर पुतलियां गिर पड़ी। डॉ० ने हाथ टटोला घोर मूक होकर मस्तक नीचा करके एक गर्जित सांस छोड़ी घोर मरीज को सर तक बक दिया। नर्स उपकरण उठाने लगी। वह भी सब-कुछ समझ गई। डॉ० के कदम घाबट घोर की घोर बढ़ पड़े। उन्हें लगा कोई मारी भीज उनके कन्नेबे पर चम रही है—रहा रही है। कमरे की दीवारों जैसे सिमट रही हैं। वे बीच में घा गई हैं। फिर वे अपने सोने के कमरे में सड़कड़ाती-सी लसी पई।

“मैडम मरीज की ललाठी में यह किताब मिली है इसे कहाँ रखा जाय ? सिर हिला कर देखा तो एक नर्स हाथ में किताब लिए पुछ रही है। उन्होंने उसे अपने हाथ में ल लिया घोर जाने के लिए इशारा कर दिया। चलते पसटने पर पता चला वह एक डायरी थी। वे सो गईं पर जन कहाँ ? उनकी पीठ बर्ब करने लगी जानक प्राय उसमें इतनों टापट भी नहीं बची है कि बदन का भार बहन कर सके। फिर जैसे कुछ होच प्राया घोर जंगलियों ने डायरी के पन्ने उल्टे डायरी काधी पुरानी की बीख-बीखें। प्राय स पेंटीस साल पहले की वारीस का पन्ना लुता।

‘प्राय का बाल भी किठनी भङ्गुत होती है। सुबा धर कमिज छोड़ कर येडीकम भाई में डायरी पढ़ने इत्ताहावाद जा रही है। घोर

समता है कोई अम्बर से घंटादियों को जाकू से तराफ रखा है। नीकरी छूटे तो वो सात हो गये। अब तो बस भूस-ही-भूख पर इस भूख में भी एक 'टीस' उठती है। बर्ब उभरता है। घाब सुबह से कैं भी बढ़ गई है। समता है मूँह से सात काले खून की पनाम खुस गई हो। गुन, मेरी 'मुभ'। चाहता भी हूँ अब तुम्हे याद न करूँ चाहता हूँ खून की इस कैं के सात इस 'टीस' को भी बाहर निकाल दूँ। पर चाहा क्य हो पाता है? खून तो अधिक निकल रहा है पर यह 'टीस' एक बने कुहरे की तरह फैल रही है। घा । फिर घाये काले से बच्चे बे—घायर खून हो।

डॉ० सुभा की गजर से निकली पानी की बार फिर लक्ष्म्य को भिपो गई। जाने क्य सुम्य में घटकी घाँवों की पुतलियाँ बिरना भूस गई। सोपहर को डॉ० ब्रजपाल ने डॉ० सुभा के शरीर को बर्फ की सिम-सा ठंडा पाया। घाँवों के दोनों ओर कनपट्टी पर घाँव का सात पानी बहकर मुख गया था।



○ चर्मरोग रोगी

## एलवम के भीतर

आज राकेज ने मुझे कहा, "कमलेश ! तुम्हारा नाम तो ऐफ़फिसकट-एट बानि ब्यबित होना चाहिये था । हाँ यथार्थ में यह नाम मेरे लिए उपयुक्त ही है । मैं उसके मनोविश्लेषण को राब देता हूँ । हालाँकि मैं भी कईयों के चेहरे पर बकावट की चिकन देखता हूँ । वे मुझे भी सूखे, किसी असाम्य रोग से पीड़ित घौर अपनी कूठाघों के बिकार हुए से प्रतीत होते हैं । घन्टर केवल मेकमप का है । कोई क्रीम स्नो मजकर अपनी भुरिमा मिटाना चाहता है । कोई हँसकर अपना मम घुसना चाहता है घौर कोई एकान्त में प्रकेसा घाँसु बहाकर अपने दुःख को विसारना चाहता है घौर मैं । नुमसुम अपने कमरे में पढ़ा-पढ़ा अपने घापको मन ही मन में कोसता रहता हूँ घौर फिर कहीं दूर मायना चाहता हूँ—एक ऐसे बिरान घौर बने बंगब में जहाँ कम से कम भूबसुरत बक्स नबर ब घावे ।

माता नारी सृष्टि की जननी है । वह माँ है । घर्माङ्गिनी है । बीरान बंगस में कूकठी कोयस है । घर्मेरी दुनिया की रोखनी है । लेकिन क्यों ? मेरे मन में यह सब ब्यर्थ बिचार घाते हैं । क्यों यह सब एक बकोसला घा प्रतीत होता है । क्यों मुझे यह उपदेश एक बिनीना-सा महसूस होता है । मैं तो केवल एकान्त में पढ़ा-पढ़ा अपने घापको जबरन सारखना देता हूँ । हाँ यह मानकर, मुझे कुछ भैरव घबस्य होता है । शरीर में मति घाठी है । बिन्दपी से कुछ मोह होता है । वह क्या ? प्रायः दुनियाँ में सब मेरी चख ही है । भुक में घौर उनमें कोई घन्टर नहीं है । घन्टर क्यों हो ?



मैं प्रकृति पढ़ता हूँ वे भी पढ़ते हैं। मैं पाय पीता हूँ वे भी पीते हैं। मैं जिस बाताबरख में रहता हूँ वे भी उसी बाताबरख में रहते हैं। मुझे भी प्राकृतिक प्रगति के प्रति मोह है, मयाब है और उन्हें भी। इसके अभाव में अज्ञानता ब्रजन है प्राम उतना ही बुराई में है। वे मेरे जैसे ही तो कपड़े पहनते हैं। बाल संभारते हैं। प्रगतिवाद की चर्चा करते हैं। फिर मुझे भी एक दिन मरना है और उन्हें भी। अब अपनी कम जोरी अलग-अलग छुपाने के लिए बीप-बजाव करते दिखाई देते हैं। एक बूढ़ा आइन्बर का पर्वा बालकर। फिर 'राकेस' ने मुझे ही 'व्यथित' क्यों कहा? हालाँकि मैंने अपना दर्द हृदय के एक कोने में ही छुपाये रखा है उसकी अनुभूति केवल मुझे ही है। मैंने धारतक किसी के सम्मुख अपनी कमजोरी अपनी बेबसी पर से पर्दा नहीं उतवाया है। कुपचाप अपने फीड़ की पीड़ा का दर्द सहन करवाया था रहा हूँ। न चाह मरता हूँ न। जीवता हूँ और न ही मौजूद रहता हूँ।

राकेस ने मेरे जीवन में कौनसी अनियमितता देखी? जब मेरे हाथ बिखर के संकेत देते और जब मेरे बुद्ध के मौजूद रहते रहे। मैं टीक समय पर अपनी स्फूर्ति पर जाता हूँ अपना कर्तव्य समझकर कार्य करता हूँ। कानून में हर विचारों से शान्तिता से पैदा जाता हूँ कानून के पूर्व लेसन भी तैयारी करता हूँ। यह बसता हूँ तो हर घोरता को देखकर अपनी पलकें झुका देता हूँ। फिर भी अपने आप की सुविधित सम्य और समाज का सम्य मानकर ही नहीं बल्कि मेरे व्यथित होने का ज्ञान किसी को न हो।

फिर अपने जैसे कह दिया? अपने मेरी दर्द भरी तारों को क्यों रोकता। अब मेरे मन में उन तारों को मन में धारों के लिए उचित कहा है। मैं तो किसी की याद बचना चुका हूँ। उसे भूलन का प्रयत्न कर रहा हूँ। एक नये जीवन की ओर अग्रसर होना चाहता हूँ। मुझे किसी से कोई धिक्का-धिक्कायत नहीं है। है तो केवल अपने आप से। जब मैं किसी के सम्मुख जाकर अपना दुःख रोया है। जब मैं किसी से क्या भी भीक

मांगी है। मैंने जब इस दुःख का हिस्सा बौटने के लिए प्रयत्न किया है। फिर यह भिन्न कहलाने वाले कृत्रिम सहानुभूति प्रदर्शित करने वाले मेरी मामनाओं से बिलबाड़ क्यों करते हैं? मैंने इनका क्या बियाड़ा है। क्यों मुझे उस बटना की याद दिसाकर इस घान्त रात्रि में अगाये रखते हैं? जबकि सारे गहरी निद्रा में छोटे रहते हैं और मैं तार गिनता रहता हूँ। मैंने अभी तक किसी के साथ कोई बुराब नहीं किया। किसी के बिस को ठेस नहीं पहुँचाई। मैंने कुसुम का भी कोई अनर्थ नहीं किया। मैं तो हमेशा उस पर अटूट विश्वास ही करता आया बा। उसने ही मुझे सिखा "मेरी पढ़ने की बहुत इच्छा है। मेरे पिताजी अकेले हैं। यूँके हैं। स्मरण रहते हैं। जीवन में सेक्स ही तो सब कुछ नहीं है। एक कर्तव्य भी है। एक ममत्व भी है और अपनापन भी कुछ मायन रहता है। अतः आप मेरी सबबूरी को ठम्के दिमाग स छोचकर कुछ अर्सा और अकेले में व्यथित करवो। मेरे पिताजी अब अधिक बिन्धा नहीं रह सकते। उस बीरान में मेरी पढ़ाई की इच्छा भी पूरी हो जावेगी। कर्तव्य और ममत्व से भी जी भर जावेगा। फिर आप हैं मैं हूँ और सेक्स।"

उस पत्र के बाद मैंने कुछ अर्से तक और अकेले रहने के लिए हँड़ संकल्प कर लिया बा। मैं तो जीवन में हमेशा अकेला ही रहता आया बा। बचपन में ही माँ की छाया अठ गई थी। पिता ने चहर के एक कोने की बोजिब में मुझे बाबिब कर दिया बा। वे माह में एक जो बार आकर मेरा हास पूछ जाते थे। मैट्रिक पास करने के परचात् उनका भी बेहाल हो गया और आगे की पढ़ाई के लिए कुसुम के पिता ने मेरी मदद की थी। एक अनाथ समझकर, अपने बीस्त का पुत्र समझकर फिर उन्होंने मेरी लीब बुद्धि के कारस और एक ही जाति का होने के कारण, अपनी इकमीठी बैटी की घादी भी मेरे साथ कर ली। और मैं उनके अहसानों से लदा बा रहा बा। कुछ बीस भी नहीं अकटा बा कुछ कह भी नहीं सकते बा। फिर उन्हें व्यापार के सिलसिले में यह नगर छोड़कर जाना पड़ा। और मैं सरकारी नौकरी की जाबदा दे ली

पड़ा रहा प्रकेश। एकान्त बीचम बिताना तो मेरा बन्धनभ्राम्भार से  
 चला था ही रहा है। कुसुम के पत्र मे मेरे हृदय में सहृदयता की बपह  
 ग्रहण की। वह मेरे और समीप था गई। क्योंकि उसने अपने त्वाव  
 और अपनी भावनाओं की तस्वीर मेरे सम्मुख रखी। मैं इतना पत्थर  
 बिस बोझे ही था कि किसी की भावनाओं को पैरों तले कुचम हूँ। मैंने  
 तो उस वक्त अपने आपको भ्राम्यसाली माना था कि मैं एक ऐसी औरत  
 का पति हूँ जो सुन्दर ही नहीं बल्कि सुमिसल भी है। उसका हृदय  
 पत्थर नहीं है। एक मोम के समान ही है। हामीकि उस वक्त मेरे  
 विमान में यह भी विचार उठे थे कि 'सुन्दर औरत जीवन में प्यार के  
 लिए प्यासी भटकती है। वह अपनी सुन्दरता के बंध के कारण प्यार  
 की प्यास तृप्त करने में असमर्थ रहती है। यह केवल वेदना ही होता।'।  
 मेरा यह सोचना उस रोज उचित था ?

लेकिन एक बात धमी तक मेरे मन और मस्तिष्क को कीचती है।  
 वह क्या ? वह पढ़ी लिखी थी। धाम के एटीकेट और बबनते हुए  
 नियमों से व्यवस थी। माना। मैं जिस सहर में रहा हूँ, यहाँ ट्रीफिक  
 की भीड़ नहीं है। बसों और ट्राओं की कतार दिलाई नहीं देती है।  
 रोजाना की बदसली हुई फैशन नहीं। धामोब-धमोब के इतने शासन नहीं।  
 लेकिन जिस सहर में कुसुम रहती थी वहाँ यह सब तो था। धमर  
 उसको इन्हीं वस्तुओं से प्यार था तो मैं कम बीकार बना था ? जिस  
 परिस्थिति में धारी हुई थी, वह स्थिति धार में तो उसके सामने नहीं  
 रही। वह धमर केवल मुझे इतना ही लिख देती कि अपनी धारी एक  
 नमसूची की व्यवस्था में ही हुई थी। उस समय मैं नाबासिग थी। जिसके  
 कसतस्वरूप को हृदय धामर में एक नहीं सकते। मैं सन्ने दिन से कहता  
 हूँ कि मुझे कोई ठेक नहीं लगती किसी प्रकार की धामरि भी नहीं  
 होती और मैं तनाक नियम धामर करने में कोई हिचकिचाहट नहीं  
 करता।

धाम ! यह बड़ी नहीं धाती। धाम ! मैं धामरक इन्टरव्यू के लिए

नहीं जाता। अगर जना भी गया तो कम से कम दोस्तों के साथ उस होटल में नहीं ठहरता। लेकिन सब अपने आप हुआ होती के फलस्वरूप। मैं मान गया कि मनुष्य कुछ नहीं करता। कुछ काम स्वयं ही भी हो जाता करते हैं। काश ! जीवन का पराकाष्ठ इस प्रकार नहीं होता। काश ! मुझे उच्च पा प्राप्त करन का मोह नहीं जाता। लेकिन उस दिन जीवन में सब बातें पहली बार ही हुई थी। वह भी इस प्रकार।

मैंने जीवन में कभी धराब सुभा तक नहीं था। लेकिन उस रोज दोस्तों के प्रभाव में था ही गया। मैं तो नारी को एक भद्रा की मूर्ति धीरे धीरे मानकर चलाता था। हालांकि मेरे पास लड़कियों के दूखन नौ कई बार घासे थे। लेकिन मैं नहीं किये। यह मानकर कि मन पापी होता है। मैंने की परत बमते देर नहीं समती है। मरे चरित्र की धमिल छाप जो कालज मोहमे धीरे साधियों पर छाई हुई है, कहीं पूसरित न हो जाने कोई डुर बँठी मुझे अपना समझती है उसके साथ दुपार नहीं कर बैठूँ। उस कुसुम के साथ जब मैं गमी की सुदृष्टि व्यतीत करने हेतु उसके पास जाता। वह बहुत बड़ मुझसे एक साथ भी बुरा नहीं होती थी। मुझे मित्त-मित्त प्रकार के पकवान अपने हाथों से बनाकर खिलाती। मेरे लिए कीमती कपड़े छाती। जब मैं उस स्थान से चलाता उस बहुत कुसुम के प्रीतु करते तक नहीं थे।

जब हाटम मैंने न जाकर एलबम हमसोपों के सम्मुख रखी उस वकत मैं किर्कल्लव्यमूढ़ सा हो गया था। मैं यह सोच भी नहीं सकता था। मेरे साधियों ने एलबम देखकर फौरन अपनी इच्छाएँ प्रकट कर दी थी। और मैं एक घबराह उसमल में खो गया था। फिर यह साध कर एलबम देखने लगा कि कम से कम एक नजर तो बौझाई। पति काथी की भाँति देखकर लौटा हुआ। जफ ! वह सोचना भर लिए किन्ना बातक विद्य हुआ अथवा मात्र ऐसा दिन नहीं जाता। मर धीरे कुसुम के बीच पर्या पड़ा ही रहा तो वह धनसा ही था। क्योंकि उस एलबम की धीरलें भी किसी की बीचियाँ धरस्य होंगी उनका भी भर होगा, पति

होवे । और उनके परिवारों और उनके बीच परदा होना । उस परदे की छोट में उनका जीवन निर्बाध गति से चलता रहा होगा, वे व्यक्ति भी तो मेरे ही तरह होंगे । उनका भी तो डूबना होगा स्वाभिमान होगा । अपनी बीबी के प्रति बिदबास हुआ । फिर मैंने जान बूझ कर यह सब क्यों किया ।

मैं अगर महान् होता तो बरस्य ऐमबम हाथ में धामता ही नहीं । और यह धोखता भी नहीं । क्या ? जीवन क्या है ? मुक्त क्या है ? बड़े पहर क्या है ? जीवन की धनुमूर्ति कंस प्राप्त होती है ? हाँ यह सब प्रश्न मेरे बकिमानुशी बिचारों के संस्कार ही थे । मैं स्वयं उसी दिन फिर चुका था । जिस चरित्र का मुझे धड़ था । वह उसी वक्त, बम्ब अणों में बह जाता था । फिर मुझे कुसुम की तस्वीर बसकर क्यों रोप पैदा हुआ ? किस को एक टैल सी क्यों ममी ? बोड़ी बैर के लिए घोड़ों का प्रकाश क्यों सुप्त हुआ । सिर क्यों चकरान सगा ? मैं अपनी दोनों प्रति मसकर, घराब का गया होना महसूस क्यों किया ? वह स्वप्न नहीं था । क्योंकि मैंने एक हाथ से चुटकी भरी कि मैं होय हवास में हूँ मयथा नहीं । क्या मैंने यह जानबूझकर नहीं किया था । फिर मैं जो धपत घाप की चरित्रवान मानकर चलने वाला हर औरत को धडाममी और देवी समझने वाला कुसुम को कुलाने के लिए कह दिया । केवल यह मानकर कि सच्चाई बोड़ी बैर में सामने आजायबी । मुठा प्यार, बैरे से शमा की चीछ माँगना । ममत्व और सिता पिड़गिहावेमी । और मैं उस दर-दर को ठोकरें खाने के लिए टुकारा हुँवा । क्योंकि मैं महान् हूँ । मेर मे चरित्र की धमिट घाप है ।

वह कारी रात । और वह आलीशान हीटस । और उन टयूब माइनों का प्रकाश मेरे जीवन का सभिभाव बन रहा था । एक तरफ परबोमति की लालता और दूसरी तरफ जीवन का कड़वा घूंट ! हवेमी में सीधी घाम्प रेता और प्योतिव का फसावेण यह सब बिगठ घटनाएँ मेर रिम में हसबस मचाये लगीं । मुझे उस बड़ी महसूस होना सगा था कि वह प्योतिव घाकि

पोगायन के। एक बोला एक घन्चबिस्वास था। इसका को कमजोर और बुबकिल बनाने के काम हैं।

एक तरफ सिगरेट बस रही थी और दूसरी तरफ मेरा दिल। एक टैक्सी धाकर होटल के घामे जाकी हुई। मैंने उठकर देखा-वही कमल इस रात्रि में अपनी मर्यादा व ममत्व को छोड़कर होटल में चुसी। और इस वकत मैंने उठकर जीवन का पहला ड्रामा बसना शुरू किया जिसकी रिहर्सल मैंने पहल कभी नहीं की थी। मैंने लाइट घाफ कर ली। और पर्लंग पर रबाई में अपना मुंह छुपा लिया। होटल को पर्लंग के पास इस प्रकार रक्त दिया कि आनुन्तक यह समझे कि नया छाया हुआ है।

वह घन्चर चुटी। लाइट बसाई। जैसे इमेया ऐसा ही करती हो। एक स्पायी सबस्य की भांति। यह सब मेरे लिए यथेष्ट प्रमाण थे। और फिर वह मेरे पर्लंग के पास भाई और बोली 'अपने-ले ही पी गये। इन्तजार तक नहीं किया।

इस वाली पहचानी घाबाब ने मेरी रही सही बर्य सक्ति पर कुहप छा ना दिया। और कून सबस पड़ा। भटके से रबाई बुर फेंक ली। और कुसुम मुझे देख मुक्ति सी बन गई। उसका बेहुरा पीना पड़ गया शरीर में कपकपी होने लगी। माइकता बरा बेहुरा अन्द अलों में भुर्छी मया। मानो ! जैसे रक्त जम गया हो चढ़कने बन्व हो गई हों घममा शैतान के हाथों में पड़ कर निर्जीव सी हो गई हो।

और मैंने ऐमरम पर अकित रकम उसके हाथों में घाम ली बिना कुछ कहे एक जहर का बूट पीकर। यह मेरी सहन सक्ति भी या कुसुम की। वह बिना कुछ कहे-नलात मनस्विति से लौट गई और मैं विस्तर परपड़ा-पड़ा धारम-इत्या करने का क्वाब लेने लगा। जीवन में सब क्या घप रह गया। सब कौन पबोनाति की इच्छा कर सकता था। बिस्म के सारे स्नापु बफ के समागु बम मये थे। वह बिल कितना जमकर और मामिक पीड़ा पहुँचाने वाला था। केबल मैं जानता हूँ मेरा दिन जानता

है, जिसका भान धीर किसी को भी नहीं है धीर न मन्विय में किसी को होया।

लेकिन वही कुसुम घाब भी मेरी मजदूरी से गिरी नहीं है। मैं उसे घब भी चाहता हूँ। घब भी मेरा हृदय उसके बिना घुना है, प्यारा है धीर उसके लिए तड़पता है। भाखिर क्यों ?

उस दिन की रात्रि एक घबोड़ मनस्विता में गुजारी। सुबह इन्टरम्यू में नहीं गया बल्कि कुसुम के घर ही गया धीर देखा उसके घर में कुहराम मचा हुआ है, उसका बूढ़ा पिता रो रहा है। धीर वह धान्य चिर मित्रा में सोई हुई है। उसके बूढ़े पिता ने मुझे एक बन्ध लिफाफा दिया। उस पर मोटे अक्षरों में लिखा था कि इसे केवल कमसेक ही पढ़ें। वह पत्र इस प्रकार था—

मेरे देवता।

जीवन क्या है ? केवल एक खिलौना। ममत्व क्या है ? एक जून का रिस्ता। प्रेम क्या ? एक धान्यरिक बन्धन जिसे प्रकट नहीं किया जाता है केवल मन मन्धिर में सुरक्षित रखकर पूजा की जाती है। लेकिन मजदूरी एक बहुत बड़ी चीज है। मेरी भी कुछ मजदूरियाँ थीं। जिनके बरा में होकर मैं मुँह सोम नहीं सकता थी। कुछ कर भी नहीं सकती थी। केवल विपवासपाठ पर विस्वासपाठ ही करती था रही थी। तुम तुम समझते थे कि मैं एक पनाहूब बाप की ईकतीली भेटी थी। धाम धपकित इसी बोये में हूँ देखते थे। धीर हम भी इस पर्व को हटाना पसन्द नहीं करते थे। क्योंकि इसके धारी बन गये थे। स्वाधिमान मर चुका था। पिता जी ने काशी बन धर्मन किया था। मैं उस बन से इतनी धम्भी होकर घाये बड़ रही थी कि पीछे मुड़कर देखना बबारा नहीं होया था। कीमती राख ब पीने लयी थी। उसके बिना दिन घर कुछ कर ही नहीं सकती। परिधिपठियों ने पनटा खाया। मेरे पिता जी बनबान से कर्नाल एक रात में ही हो गये। मेरी धीरों के नामने धयेरा छा गया। एक दिन मेरी एक लहमी इत होटम में मुझे ते पर्व धीर फिर मैं इस रास्ते

की मुसाफिर बनने लगी । लेकिन जब आपका ध्यान घाटा- उस वक़्त बरत में घाग मुतगने लपटी । मैं सोचती एक पबित्र ब्यक्ति के साथ किठना बड़ा भोला और फरेब हो रहा है । वह मुझे अपने जीवन का साथी समझता है । और मैं अपने आप से पूछती कि 'कुसुम' क्या तुम औरत हो ? नारी हो ? अर्धोपनि हो ? मातृ हृदय को क्यों कासिमा लया रही हो ? उस वक़्त मैं अपने आप से झुम्झना उठती और कहती मैं सब कुछ हूँ । मेरा बिस्म कमसेदा के लिए लुंवार नही रहा लेकिन धारणा अब भी उसी के लिए ही है, जो उससे प्रमग नहीं हो सकता है । बिस्म मस्मासाठ हो सकता है । लेकिन धारणा नहीं । इस जीवन में न सही दूसरे जन्म में भी मेरी धारणा उसके लिए ही है ।

इसके अलावा मैं यह भी जानती थी कि एक रोज़ अचभियत सामन अबस्य घावेयी चूकि पाप प्रकट हुए बिना नहीं रह सकता । मने बहुत पूर्व निरचय कर लिया था कि मैं सबकी नजरों से गिर सकती हूँ लेकिन आपकी नजरों से गिरना नहीं चाहती जब वह बड़ी घावेगी । उस रोज़ कुसुम नहीं रहेगी । वह बड़ी धा मई । मुझे केबस इतना ही है कि मैं उसी वक़्त क्यों नहीं मरी । धायद इस पत्र लिखने के लिए ही ऐसा हुआ ।

मेरे धाराध्यरेष मैंने तुम्हारे साथ धोखा और कपट अबस्य किया । लेकिन मन से नहीं । हृदय में केबस तुम्हारी मूर्ति ही रही । केवलबिस्म का बिलय हुआ लेकिन धारणा का नहीं । अब मैंने उस पाप का इष्ट मुपत लिया है । मुझे माफ़ कर देना । अन्यथा मेरी धारणा को कहीं शांति नहीं मिलेगी । मेरे प्यारे कमसेदा यही मेरी अन्तिम इच्छा है । यही मेरे लिए बंवाजल है और यही भावबत व गीता है । माफ़ करोने न ?

कुसुम

इस घटना को अब तक मैंने कब किसी के सम्मुख प्रकट किया । कब मैंने कुसुम के बारे में कहाँनी सुनाई । मैं तो केवल दिन भर अपने ही कार्यों में व्यस्त होकर अपना जीवन हवा कर रहा हूँ । भयकर अपने



है जिसका ध्यान घौर किसी को भी नहीं है और न नदिय्य में किसी को होगा।

लेकिन वही कुमुद ध्यान भी मेरी नजरों से गिरी नहीं है। मैं उसे धन भी चाहता हूँ। धन भी मेरा हृदय उसके बिना सूना है, प्यासा है और उसके लिए तड़पता है। धादिर क्यों ?

उस दिन की राति एक घबरीब मनस्विधि में गुजारी। सुबह इन्टरव्यू में गयी गया बल्कि कुमुद के घर ही गया और देखा उसके घर में कुहराम मचा हुआ है उसका बूढ़ा पिता रो रहा है। और वह शान्त, बिर निद्रा में सोई हुई है। उसके बूढ़े पिता ने मुझे एक बन्ध लिफाफा दिया। उस पर मोटे घसरों में लिखा था कि इसे केवल कमसेध ही पढ़ें। वह पत्र इस प्रकार था—

मेरे देवता !

जीवन क्या है ? केवल एक क्षिणीता। ममत्व क्या है ? एक धून का टिप्ता। प्रेम क्या ? एक धाम्तरिक बन्धन जिसे प्रकट नहीं किया जाता है केवल मन मन्धिर में सुरक्षित रखकर पूजा की जाती है। लेकिन मजबूरी एक बहूत बड़ी बीज है। मेरी भी कुछ मजबूरियाँ थी। जिनके बध में होकर मैं मुँह खोल नहीं सकती थी। कुछ कर भी नहीं सकती थी। केवल बिरवासबात पर बिरवासबात ही करती या रही थी। तुम-तुम समझते थे कि मैं एक धनाह्य बाल की ईकनीती बेटी थी। धाम ब्यक्ति इमी बोने में हमें देखते थे। और हम भी इस परों को हटाना बसन्ध नहीं करती थे। क्योंकि इसके धारी बन पये थे। स्वामिमान भर चुका था। पिता जी ने काफी धन धर्मन किया था। मैं उस धन से इतनी धन्यी होकर धार्ये बड़ रही थी कि पीछे मुड़कर देखना गबारा नहीं होता था। कीमती धार्ये धीने मनी थी। उसके बिना धिन भर कुछ कर ही नहीं सकती। परिस्वितियों ने पनटा साया। मेरे पिता जी धनधान से कबाल एक रात में ही हो पये। बेटी धौलों के धामने धंधेरा छा गया। एक दिन मेरी एक सहेली इस होटल में मुझे से पई और फिर मैं इस रास्ते

की मुसाफिर बनने लगी । लेकिन जब आपका ध्यान धारा उस बरत बरत में झला लुसपने लगी । मैं सोचती एक पवित्र व्यक्ति के साथ किठना बड़ा बोझा धीर करेब हा रहा है । वह मुझे अपने जीवन का साथी समझता है । धीर मैं अपने धाप से पूछती कि 'कुसुम' क्या तुम शीघ्र हा ? नारी हो ? धर्मादिनी हो ? माए हृदय को क्यों कासिमा करा रही हो ? उस बरत मैं अपने धाप से झुंझना उठती धीर कहती मैं एक कुसुम हूँ । मेराकिस्म कमसेध के लिए कूबाय नहीं रहा लेकिन धार्या धर नी उठी के लिए ही है, जो उससे धामय नहीं हो सकता है । निस्म बल्लासत हो सकता है । लेकिन धारया नहीं । इस जीवन में न यही मुझे धम्य में भी मेरी धारया उसके लिए ही है ।

इसके धसाबा मैं यह भी बालती थी कि एक रोज भसतियत धामने धरस्य धारैगी चूकि पाप प्रकट हुए बिना नहीं रह सकता । मैंने बहुत धूबे निरूप्य कर लिया था कि न सबकी नबरोँ स मिर सकतो हूँ लेकिन धापकी नबरोँ से मिरता नहीं जाहूती जब यह बड़ी धारैनी । उस रोज कुसुम नहीं रहेयी । यह बड़ी भा गई । मुझे केबस इतना ही है कि मैं उठी बरत क्यों नहीं मरी । धामय इस धर तिखने के लिए ही ऐसा हुआ ।

मेरे धाराधम्येध मैंने तुम्हारे शब्द बोझा धीर कपट धरस्य किया । लेकिन धर से नहीं । हृदय में केबस तुम्हारी मूर्ति ही रही । केबबकिस्म का विरुध्य हुआ लेकिन धारया का नहीं । धर मैंने उस पाप का दण्ड धुपठ किया है । मुझे माफ कर देना । धामया मेरी धारया को कहीं धाँधि नहीं मिलैनी । मेरे ध्यारे कमसेध यही मेरी धमिठय इच्छा है । यही मेरे लिए दंगारजत है धीर यही धामयठ न सीता है । माफ करने न ?

कुसुम

इस बटना को धर तक मैंने धर किसी के सम्मुख प्रकट किया । धर मैंने कुसुम के धार में कइली तुमाई । मैं तो केबस दिन भर अपने ही कावों में ध्यस्त होकर धपता जीवन हुआ कर रहा हूँ । मयकर धामने

बाली रात्रि का घम नींद की गोली लेकर सुमटा हूँ । घौर इसके प्रति रिक्त भी जब कभी सो नहीं पाता हूँ तो सच बख्त अपने आप से इन्त करवा हूँ । कुसुम का पत्र पढ़ता हूँ वह सोचकर कि क्यों न एक उपन्यास लिख दूँ । ताकि इस ब्याकुलता से कुछ तो छुटकारा मिले । साब-साब मन में उठे हुए अक्षर भी प्रस्फुटित होकर मेरी घीबों के सम्मुख एक पुस्तक का रूप धारण कर हमेशा हमेशा के लिए बसर हो जावे ।

कुसुम अपराध तुम्हारा नहीं है । अपराध मेरा है । मेरे जैसे मानकों का है । हीन मनोबुद्धि का है । झूठी मान मर्वाबा का है । खणिक प्रमाणी जीवन का है । घौर अपनी अपनी हस्त रखाओं का है । एक चीभी है, एक दूटी हुई है किसी पर डीप है तो किसी पर क्रॉस है । यथार्थ में अपन भाम्य का ही है ।

भेदिन इन सब बातों की राकेय को कब पाहूँ किसी फिर उसने मुझे क्यों कहा कि तुम ऐकफिमवटएड व्यक्ति हो ?

## तीन साये काँपते

घन से झाँकती धूप बीरे-बीरे सीझियों से नीच उतरती जली घाती है। साँझ की जामनी बेस बिचके फासे साँझ सी रात बौड़ी घाती है। मुँडेर पर बैठे कीबे काँब-काँब करते हुए वापिस सौट जसते हैं। रात यहरती जाती है।

मुन्नी सौट भायी है। उसके संझिझों की लट-लट दासान में धूँज रही है। मैं हाथों को टेजी से जलामा प्रारम्भ कर बेठी हूँ। स्टोब की सूँ-सूँ धीर बर्तनों की लट-लट तेज हो जाती है। छम्बी से निकसती भाप देखकर मैं धनचाही हँसी हँस बेठी हूँ।

“भाभी भैया धा गए ?” मुन्नी रसोईबर के बरबाजे पर धाकर पूछती है। मैं टेजी से घाटे में हाथ मारने सपती हूँ। मुन्नी अपने प्रस्न के उत्तर से धनजानी रसोई की धूप से भरी छत को ताकने लबती है। फिर बैठ जाती है। अचानक जम्मज उठा कर घामी से टकराना मुक कर देती है। मैं उसकी तरफ देखने लगती हूँ। वह मुझे धूला बेस बाँकती है धीर जामी जम्मज से परे रख बेठी है।

जामी तुम्हारी लबियत धन कैसी है ? वह कुधन-कुधन कहना चाहती है।

‘ठीक है।’

“धन्धा। जम्मज्यसक सी उठ कर वह मुक कर अपने कमरे की तरफ जस देती है। मैं स्टोब के पम्प पर हाथ रखे देखती रहती हूँ। बीरे-बीरे जसकी जम्मज की कैसी जम्मज जम्मज से — — —

मुन्नी भी अब नम्भीर होती या रही है मैं सोचती हूँ। रात नहण्डे हो रही है। मैं उठकर लाईट जला देती हूँ। बन्स पीसी-पीसी रोशनी रसोईघर की बत्तीस में बुलकर प्रतीब-सी लगती है। बासे भूरियों से बमकते हैं। एक बार उठकर बती बुझा देने की इच्छा होती है, लेकिन कुछ साँचकर बापिष बैठ जाती हूँ। मुन्नी कपड़े बदल कर बापिष आ जाती है। उसे रसोई घर की चौखट पर बैठी बैसकर मैं अनायास ही कह उठती हूँ— 'चौखट पर कर्मचार आकर बैठते हैं।

'सब भामी। बोनो बेघोपी कर्जा? हम दोनों हँसने लगती हैं। पर हँसी खोजनी सी लगती है। चुप्पी छान जाती है। हम दोनों एक दूसरे का मुँह बैसती हैं। मुन्नी दृष्टि केर कर नीचे झणूठे से कुछ कुरेबने लगती है। नीचे बैसते ही कहती है—

'भाभी जम्मा लो वो दिन मैं आने को कहूँ पये बे। आज बार हपते हो गये हैं।'

'उमका तार धाया या न कि बहु बीमार है। मैं उत्तर देती हूँ बे जानकर भी कि ये सब मुन्नी को पता है।

'बाप पी सी तुमने?'

मैं चुपचाप पतीसी में पानी डालकर सक्की उतार कर उसे ऊपर रख देती हूँ।

'लेकिन सिर्फ़ मेरे लिए ही तो कोई ऐसी बात जरूरत नहीं थी।

मैं उत्तर न देकर पानी बीसने का इस्तबार करती हूँ।

'भाभी कुछ पैसे हैं चायद मुझे कम पौस से पानी पड़े।'

हैं कुछ बाला पौर पंसारी भी पैसे माँग रहे थे।'

मुन्नी उठकर बनी जाती है। मैं सोचती हूँ इन बार सप्ताहों में हम कितनी अपठिबत हो गई हैं। आज इत साल से मेरी मोर में बेनी मुन्नी बनी इतनी अपठिबत नहीं रही। उसे मैं बिस्तुल रूपनी बच्ची सी ससमझती आई हूँ। चायद अपनी धनूति पूर्ण करने के लिए। नरेख बरा से सिर्फ़ एक बच्चे की माँग करता रहा 'बहु पूछे न हो सही तो

बहु मुन्नी को ही बच्चा बनाये हैं।

साँतले बाबूजी प्रन्दर घाते हैं। मुन्नी पूछती है। 'बाबूजी भा पये प्राप ?

'हाँ। बेटी नरेश का कोई पत्र प्राया बहु ? फिर मे स्वयं ही कहते — 'घरे चिन्ता न कर उसे पत्र लिखने की प्रावत ही कम है।

मैं सोचती हूँ इन भुसाबों की कितनी जरूरत है बीने के लिए। नरेश की प्रावत की कि बहु हृषते में वो पत्र मुझे लिखा करता था। मैं जाना समा बेसी हूँ। मुन्नी और बाबूजी चुपचाप जाना सा भेते हैं। बाबूजी ऊपर चले जाते हैं उन्हें सिगरेट की तसब होयी। मेरे सामने सिगरेट नहीं पीते। मुन्नी भी अपने कमरे में चली जाती है। जब मुझमें इतनी हिम्मत नहीं रहती कि चौका-बर्तन साफ करूँ। बर्तन इकट्ठे करके रख बेती हूँ। साइट कुम्हाकर रसोई की साँकल चढ़ाकर बाहर भा बैठती हूँ। मुन्नी भी अपनी जाट पर पड़ी है। मैं पूछती हूँ 'क्यों मुन्नी सो गई ?

'हाँ चामी। और बहु करबट बदल सेती हूँ।

मैं उठकर बरामदे की बत्ती कुम्हा बेती हूँ। जाट पर सेट कर ओर की साँस बीचने पर कुछ राहत मिलती है। समता है जैसे सट्टर का बोझ हलता था रहा है। कुछ बेर इसी स्थिति में घाँसें मोचे पड़ी रहती हूँ। फिर घाँसें सोमकर सामने की बीबार पर गाड़ बेती हूँ। धपेरु बिचता प्राता है। मैं और ज्यादा घाँसें खोलने की कोशिस करती हूँ ओर दर्वा से जाते हैं कुछ पनियाला सा भिरने लगता है। घनजाने ही पास में नरेश को खोजती हूँ। बँगुली को पोरवे में चारपाई की रस्ती का काँटा बड़ जाता है। पीड़ा सी होती है। कुछ मजीब सा पोरवों में रड़ कता है दर्द को बचाने की कोशिस में घाँसों से पानी की चार कान तक लिच जाती है। ऊपर सोये बाबूजी के खर्राटों की प्रावाज गूँबती है।

। फिर करबट बदलती हूँ। कण्ठ सूखा-सूखा-सा समता है। पानी पीने में इच्छा दबा जाती हूँ। सीने में कुछ उधमने सा लगता है दोनों हाथ डीने पर रख सेती हूँ। हाथ के दबाव से कुछ राहत मिलती है और

कोर से दबाती हूँ। धोम की कोयिल करन पर भी धाँस घोर बुसती जाती है।

बाँस बड़का बाटा है। अंधेरा बढने समता है। हस्की-हस्की हवा बसने मगती है। नीम के सूखे पत्ते नीचे गिर कर धाँस में खड़-खड़ करते बसे जाते हैं। अंधेरा बुलकर धोस बनता जा रहा है। मरेस भी बाँस घोर अधिक घाती है उसके किसी मनस की कल्पना करते-करते रोम रोम से पसीना छूट पड़ता है। बाहर से पसीना पोंछ कर मड़मड़ सी बाहर में बुस जाती हूँ। बाहर के पत्थर नीचे पीले साज से छतरपी बासल तिरते हैं अचानक मरेस एक जहाज में बैठा जाता है मैं उसे टोकने धामे बढ़ती हूँ उससे पहले ही जहाज पट जाता है मरेस के टुकड़े-टुकड़े होकर धाकाध में बिसर जाते हैं। मैं पत्तीने से भीम जाती हूँ गसा सूखता जाता है। हिम्मत करके पानी पीने लखी हूँ पब धनजाने से मपते हैं। मैं फिर बैठ जाती हूँ। कोयिल करके अपने को बकेसती-सी मटके तक पहुँचती हूँ। हाप से मटके का डकन टूट पड़ता है रात के सगाटे में उसकी धावाज पूँज जाती हूँ। मुझे अपने चारों तरफ सावे नाचते मजर धाते हैं। बाठाबरश वीधे मसा वबोचने बीड़ता है मैं जल्दी से पानी हलक में छतार लेती हूँ ऐसी तक टण्डक-सी पहुँच जाती हूँ। मैं जल्दी से एक गिलास घोर हलक से नीचे उतार लेती हूँ। अण्ण समता है। अचानक कहीं धाँस बन्द करके अड़े होने की इच्छा होती है पर असफल रहती हूँ। बायिल मोटकर जाठ पर पड़ जाती हूँ। अबरबस्ती धाँस नीचती हूँ।

मरेस का तार धाया है वह एक धातुमयकित पीज ला रहा है। मेरे लिए। गाड़ी पहुँचने तक परेदान रहती हूँ। मरेस को एक दिग्मे से उतरना देन जल्दी से जा पहुँचती हूँ मरेस मुझे बैठाकर भी धनदेसा कर देता है घोर दिग्मे से एक मुन्दर स्त्री को सहाय देकर उतारता है।

“मरेस ! ये क्या ? मैं नीचती हूँ।

“भीट धाँस यादक मुनीठा। ये हैं मेरी रिनेटिब मुग्सा। मैं

घातकर्म स्तम्भित लड़ी रहती हूँ ।

'जो घातमी को बच्चा न ले सके वह धीरज सिर्फ उसकी रिसेटिंग हो सकती है सिर्फ रिसेटिंग । वह कहती है । मैं गस साकर गिर पड़ी हूँ कार्गों में गूबता है' वह धीरज सिर्फ रिसेटिंग ही हो सकती है सिर्फ रिसेटिंग ।'

चौककर जागती हूँ । देखती हूँ मेरा सिर नरस की मोद में है धीर मुनीता गायक हूँ । मैं धबिस्वाच से उसे जोखती हूँ धीर फिर नरस को विपक जाती हूँ ।

क्यों क्या हुआ तुम्हें धबानक ? नरस कहता है ।

मैं उसकी बात काटकर सिसकने लगती हूँ धीर कहती जाती हूँ तुम मुझे छोड़कर न जाया करो । मत जाया करो मेरे प्रीतम । कहीं मत जाया करो ।

फिर नीच उचट जाती हूँ । घाँसों से बहते धाँसु बालों को भिगी रहूँ मैं साड़ी के पल्लू से जम्हें पोंछ सती हूँ । मेरा सिर साट से नीचे सटका होता है । धब सोने की ताव नहीं रहती । नीच कोसों दूर भाग जाती हूँ । रात घातमी धाँस-सी सोने से फिसलती जाती हूँ । दूर सुबह का धारा चमकन लगता है ।

बाबूजी के पैरों की घाबाज सीड़ियों में मुनकर ब्यस्त हाकर बट जाती हूँ । मुन्नों को झकझोरती हूँ वह चौक कर जाग जाती है पहले की तरह ही हूँ करके सोती नहीं ।

मैं उस जरा स्टेजल बेल घाऊ । बस घाज बेरी हा गई है । बाबूजी लकड़ी सम्भासते कहते हैं । बाहर टॉपि के स्कन की घाबाज घाती है । मुझ सबसे पहला मही क्यास घाता है कि नरस घा गया । मैं जागती हूँ दरबाजा कोस कर दखती हूँ तांगा घागे को बसा जा रहा है । मुन्नी घन्दर कमर की तरफ जाग लगती है । बाबूजी जासते हुए बाहुर निकम जात है । गूरज फिर उमन के लिए ऊचा चढ़ने लगता है ।



●रुमू पटवा

## चौराहा और परछाइयाँ

घीर बनी होती परछाइयाँ बीरे-बीरे कम होती गईं। यह रात की कासी बाहर मेरे इर्द-बिर्द इतनी फँस चुकी है कि दूर स्थिति तक कुछ भी नजर नहीं आ रहा है। मेरे करीब के फँसाव तक यह रात की कासी बाहर बाबी फटी हुई ली लम रही है।

मेरे सीने पर कितनी साहसियाँ उभरती आ रही हैं मिटती आ रही हैं मिलती आ रही हैं। मैं बेमन उन्हें देखता आ रहा हूँ। मन इतना भर गया है। इस कोसाइस से कि तन का यह बोझ कहीं गिरवी रख देना चाहता हूँ।

मेरी उभ्र को कितना बुझाया लम चुका है यह मैं नहीं जानता पर ये परछाइयाँ जो कई सानों से देख रहा हूँ मुझे अब परेशान कर जाती हैं। मेरे कोमल तन को कचोटती रहती हैं ये परछाइयाँ। रात भर मेरी बकी हुई आँसों इन परछाइयों को देखती हैं न चाह कर भी देखना पड़ता है कितना बिबधता है मेरी।

बहु मध्यम बगिय जोड़ा अपनी बहानी मेरे बस पर छोड़ता है मैं उब जाता हूँ कभी-कभी इनकी बहानियों से पर फिर भी मुनता हूँ— बिबध जो हो जाता हूँ।

बहु मर उनके बाग के टॉन्स को निहार रहा है। बट रहा है तमो घुमन तिकमन से पूर्व इन टॉन्स को देखकर तुम परेशान हुई थी। मैं घायी क बाब तुम्हें कुछ भी तो नहीं दे सका हू। किसी तरह बस के वैसे सन्धी के वैसे बचाकर ये टॉन्स घटीब तिय और यह परानी मोंट

प्रायः इस बात की पाया हूँ तुम्हें सन्तो ।”

बह सन्तो सहम कर रह गई है। भाँसों की धाराओं को धिराते हुए बोली है ‘भाप’ धापन यह क्या किया। मैं यही पूछना चाहती थी भापसे। उस समय व्यस्तता ने नहीं पूछने दिया लेकिन धब पूछ रही हूँ ।”

कैसी हूँ ये परछाइयाँ जो मेरे लिये सारे बर्द को संभोये रखती हैं। मैं तो चाहता हूँ कि धब बँन की साँस सूँ पर मे परछाइयाँ ये धाक-ठियाँ जो मुझे सबीब सी समती हैं न जाने क्यों मेरे पीछे हाथ जोकर लग गई है ? क्यों नहीं घोर कहीं होती है इनकी ये सब बातें ? मैं यही सोचता हूँ कि अभी एक धाबाब मुझे घोर सुनाई देती है। एक कार मेरे सीने पर धाकर लड़ी हो गई है। ये जो बूसरी धाकठियाँ फिर मेरे सीने को पदाकॉठ करने के लिये इस कार से उतर रही है। यह गई मुबती धाब कार में कैसे ? इतनी रात को इस धमजान बुबक के साथ क्यों है ?

मेरा ध्यान फिर सन्तो की तरफ चला गया ‘धपने को कष्ट देकर यह क्यों बचाया ? ठीक है कि मारी को इच्छा होती है जेवरों के प्रति। पर क्या मैं भी तुम्हें ऐसी ही समी हूँ ? मुझ से छिप कर ऐसा क्यों किया ? देखिये। धाबस्यकता इनको नहीं थी। बचाये ही ये तो जो माह का धर का किराया बुबक’ ।

धाराब की गम्ब ने मेरा ध्यान फिर सन्तो की बात से हटा दिया। मैं देख रहा हूँ कि ये धाराबी कहाँ से धा गये हैं। है यह बुमंग्य तो इन्हीं बुबक-मुबती की धोर से धा रही है। तो क्या यह मुबती बँस्या है ? ऊपर से बितकुक धटीक लय रही है। इसका बहटा इतना लिखा हुआ कैसे है। धालों पर लया कज धोर पाठबर छोटे-मोटे धम्बों में परिवर्तित हो गया है।

दापक यह बुबक कोई धॉफिसर है। यह क्या ? यह मुबती तो इसको घंट रही है मैं धब कभी नहीं बहूँधी कि मैं धापकी पत्नी हूँ।

मर्गों नहीं सेजाते अपनी उस कासी कसूटी धीरत की अपने साथ ? धायर  
 बेकलवः से-सा रहे हैं ।

वह मुबक बड़ा है बुज-सा पस-सा । उसके हाव धामे बढ़ रहे हैं ।  
 युवती को अपनी बांहों में सेना चाहती है और यह युवती कितनी  
 मयातक लम रही है ? इसके हाव उठे धायर मछे में यह युवक पर एक  
 तमाभा बड़ बेती पर युवक की बेब से निकलती सोने के नेकसव को बेब  
 हाव रुक गया है । यह युवती मछे में भी कितनी सतर्क है अपने स्वार्थ  
 के लिये ?

युवती के पले में-नेकसव बमक रहा है और उसके होंठ युवक के होंठों  
 के नीचे बर गये हैं । धाह ! मैं नहीं देख सकता यह सब ।

मेरा मन फिर धामो की बात सुनने में मय जाता है  
 बर का किरामा रुक जाता । धरि धीर रानी के कपड़े बम जाते । धाय  
 स्वयं भी तो घू ही घूम रहे हैं एक वेगट धीर धटे में जो इन्हें खोल  
 बीबिये ताकि पुराने न हों । जो माह बाब पाहू की फीस बेनी होयी  
 कलिय में तब काम धामेंगे ।

मेरा मन भी कितना बचस है । एक जबह टिकता ही नहीं । मैं  
 फिर उठ युवती की बात सुनने लम गया हूँ । "यह नेकसव " ।  
 नहीं नहीं मैं नहीं सूँबी इसे । मेरे पास कोई धच्छे कपड़े नहीं हैं कि इन  
 नेकसव को उन बर पहन सकू । मेरी साड़ी फट गई है । स्कर्ट पुरानी  
 हो गई है । धाह रधिये इसे मुझे कपड़ों की धायरतकता है ।

धायर की बपहोनी में युवक ने कोट की वेब में से पर्म निकलमा  
 धीर सो-ली के तीन कोट उठ युवती के ध्यात्र में टूस दिये । युवती  
 फिर गिड़निर्झर न साबुन है " न कब धीर न पाहडर, लम भी नगी " ।  
 धालिष मैं तुम्हें कियता परेघान कर लेती हूँ लम " । धीर युवती उसके  
 सीने से बिपट गई । युवक के हाव ठिर पसं में गया धीर फिर कुछ  
 बग्ये निकाल कर बे दिबे । धायर धायर इन युवक को अपने धॉकिन में  
 तबम्बाह बिमी-डोली-1 और मेरा ध्यान इनके पर की परेघानियो की-

घोर बसा गया। बेचारी इसकी पत्नी अब पूरा महीना कैसे निकालेगी ?  
 उसे तो सारे यही समाप्त हो पड़े हैं। क्या हर महीने इसी तरह होता  
 है ? मोह—

भुवक क होंठ फिर उस मुबती के गालों पर इधर-उधर स्पर्श करने  
 लगे।

मेरा मन यह स्वीकारने को तैयार नहीं है, पर ये बेहूना भुवक  
 मेरी मजबूरी का फायदा उठा लेना चाहते हैं। मैं सोचता हूँ कि क्यों  
 नहीं अपनी भाँखें बन्द कर लूँ ताकि अन्धेरा सा भावे चारों घोर। ताकि  
 फिर मैं नहीं देख सकूँ ऐसा कुछ भी।

पर मैं भी ऐसा मजबूर हूँ कि ऐसा हो नहीं पाता है। मैं फिर मर्नों  
 की घोर ध्यान देता हूँ। मर्ब कह रहा है 'सन्नो। यह मेरी पहली मेंट  
 है। बर की समस्याओं से कैसे हुए मजबूर पति की पहली मेंट। मैंने यह  
 टॉप्स तुम्हें पहली बार अपने हाथों से पहनाये हैं ? अब इन्हें बिकने नहीं  
 देना सन्नो।

घोर मध्यम बर्ब के ये दो प्राणी उठ गये हैं। मर्ब अमित-सा धम  
 रहा है। राजू की फीस की चिन्ता को लेकर टॉप्स के प बिकने की  
 इच्छा का लेकर।

मेरा मन फिर उबाव हो जाता है। उबावी जैसे मुझे इस समय नि  
 बिरासत में दे ही है। मैं भाँखें मूँद लेना चाहता हूँ। पर फिर आनाब  
 जाती है।

“घ भ न छ घ न।”

एक लड़का मेरे पास बैठ पैसे पिना रहा है। “एक दो पाँच  
 साठ घोर पन्चास एक हय्या बस मये पैसे।”

दिन भर की कमाई, नहीं भीख। लड़का लितालिता कर हुँठ पड़ता  
 “घाम घाठ घाने बचत में डाल देना”, लड़का खड़ा होता है, अपनी  
 कटी भीकर की जेब से एक पुरानी मैनी-सा छोटी पैली निकालता है।

॥ पैली घापी से अधिक भरी है। सारे पैसे मेरे बल पर बिखेर देता

है। इधर-उधर देखता है, फिर बीरे-बीरे मिनते लगता है। कुम पशुह रूपसे घीर भाज के घाठ घाने। संग्रह की प्रकृति इस लड़के में भी है। भिखारी के इस जोसे को भी भविष्य के लिये संग्रहित करने की प्रति क्रिया परिस्थितियों से मिलती है।

मैं सोच रहा हूँ कि लड़का यह सब क्यों कर रहा है कि तभी वह बोल पड़ता है 'मन्ना या जाये यदि एक साथी घीर मिल जाय। खुब पैसे कमा लूँगा फिर तो।' मइत्वाकांशी है। मइत्वाकांशा का उपयोग भील के लिये हो रहा। मैं सोचता हूँ—क्या इसी तरह होता रहेगा।

लड़का अपने से ही बोलता है 'घीर जब ही रूपसे हो जायेंगे तो एक हारमोनियम करीद लूँगा। माऊंगा सोमों का कुछ कर्कना पैसे कमाऊँगा तब मैं पैसे बासा'।

उस लड़के के चेहरे पर खुशी घीर उत्साह एक साथ नाचते हैं। लड़के की घालें दूर मुन्दर से बंसे पर टिक गई हैं। मन की उमंग स्पष्ट-सी लगी कि वह भी बगसे बानों का जीवन व्यतीत करना चाहता है।

वह लड़का प्रसन्न-सा लग रहा है। वह गाने लगा। गाता रहा कि तभी उसे पैड़ के पीछे से माबाज सुनाई बी। बाखू घाल की एक लड़की उससे कह रही है 'मैं भी तुम्हारा साथ दे सकती हूँ। तुम गायोने, मैं नाचूँगी।' वह भोली सुन्दर-सी लड़की उसके करीब था गई। उसके कपड़े जैसे वे उनमें जगह-जगह बेकलियाँ लगी थी। वह एक ऊँचा सा ध्याउन घीर बापरा पहने थी।

लड़के की सतर्कता बम्मीर बन गई। उसने कहा "तो घण्टा नाच दिखायो। वह लड़की नाचने लगी। घीर लड़के ने फिर कहा 'तुम्हें कमाई का बीजा हिस्सा मिलेगा।' मैंने देखा अनुबन्धों में यह लड़का भी व्यापारिकता ला रहा है। उसके चेहरे पर आसानी थी।

लड़की ने कहा "नहीं हिस्सेदारी बटाबर होयी, मैं भी धाधे पैसे लूँगी। लया कि लड़की भी भीष बानै-बाँवते जिन्दगी की आसानी

मान गई है।

सड़के ने कहा यह कैसे हो सकता है। तुम घभी पैसे लेने के तरीके नहीं जानती। धनमान हो। तुम्हें बीबाई हिस्सा-ही मिस सकता है।”

सड़की राजी नहीं हुई। वह जाने सयी। सड़के न अपने का पुकारत हुए कहा “ठहरो ! तुम नहीं मानती तो घाघा हिस्सा दूँगा।”

घौर में सोचता रह जाता है कि य सड़के-सड़कियाँ क्या इसी तरह मीठा माँगने को जन्म संती रहींगी ? क्या इसी तरह में जन्म भर ये बिज बसता रहना। उठा नहीं मेरी उन्न को घब घौर कितना घामे सरकना बाकी है।

मेरा मन बिगलित-सा हुआ जा रहा है। कार की बर-बर की घाबाज फिर घाने सयी है। ये मुबक मुबती जा रहे हैं शराब में मुठ-बन।

इस बिभाति के बार ये सभी कोय तो जा रहे हैं अपने बिन्ह मेर बल पर छोड़ कर। शराब की गब मुझे कपोटती जा रही है।

मे यही मोचता हूँ कि क्यों नहीं य बुबिया-भी टूटूब बलीफूट जाती कि यहाँ घभेरा फँस जाये। बीराहा नजर ही न घाबे। घौर मेरी बिभसता को निष्कर्मणता की रह मिस जाये। घौर में बीराहा नामी पस्तित्व मिट जाऊँ बरम हो जाऊँ।

●मानिक आँचलिया

## एक स्नेह एक प्यार

फूल गाँव

१-६

प्रिय मीठू

मैं इन छुट्टियों में अपना गाँव हूँ। मैंने गाँव आने में पहले जो तुमसे मिलने का वादा किया था उसे पूरा न कर सका—इस बात का मुझे अफसोस है तुम्हें शायद ठाण्डा हो रहा होगा—घर यह होना स्वामानिक ही है कि मैं इतना बेपरवाह कैसे हो गया यह बपवाही नहीं थी जिसकी बजह से मैं तुमसे मिलने न आ सका बल्कि इसके पीछे एक लम्बी दास्तान है जिससे तुम्हें आकिक कराना मैं असर्थ हो जाता था। मगर भीका न मिल सका। घर आज उधे तिलकर ही अपनी स्थिति व्यक्त कर रहा हूँ। इस पत्र में मैं सिर्फ अपनी आज तक की जिन्दगी का वह हिस्सा तुम्हारे सामने रखूँगा जो पुरुषता मेरी उम्र प्रकृति के विपरीत है जो तुम समझ रहे हो या नहीं जिससे तुम अनभिन्न हो। अपना पूरा पत्र तुमसे सम्बन्धित होगा।

घर मेरे जीवन की सबसे पहली घोर बड़ी बटना यह हुई कि मध्यरात्रि के तारे इसबी रात के बत्त जब उपा के आयमन की संभावना के कारण बहराये से लज रहे बतो मैं पैरा हो गया। न मासूम कौन सा तुफ है इस बात में कि आप इस दुनिया में आने ही रोना सीन्गे। अपना बतन की पन्कि उस समय मेरे में नहीं थी फलतः मुझे भी रोना पडा। मगर मैं रोया घोर उबर सोनों न आतिया बजाई। अब जाकर महसूस होता है कि वे (दुनिया के लोग) मुझे उमी बिन सारी दुनिया

के फलसफे से घबरात करत रैना चाहते थे कि तुम रोमियो तो सौक  
मानिया बजाकर झुठ होंगे मिठाइयाँ बाँटेंगे और तुम रोमियो इसलिए कि  
तुम्हें कहीं भी हंसान से पहले रोने के पहलू को ध्यान में रखना पड़ेगा—  
घबरा घबर हसना नसीब न हो सका तो रोना तो नसीब हो ही जायगा ।

इसके बाद मुझे यह सबक उस वक्त भी मिला जब मेरे क्लास टीचर  
मुझे मारा करते थे । उनके मारने की बजह यह थी कि उन दिनों झाई  
में बहुत कमजोर था मैं और सबसे भाँसिरी बैच पर बैठता था । उनके  
मारने पर जब कभी-कभी मुझे झसाई घा जाती थीर क्लास में बैठे तमाम  
लड़कों की सहमी निगाहों मेरी मजदों से दिसतीं तो समता जैसे सब मुझ  
पर हस रहे हैं । यह चौबी जमात थी । प्रतिशोध की भावना मुझमें उसी  
दिन से घर कर जाती है हालाँकि इसका एहसास मुझे बहुत बाद में हुआ  
(दुनियाँ से मिला यह दूसरा सबक है) और घाब बो तुम मेरे कुछ पिछले  
रिकार्डों को देखकर रिमाग की तारीफ कर दिया करते हो सब इसी की  
बरीकत है । मैं इस तरह पढ़ना शुरू कर देता हूँ कि मेरे घर वाले  
रिमाकें किया करते थे, 'भाबकस इसपर पढ़ाई का भूत सवार हो गया  
है । और मुझे भी सोचना पड़ जाता कि कहीं बाकई यह बात तो नहीं  
है । बीर-बीर घगली कमाओं में मेरा मम्बर घाने वाली बेषों पर धान  
मवा और जब एक दिन क्लास टीचर न मुझ पास पड़ सड़के को बो  
बप्यड़ गगान के लिए कहा ( क्योंकि वह लड़का यह नहीं बता सड़ा था  
कि घकबर किसका लड़का था और मने उसे हुमायूँ की घोषाद बठा  
दिया था) तो मुझे हंसी घान सभी किन्तु क्योंकि मैंने उस लड़के की घोर  
मुखातिब हुआ और मेरी मजर उससे मिली तो हसी वायब हो गई क्योंकि  
ऐसा लया मुझे जैसे वह लड़का रो रहा हो । न जाने क्यों एक घबीब  
भावना के बधीभूय होकर मैं क्लास टीचर को कह देता हूँ कि मैं  
उसके बप्यड़ नहीं सपाऊँगा । यह भाठवीं जमात थी ।

वह भावना घाय निविचय रूप है कह सकता हूँ कि क्या थी जो  
उस लड़के के कारण मुझे सर्वप्रथम अनुभूत हुई और घाय, जो घाय



हारिक जगत से प्राप्त सबक के साव-साव मेरी यादत में सुमार हुआ पर्य है।

मैंने एक पदोष की सड़की पर भी दया कर ली। वह इस प्रकार कि मैंने हमेशा उसके साथ खेमना स्वीकार कर लिया। बीर-बीरे हमारे बीच स्नेह बढ़ता गया और उस वक़्त जब मेरे एक बहिन की मैंने उस बूझरी बहिन बना लिया। घान जब मेरे छः बहिनो हैं, परिस्थिति बदल गई है और मुझे वह ब्यस्य कभी नहीं भूषता जो इस सम्बन्ध में तुम मुझ पर प्रकट कर दिया करते थे। 'बाहू यार' तुम जैसा भाव्य-शास्त्री तो कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि तुम उस ईश्वर की छः श्रेष्ठतम कलाकृतियों के भाई हो और उसके अ. महान प्रवक्तारों के सामने बनोगे। भोग मुनकर इस सिते और में भी यह जानते हुए कि वह अतिरिक्त सत्य है और काफी कड़वा हो गया है हंसकर इसे सहन कर जाता। और जो घान पहिले उस सड़की की सारी हो चुकी है। इसको मैंने तुम्हें प्यार कहुकर प्रकट करवाया था। इसकी वजह की कि मैं अपनी तमाम बुराइयाँ (भौतिक बबनावटी) अहित दुनिया के समझ घाना चाहता था ताकि मुझे दता मय थाप कि दुनिया के साथ चलने के लिए कौन सी बुराइयाँ अपने अन्दर होनी पड़े-उठी है। और बनावटी बुराई से बच घाना तो मुझे एक अजीब प्रकार की आनंदमय अनुभूति देता है। अभी भी मेरी यह यादत है और मैं पूर्णतया इसी प्रकार हर एक के सामने पेश आता हूँ। (सिखाव तुम्हारे जिसके सबक कुछ बुरा से काफी स्पष्ट होता गया हूँ। यह यादत मुझे उस व्यक्ति को समझने में भी सहायता देती है।

इसके बाद का एक रूप मुझे और भाव आता है जो मेरे लिए सबक का फारस बना और जिस पर समय की पर्ण का प्रभाव नहीं के बराबर है। यह इस प्रकार है कि मैं एक बार-बिबाह प्रतिप्रेषिता में भाग लेने जा रहा था। प्रथम तो मेरी स्कूल के विद्यार्थियों का मेरे चुनाव के बारे में भी पूर्ण एकाग्रता या और मेरे बोलने (डिबैटिंग पॉवर) पर जब मैं अपने टीचर इन्वार्स के पास बुझा हुआ टन के दिग्दे में लड़ा था तो रिवाज किया 'कौन सी रोने की प्रतिप्रेषिता है जो भाव इसे ले जा रहे

हैं। धीर मुझे लगा जैसे मैं वास्तव में रोने लगा हूँ और वे ठहाका मार कर हस पड़ हैं। जब प्रतियोगिता जीतकर वापिस लौटा तो उन सड़कों की घाँसों में मुझे घगार दिखाई देने लगे जैसे वे मुझे घाँसों के जरिये ही भस्म कर देना चाहते हों जैसे मैंने वह प्रतियोगिता जीत कर बहुत बड़ा गुनाह कर दिया हो और सचमुच ही यह एक मुनाह या इसका एहसास मुझे तब हुआ जब कोई कारण या मा बहाना-यह घाब तक नहीं आम सका उन्होंने मुझे इस खर पीटा कि एक महीने तक कुँसिम के लिए अस्पताल के भस्म कर काटता रहा। यह प्रवृत्ति हिंसात्मक थी। वे मुझसे बतते थे क्योंकि मैं उन्नति कर रहा था मगर मेरी उन्नति उनके लिए बलन क्यों बनी? इसका बचाव इस दुनिया वालों में मे घाब तक कोई भी मुझे नहीं दे सका। यह वसवाँ बर्बा था।

यह वह बरु हाता है जब मैं धरम सूरत से किशोर दिखाई देता हूँ किन्तु बाते काफी पन्मीर कर जाया करता हूँ। लोग रिमकि करते हैं 'तुम कियो राबन्दा से कमी युवावस्था में प्रवृत्त नहीं करोगे-सीधे बुड़े हो जाओगे। कोई बार्शनिक बनने की गविष्यवाणी कर जाता। धीर मैं सिर्फ घाब के लिए बीठा धीर उखी में मुझे सबसे अधिक खुशी मिलती। कभी 'बीठ कम' की घादो ने मुझे समीत नहीं किया धीर कभी 'घाने बाभ कम' की धीर से चिन्तित नहीं हुआ। और ! यह बहकना है। मूक बियव पर धाताहू।

मैं घाब जो कुछ भी हूँ तुमसे छिपा नहीं हूँ। मेरी उमान अन्धकारों धीर बुराईयों से तुम परिचित हो ही गये होगे। किन्तु मेरे कॉसिब जीवन की बटगाघों का एक पहलू एक ऐसा भी है जिसके अन्तिम चरख में मैं भी थोड़ा ही विलो से अच्युत हुआ हूँ तो तुम्हारे जानने का तो सवाल ही नहीं उठता। धीर इससे उत्पन्न परिस्थितियों का धपनो शोस्ती पर अत्यधिक प्रभाव पड़ेगा। यह पत्र लम्बा हो गया है अतः अगले पत्र में मैं तुम्हें इससे बाकिठ करवाऊँगा। धीर ही। इसको यहीं समाप्त करता हूँ।

दुम्नाप

मनोज

## कुलगाय

१० १

प्रिय यीशू

कम तुम्हें एक पत्र बरिष्क सतती बाकने की भूमिका मिली थी और धात्र ही उसे पूरा करने बैठ गया है क्योंकि मुझे ऐसा लगा जैसे पहल वाले पत्र की बजह से तुम्हें एक मानसिक उलझन का सामना करना पड़ेगा। तुम यह सोचने लगे कि ऐसी कौन सी बात है जिसके लिए इतनी सच्ची भूमिका बनानी पड़ी? यह भी तुम सोचो कि धात्र एक जिसे तुमने पल भर के लिए सम्भर मही पाया अब ऐसा कौनसा बख्खात हो गया है जो उसके एक एक शब्द से सम्भरतन व्यक्ति का सा सम्भाज टपकता है। इन सबका निराकार करने के लिए धात्र यह कृपया पत्र मिल रहा है।

पहला पत्र जैसे तो इस पत्र की भूमिका ही है किन्तु साम ही मेर जीवन का एक छोटा सा किन्तु महत्वपूर्ण दौर थी जिसमे स मैं गुबरा और वर्तमान दौर ऐसा है जिससे सम्भाज ही नहीं लबाया जा सकता कि इस से पहले का हिस्सा दस प्रकार रहा होगा। यही बजह भी कि येन उस दौर को तुम्हारे सामने रखा तुम जान लो कि मैं क्या था और क्या हूँ, यह जानकर तुम्हें बेटी धन्धिय समस्या पर मिल्य करना होगा। एक बहुत ही जिम्मेवार व्यक्ति की तरह। तो कम से धात्रें मुझ करता हूँ—

मेरी हुई स्टूम की सानिय समाप्त हो गई थी और नम सहर धाकर कसिज्ज जौदन की। यह सबसे पहिला संयोग था कि वही मैं तुम्हारे घर के पड़ोस में रहने लगा। (एक प्राइवेट होस्टल था जिसमें ४२ सग्य छात्र थे—जिस यह समझ लो कि उन होस्टल के सम्पादन में ही तुम्हारा घर था)। तुम उस बरिष्क दिस्को पड़ रहे थे। तुम्हारे घर में तुम्हारे पिताजी भी थी और तुम्हारी बहिन भीना—ये ही रहते थे। बरिष्क न जान यहिबात को धीरे-धीरे धनिच्छना में बदल दिया। और इसके बाद इसे भी बेबसोय ही बहना चाहिए कि तुम्हारे घर वालों में

मुझे हर बात में विशेषत्व प्रदान किया—(कारण प्रस्पष्ट ही है—बैठ बिल को कुछ भी समझ लेता हूँ)—बिचके कारण यहाँ भी अपने साथियों में ईर्ष्या व जलन का पाव बना। मैं समय के साथ धपन को प्रतिमान किये जा रहा था—साथ में धूपचाप मेर प्रति होने वाली प्रति क्रियाओं को देखकर इन सबको समझने की काबिल थी। इस पर मीसा ने भी मुझे मेरे साथियों के ऊपर इस प्रकार महत्व दिया कि वे फुफ्फु कार चटे। किन्तु उनका फुफ्फुकारना मैं आज समझ पाया हूँ जब उनमें से कुछ मुझे देख कर धपन बिलों की घोर निकस नागे हैं धन्यवा उस बल के मेरे प्रच्छ बोस्त थे—ऐसा मैं समझ रहा था। यह मेरा प्रथम वर्ष था।

धपने साल तुम भी इसाहाबाव पढ़ने या गये। इस बल तक मैं तुम्हारे घर का एक धंग बन गया था। रात को मैं होस्टल की छत पर न सोकर तुम्हारे घर की छत पर ही सोता था व सदियों में भी नीचे तुम्हारे पिताजी के पास। सुबह का नास्ता भी तुम्हारे घर पर ही लिया करता था। मीसा ने मुझे काफी स्नेह था उन दिनों। किन्तु मैंने कभी उसका साथ इस तरह का व्यवहार नहीं किया कि मेरे साथी कुछ धन्यवा समझने लगत। यही बज्रह की कि मैं उससे न्यूनतम बात किया करता और वह भी प्रत्यन्त आवश्यक विषय पर। धपना स्नेह अपने घातों के अगिये ही उस पर प्रशिक्षण कर दता था और इसी रास्ते उसने मुझे प्रति स्नेह प्रदान किया था। इन दिनों तक मैं और तुम भी काफी निकट होत पये यहाँ तक कि उम पनिच्छना की सजा थी जा मकनो भी किन्तु घटना कुछ इस तरह घटी कि एक ही हिचके में घलग हो पये। घटना इस तरह थी कि कोई अच्छी-सी फिल्म लगी हुई थी उन दिनों और नीसा की भी इच्छा थी उसे देखने की। हम सब उस एक दिन पहिल हुई देनकर या बुके थे और तुम किसी कायबत बाहरे पये हुए थे। तुम्हारे पिताजी ने मुझे बुलाकर दस रुपय का नोट दिया और कहा "मीसा को गिबवर गिया जायो।" मैं धममंरम में पढ़ गया।

बहाना किया 'उभय स्निग्ध, किञ्चन धादि में से किसी के साथ भेज दीजिए मेरे घर में कुछ वर्ष-सा है। धीरे में मोठ बापिष्ठ करने लया। तुम्हारे पिताजी कुछ कहते इससे पहिले ही नीला भड़क लटी 'फिर मुझे पिक्कर देखने नहीं जाना है। टांगने की हर समय कोशिस करने के बावजूद भी मुझे उसके साथ फिलम देखने जाना ही पड़ा। धीरे बत मेरे साबिका क लिए इतना ही काफ़ी था—वे नाम से उषन-उषन कर बाहर घाने लगे। पहिले तो घाकर मुझ पर ही ध्यंग करने पुरू किये मपर इस पर भी उनकी छटपटाहट घान्त नहीं हुई तो कतिब में मेरी उपस्थिति में ध्यप लड़कों के सामने भी मुझ पर ध्यंग करने से नहीं पूरे। बात फँस गई। इस तक तक तुम भी घा बुके से धीरे तुमने भी इसे सुना बरिष्क इस कप में कि मैंने ही यह फँसाई है। तुमने मुझसे कुछ नहीं पुछा सीधा अस्टीमेटम से दिमा घाने भर से सम्बन्धों को तीकने घबरा घटाने के लिए। धीरे मैंने ऐसा ही किया। तोना न तो कुछ लपक ही लकी धीरे न कुछ उसने कहा ही बरिष्क उसकी घाँबो से बाव परंपरानी की ललक मुझे मिली।

घाने लाल कुछ कारखों बघ मैं होस्टल छोड़कर कबिज होस्टल में लमा गया। तीन-चार महीने वहाँ रहने के बन्बात् मैं बापिष्ठ होस्टल घा गया। नीला से मैंने न बाठे बल्ल बाठ की भी धीरे न घाठे बल्ल ही की। घलबला उसकी घाँबो बीच में ध्युप में मड़ी लजर घाठी भी मैंने नहसूत किया कि घब उनमें बापिष्ठ सहूँ भी ली बचनला घा गई थी। मेरा स्नेह उनके प्रति बीठे ही कायम था। समय मे मेर धीरे तुम्हार बीच की कटबल्ल की बीवार को भी हटा दिवा था धीरे हम बापिष्ठ बुनते वा रहे थे। कुछ दिनों बाद मुझे फिर कतिब होस्टल लमा पडा धीरे लब से वही रह रहा है। होस्टल मे इस बीच कई सड़के घाये क मये किन्तु मेरा सम्बन्ध तुम्हारे भर से बना रहा। परीक्षा भी हो गई।

धीरे फिर नई घुरूघाठ ली यह। धारम्भ में नीला से जिना लो मैंने लमकी घाँबो में हमेघा लैरते रहते स्नेह की लवल मरहोपी महसूस

की। मेरा यह सन्नेह भी हो सकता था इसलिए मैंने कई बार सन्निवृत्ता को सत्यता की कसौटी पर रखा मगर परिणाम एक ही था यानि मेरा सन्नेह सत्य था। उसकी आवाज कभी बहुत ही हल्की लगती थीर कभी बहुत ही भारी। मेरा स्नेह भी मुझे डोसता नजर आया थीर उसकी जगह बेइच्छी मे मे थी। बात यही तक रूठी तो प्रणता था मगर कुछ रोज पहिले किसी बात के दौरान उसने मेरा हाथ पकड़कर दबाया थीर बिच प्रत्याज से मुझे डूरा तो सर्वप्रथम मुझे महसूस हुआ कि भीतर-ही भीतर कोई बस्तु रँमती जली गई थी। यह भावना प्यार की थी और उस पर प्यार था मया था।

तो मेर प्रचीन दोस्त यीशू ! यह है मेरी वास्तविक स्थिति बिचसे म एक बोराहे पर लड़ा कर दिया मया हूँ। चूकि नीला तुम्हारी बहिन है इसलिए तुमसे छिपाया बिश्वास बात होता—यही सोचकर मने तुम्हें सार हामातो से बाकिऊ कर दिया है। मैं तुम जैसे दोस्त को खोना भी नहीं चाहता था इसलिए गाँव घाते बरक तुमसे मिलने न था सका क्योंकि तुमसे मिलने घाता ता नीसा प्रबन्ध मिलती थीर इससे घाये होने वाले किसी भी परिणाम के लिए मैं बोस्ती को दाँव पर रखना पँबाय न करता। मैं यह दर भूलजाऊँगा किन्तु बोस्ती मैं तुमसे बात करके तुम जैसे दोस्त को बँटता तो यह दर घायर बिम्बयो भर नहीं भुसा पाता। नीसा समझदार लड़की है ऐसी मेरी बारणा है तुम उसे बहकने मत देना। म तुमसे मिलने तुम्हारे पर जाई न था सचूँ तुम मेरी होस्टस पहुँच ही सकते हो।

अन्त में—तुम्हें जास वीर से निर्णय यह करना है कि इसके आगे तुम एक बोस्ट के रूप में मुझे स्वीकार कर सकोगे या नहीं ? अब धवर तुम मुझे दोस्त की तरह नहीं समझोगे ता मुझे जतना पम नहीं होगा जितना उस बरक होता जब मैं तुमसे बात करता थीर तुम्हें लो देता। तुम्हारे निर्णय की मुबिधा के लिए ही मैं आदि से आज तक बिस्तुस स्पष्टतया तुम्हारे सामने आया हूँ। मेर तमाम दोषों व मुर्खों

के साब-साब जिन्दगी में घासे तमाम विरोधामासों से भी तुम्हें परिचित कर दिया है। निर्लज्ज चीम्र ही मिस भेजना ; मैं बेसर्फी से इन्तकार करूँगा।

तुम्हारा

मनोज

इलाहाबाद

१४ ९

प्रिय मनोज

तुम्हारे शोर्षों पर मिले—बाकई में तुम्हें इस सहराई तक नहीं जानता था। तुममें बाहे किस्ती ही कमजोरियाँ हों तुम्हारे पहिल पर मे मेरी मजरो में तुम्हें उठायो ही है। दूसरे पर के बारे में तीन दिन सौंपने के परचात् धातिरकार बहु निष्कर्ष निकाला कि कुछ तो निर्लज्ज करना ही था। तुम्हें दोस्त मानने में एतयज मुझे पहिले भी नहीं बा अब भी नहीं है फिर भी मैं नीला की तरफ से धारवस्त हुआ जाहता था। यह एक ऐसी बन्धीर समस्या थी जिसे हल करना कम-से-कम बड़े भाई के लिए ता दुस्वार ही होता है। जानते हो बड़ा भाई अपने स छाटों के लिए बा की पसह हाता है और नीला भी मेरे से काफी छोटी है। मगर मैंने तुम्हारे लिए सिर्फ तुम्हारे लिए इस रिस्ते का बुनाया—बही तो मनोज एक बटा भाई कभी अपनी छोटी बहिन से इस प्रकार क प्रान नहीं करता करन की हिम्मत नहीं हो सकती उनमें अंत मैं नीला मे विप। ये भी मिल है कि मैं उनत क्या पृछा—सधन पहिले उस दिन इस दोनों दन पर धकेले ही बैठे थ तो एकाएक मैं उनसे कुछ बेटा 'नीला' मनोज के बारे में तुम्हारे क्या विचार है ? ये ही जानता हूँ मनोज कि विम लखू मुझ लखा के सम्पूर्ण धावरण को तोड़कर पेंवना बड़ा था इन बळ धीर नीला वा बर्बर किसी धारवर्ध के

जवाब था "अच्छे ही हैं क्यों ? अब बठारो मैं धीर क्या पुछता उससे ?

फिर मुझे पत्रों के पन्ने बोलते सुनाई देने लगे "तुम्हें मेरी प्रसिद्ध समस्या पर निर्णय करना होगा एक जिम्मेदार व्यक्ति की तरह" धीर मैंने निश्चित किया कि प्राण निर्णय करके ही रहना है।

"नीला ! तुम्हारे धीर मनोज के क्या सम्बन्ध हैं ? मनोज ! तमास व्यक्ति सचय करने के बाद इतना बोल पाया था मैं । इस बार नीला के सनाट पर कुछ ससबटें उभरीं फिर बोड़ी-सी हीरानी के सहजे में बोली 'क्या मतलब मैं समझी नहीं । ये प्रसन्नपत्र उसने प्रसन्न समय होकर कहे थे मगर मुझे गुस्सा था गया—ठीक सतरंज के उस खिलाड़ी की तरह जिसका बजीर दूसरी ही जाल में पिट गया हो ।

"मैं मतलब कुछ नहीं जानता बस यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे धीर उसके क्या सम्बन्ध हैं ? वैहद कर्कश जवाब में पुछा मैं ।

सहमी मपर मन्मीर जवाब में उसने जवाब दिया 'साफ-साफ कहो मैया ?'

"सब साफ ही है नीला मुझे सिर्फ तुम्हारा जवाब चाहिए—जवाब में प्रश्न नहीं । मनोज ! यह प्रश्न मुझे बुर नहीं मासूम कि क्या सोचकर मैं कर गया धीर न मासूम उसे क्यों इतना बुर लग गया कि वह रोने लगी, फिर एकदम मन्मीर हो गई । फिर बोली—

"मैया ! तुम मुझे मल्ल समझ रहे हो मैंने कभी उन्हें तुमसे कम ही नहीं माना ।

धीर मनोज ! मेरी उस बल की स्थिति का तुम सिर्फ जवाब ही सगा सकते हो । मेरे में उससे नजर मिलाने की शक्ति नहीं रह गई थी । एक बड़े माई को छोटी बहिन के सामने किस तरह घमिन्दा होना पड़ा । मैं झपटकर वहाँ से उठ खड़ा हुआ धीर सीमा स्टडी कम में धाकर तुम्हें पत्र लिखने बैठ गया । नीला से मेरी बोलने की हिम्मत नहीं पड़ रही है । कारख इसका वह है कि तुमने उसे बल्ल समझ धीर



यैने भी मगर बहू लोगों में से किसी को नहीं समझ पा रही है ।

यह भी एक संयोग है कि तुमने मुझे एक बहिन के स्नेह को प्यार की संज्ञा देकर प्रवणत करवाया था और मैं तुम्हें एक प्यार को बहिन के स्नेह की संज्ञा से प्रवणत कर रहा हूँ । कितनी विचित्र बात है मगर सत्य है । हो—सकता है इस पर भी विधि के विधान की कोई बाध लागू हो गई हो ।

और एक भूख ही मई है तुमसे—जिसको सुधारना तुम्हारे लिए कदापि सम्भव नहीं हो सकता और इस मूल के लिए तुम पर कोई मुकदमा नहीं चलावेगा असबस्ता तुम्हें अपने बवानों में नीला को मेरे और तुम्हारे प्रत्यक्षों की ओर से सफ़ाई देनी पड़ेगी ।

उम्मीद है शोये—खीझ ही । बस !

तुम्हाप

पीयू

×

×

×

इलाहाबाद

१९—१—

\* आदरणीय मनोज जी

धर्म चाहती है कि पुत्रान से 'तुम' सम्बोधन करना बहुत सहज था—मिन्न नहीं पाऊँगी ।

मौलवी हैं औरों के पत्र पढ़ना बुढ़ी बात है मगर मजबूर भी—जिझासा रोक नहीं पाई और इसी तुरु में आपके हाथ भैया को लिखे गये लोगों पत्र मेरे हाथों तक आ ही गये । बसि मेरा इन पत्रों का पढ़ना हमें लोगों के हक में प्रकटा ही हुआ सम्भवता न तो मुझ अपनी सफ़ाई देने का प्रवणत मिलता और न आप अपनी को समझ पाते ।

भैया को मैंने बजाव दिया है कि मैं आपको भैया से कभी कम बहो मौलवी—यह सही ही है । और आप धारक (जैसा कि एक पत्र में आपने भैया को लिखा है) प्रब मुझे प्यार करने लगे हैं तथा मैं भी

घापको चाहती रही हूँ—मह भी सही है ।

पहिले दिन की आम पहिचान के घोर घापके वहाँ से जाने के बीच तकरीबन चार साल युद्ध बूके हैं । इतन बन्ध में मैंने हर तरह से घापको समझने की कोशिश की । मैंने घापको प्यार भी किया और इसी भाँते कुछ अधिकार जताने की कोशिश भी । निराश तो घापन भी मुझे नहीं किया क्योंकि घापने हर तरह से मेरी मदद की बही सब कुछ किया जो मेरी पसन्द के अन्तर्गत घाठा था एक अंगरक्षक की तरह मेरे साथ रहे और कभी बर्बाद नहीं हुए । इतना सब कुछ होते हुए भी मैंने निष्कर्ष यह निकाला कि घाप मुझे प्यार नहीं करेये या करना नहीं चाहते (जुकी ही मतलब है । क्योंकि घापके किसी कार्य में अधिकार की भावना नहीं थी जो कुछ बाहिर जाता था—बहु बहु था कि घाप मुझे पर बदा कर रहे हैं ।

एक घोरत को दया नहीं प्यार बाहिए सहाय बाहिए और अधिकार बाहिए—बहु मैं घापसे नहीं पा सकती जो क्योंकि घापमें पुष्पात्क का समाज है । घाप एक भावमी कम और देवता अधिक है जिसकी इज्जत की जा सकती है, पूजा की जा सकती है—पत्थर का देवता समझकर भजना हाइ माँस का मदतार समझकर भजना भाई समझ कर—मपर पति समझकर नहीं ।

काय कि घापन मेरे निर्लप लेने से पहिले मुझे समझने की कोशिश की होती । मेरे लिए वही बहुत है कि एक पत्थर के पिचलने के घाठार ही मजर घापे ।

घान्त में घापसे प्रार्थना है कि मुझे नमत ब मीर न समझे—और एक एहनात करें कि मैं जिस रूप में घापको समझने को बाध्य हुई हूँ—मुझे उस रूप की पूजा करने से बचित न करें ।

घापकी घाधीपाभिधापी विनीता

●नन्द फिरोज चाचार्य

## चुराये कथानक की कहानी

घान्द्र भी भी शूब घाबभी हैं । फटफट बप्पल घसीटते घाप घौर बोसे 'कहानी लामो । यहाँ घभी नई कहानी की दो सारनो भी नहीं मिली घौर खनाब मांगते हैं बुरी कहानी । मेने कहा भाई मेने तो कभी - 'कहानी नहीं मिली बे बाठ काटकर बोसे तो घब मिल छ डामो । देखो परसों तक मिस जानी बाहिए, फुलस्केप कामज पर मिली हुई, समझे ना ! मेने मदन हिलारी कि गर्दन घपने घाप हिस मई, घौर बे पौती सम्भालते हुए सीढ़ियां उतर गए । मेरे विमाण में कोई कहानी नहीं घावी । मन को बहुत कुन्दा तो एक सत्य घटना याद हो उठी । रूपा की कहानी । वह मिलने बैठा ।

घब तुम्हीं कहो सपा बीस साल का एक छोकरा जिसे जीवन का कुछ घनुसब नहीं घौर जिसने कभी बास्तविकता का ज्ञान नहीं किया । उसके पास एक कहानी है । याने मेर जीवन में तो सिर्फ एक ही कहानी है—तुम्हारी कहानी । पर वो कहानी में कंठे किसी को बताने ? तुम्हापे घारी हो चुकी घौर घब वह कहानी बजा कर मे तुम्हारे जीवन बिय बोसना नहीं बाहूठा । सेकिन हाँ मे घपनी कहानी तो तुम्हें कुना ही सनवा हूँ । वह बूछरी बात है कि उसमें कहीं तुम्हारा जिक्र या घाप पर उसके लिए तुम मुझे माफ कर बीगी ।

मेरे उस समय घोलहवां बल रहा बा । मैट्रिक में बा । एक दिन स्कूल से घर लौटने पर माँ ने बतयाया पड़ीस के घर में गए किछवेदार या गए हैं । उनके एक लड़की भी है । होपी बीदह-नगह की । माँ ने

सब मुझे बता ही रही थी कि तुम कुछ सेने के लिए प्राची घोर तब मैंने तुम्हें पहली बार देखा लेकिन न जाने क्यों तुम मुझे बहुत अच्छी नहीं लगी ।

उसी दिन मैं अरुणचन्द्र के एक उपवास 'देवदास' पर बनी फिल्म देखकर आया था । रात को एक सपना देखा जो मैंने तुम्हें भी सुनाया था । मने देखा कि घर के पिछवाड़े नीम के बरख्त के नीचे बैठा दादा भी का हुक्का पी रहा हूँ तुमने मेरी सिकामत माँ से कर ली है और माँ मेरी 'खबर' सेने धा रही है । यह सपना देवदास की हुक्के वाली बट्ना से पूरा साम्य तो नहीं रहता फिर भी मुझे अच्छा लगा । एक विषय बात यह भी हुई कि अब तुम मुझे अच्छी लगने लगी । मने शायद यह भी सोचा था कि तुम मेरे लिए एक अच्छी पारो बन सकोगी ।

घौर फिर वही हुमा जो ऐसे मामलों में घबहर होता है । मेरी तुम्हारी अनिच्छता बढ़ने लगी । तुम मेरे स दो दर्जा पीछे पी घौर इसी लिए मदा-कहा मुझसे सनाल या अपेजी पढ़ने धा जाया करती थी । फिर तुम्हारे इन्विहान धा गए । मेरे इन्विहान पूरे हो चुके थे इसलिए अब तुम नियमित रूप से मेरे पास पढ़ने के लिए आने लगी । कभी कभी तुम्हें क्या-बा बेर हो जाती थी घौर तब तुम हमारे यहाँ ही सो जाती । इन दिनों हमारी अनिच्छता कुछ घौर' रूप सेने लगी । मैंने एक दो सफा मौका देक कर तुम्हें कस के अपने सीम से लना भी लिया था घौर तुम्हारा खुम्बन भी लिया पर तुमने कोई ऐतराज नहीं किया । तुम मेरी नीयत पहचान गई थी फिर भी मेरे से कटी-कटी रहने की बजाय तुम मेरे घौर नजदीक आती गई । घौर फिर उस दिन तुम हमारे घर बिला बजह ही सा गई थी क्योंकि दूसर दिन तुम्हारा बिच कला का पर्चा था जिसके लिए तुम्हें सहायता की आवश्यकता नहीं थी । घौर उस रात जो कुछ हुमा उसका सोप तुम अघर मुझ अकेले को ही देना चाहो था मैं नहीं सूमा । सब कुछ जानते-सूझते हुए भी तुम मेरे यहाँ लोपी बिसेसे मुझ बड़ाका मिला घौर' । घौर फिर तुमने

कोई विरोध भी नहीं किया था। इसीलिए उसका भावा बोप में तुम्हें भी देना चाहूँगा।

दूसरे दिन मैंने सोचा कि देवदास ने तो ये सब कुछ नहीं किया था। मुझे लगा कि देवदास मुझसे कह रहा है। मैं नहीं खींचता था कि तुम इतने जमीन हो। मैं धर्म से जमीन में पड़-सा गया। पर फिर मैंने अपने आपको समझाया कि मेरी धीर देवदास की परिस्थितियाँ असह्य हैं धीर फिर वह तो एक असफल प्रेमी था पर तो मुझे सफल प्रेमी बनना है फिर भी पता नहीं उसके नाम से मुझे क्यों इतना मोह हो गया था कि मैंने तुम्हें कहा कि अब तुम मुझे देवदास कहोगी। तुम मेरी बात पूरी तरह नहीं समझ सकती पर तुमने बात मान ली।

धीर फिर दो घास दुबड़ गये। देवदास का धारण तो बँसि में भ्रम ही गया था। दरवालों से मुक धिप कर हम को सब करते रहे जो नहीं करना चाहिए था तीन बार बफा हम सोम पुनकर सिनेमा देखने भी गए। इतिहास के दिनों में तुम मेरे पास पढ़ने घाटी रही म तुम्हें पढ़ाता रहा। मेरे दो-एक बोस्तों को मेने सब कुछ बटा दिया था धीर अब मैं उनकी जिवाह में 'हीरो' था।

उस दिन रात को माँ को कुछ शक-मा हो गया था कि जमाने जिवाह रखी। उन्होंने तुम्हें मेरे साथ बैच सिया धीर हम रगे हाथों बकने गए। दूसरे दिन से मेरे धीर तुम्हारे मिलने पर रोक लगायी गई। मेरी माँ ने तुम्हारी माँ को सब कुछ बटा दिया धीर मैंने सुना कि तुम्हें इतना पीटा गया कि बार दिन तक तुम घाट से न उठ सकी। तुम्हें स्कूल से उठा सिया गया धीर फिर तुम्हारे पिताजी घाटी क लिए बीड़-युप करने मने ठाकि घनके मंडू पर कामिख न पुते। अपर में तुम्हारी कहानी मिलता होता तो बटाटा कि तुम्हें देखने के लिए बँसे-बँसे सींग घाटे रहे धीर तुम नुयायत की बीज बना बी गई। पर मैं अभी अपनी कहानी बिस रहा हूँ इसलिये सिर्फ इतना ही कहूँगा कि देड़ महीने बार ही तुम पाये बाबों के माप एक मामूली टाइपिस्ट के हजामे कर बी गई जो मेरे

नीसा बुरबुरात नहीं था। लेकिन अगर सब पूछो तो मुझे कोई विशेष कुछ नहीं हुआ।

लेकिन जब बेबदास मुझे फिर याद आया। जन्हीं दिनों मैं अपने एक रिश्तेदार के यहाँ जो बेहरापुर रहते थे छुट्टियाँ बिताने जमा गया और मुझे बूँ समा कि सायब जब मैं बिन्दगी भर बेबदास की तरह भटका ही रहूँगा पर तुम जानती हो कि मैं ऐसा नहीं कर सका ? छुट्टियाँ खत्म हो गई और मैं चुपके से घर आ गया। पिता जी के दर से राख तो नहीं पी लेकिन दोस्तों के साथ चुपकर फिल्म के नायक की तरह सिगरेट बकर पी और सब तो धाबत-सी पड़ गई है। घरे एक बात लिखना तो भूल ही गया। तुम्हारी घाबी से पहले एक वफा मीने यह बोधिया भी की थी कि तुम्हारे जनाट पर मेरी यादपार के रूप में चोट का निदान बिठा है पर मुझे मौका भी मिला। एक दिन सवोपबध तुम मुझे सीढ़ियों पर मिल गई तो मैंने जो लड़ी बिसे में हुमेसा इसी प्रयोजन के लिए साय रखता था कि तुम पर जलाबी। तुम नीचे मुक कर आये निरस्त गई और लड़ी सिर्फ हवा में सहराकर रह गई। मुझे उस समय जॉन किंक चोट याद आ गया।

और इस तरह मेरी कहानी भी बही समाप्त हो गई जहाँ मध्यम बर्य के प्रेमियों की कहानी धक्कर समाप्त हुआ करती है। तुम्हारी घाबी के एक साल बाद मेरी भी घाबी हो गई। एक वफा सोचा कि बेबदास तो उम्र भर कुपारा ही रहा था पर बेबदास बनने के बिचार की बजाए मामुरी (मिठी पत्नी) मुझे अधिक धक्की लगी। हमारा साम्राज्य भी बन बड़ा मसुर है पर मैंने तुम्हारी कहानी मामुरी को नहीं बताया है।

बेबे घानन्दजी यह कहानी पसन्द करते हैं या नहीं। बर्ता फिर रिबेकट सी है ही।

●सूर्य प्रकाश विज्ञान

## परछाईयाँ : अपनी और परायी

पार्क के साँत में धाब भी रमेस हर रोज की तरह टहन रहा ना । बसके साब बही विरपरित बुबती बी । प्राय इन दिनों में यह बुबती हर रोज रमेस के साब इबर-उबर बुबती फिरती दिबाई देती बी । रमेस एक सम्य सुम्बर तथा बम्बीर बुबक ना । बिसके बिचारों को मुनकर कोई भी ब्यक्ति उसके धाबर नियो बिना नहीं रह सकता था । पर जब से यह बुबती उसके साब बेखी जाने लयी, तब से यह सोचों की दृष्टि में हेय समझा जाने लगा साब ही उसके बन्द मित्रों ने उससे मिलना चुमना भी छोड़ दिया ।

बोनों जाने बम्बीर से । चुप धीर मीन बकायक रमेस ने इत बुबती से कहा 'सरोज । धंभित हो रहा है अब हमें घर चलना चाहिए । यह मुनकर सरोज ऐसी चौंधी मानों उसे किसी ने सपने में झकझोर दिया हो । जरा सा संभसते हुए, सरोज ने रमेस की तरफ धरनबाचक दृष्टि लठा बी जैसे उसने रमेस की बात न सुनी हो । रमेस ने धपनी बात पुन दोहराई "अ भेरा हो गया है अब घर चलना चाहिए ।

सरोज ने 'हूँ' कहा । बोनों चुपचाप पार्क से बाहर निकल कर एक कच्चे रास्ते की तरफ मुड़ बने । रास्ता काफी उबड़ खाबड़ ना । सरोज ने रमेस की धोर दृष्टि उठवाई न जाने क्या निहार रही थी । उसका ध्यान जमीन की तरफ नहीं था । चलते-चलते सरोज का पैर एक पत्थर से टकरा गया सरोज लड़खड़ा गई ।

रमेस न उसे समझते हुए कहा 'रास्ता सराब है संभस कर चलो बरना फिर आघोपी ।"

'तुम साथ बनी हो। मुझ विरली को सभलने के लिए।' सरोज ने उत्तर दिया फिर वहीं चुपची।

वे दोनों एक मकान के बाहरे में खुसे बिसकी दूसरो मंजिल पर खेस खूता बा। रमेस के पास छोटा सा फ्लैट वा मयर वा बहु प्राबुनिक साजो सामान से सजा हुआ। रमेस को यह फ्लैट उसकी कम्पनी की तरफ से मिला हुआ था। बिसका बहु मेनेजर था।

रमेस धीरे सरोज दोनों ड्राईव कम में आकर बैठे। रमेस ने मोटर को आबाज सवाई। मोटर थोड़ी देर में जाय सगा गया। सरोज ने जाय बनाई तथा एक दूसरे को देखते जाय की बुस्कियों के साथ-साथ अपने घन्टहॉन्ड में सीग हो मये। जाय की समाप्ति के साथ-साथ सरोज ने मोन छोड़ा भी अब बसती हूँ। कम घाम को यहीं पर मिसूगी।

रमेस ने मुस्कुरते हुए स्वीकारात्मक गर्हन हिलायी।

सरोज जसी गई। रमेस अपने सोफे पर बैठे कुछ बिचारता रहा। उस बोले दिनों की एक फ्लैक बिसाई पड़ी। रमेस को बहु दिन याद आया जब सरोज से उसका पहला-पहला परिचय हुआ था।

एक दिन बहु जब अपनी रजनी भाभी—जो उसके बचेरे भाई की पत्नी है के यहाँ एक पार्टी में गया था। उस दिन भाभी ने कई मौकों से उसका परिचय कराया था। परिचय ता क्या था सिर्फ नाम मात्र की फर्मोसिटी पूरी की गई थी। पार्टी की समाप्ति पर जब रमेस ने वहाँ से अपने की इजाजत चाही थी तब रजनी भाभी ने घणसे दिन पुन नैच पर घाम को कहा था।

दूसरे दिन दोपहर को सच के समय रमेस रजनी भाभी के यहाँ पहुँच गया। भाभी रमेस का इस्तजार कर रही थी। दोनों देवर भाभी जाना या चुकने के बाद बातचीत करने लगे। "भैया एक आश्चर्यक बात करना चाहती हूँ। रमेस ने भाभी की धीरे मन्गीरता से देखा। भाभी ने पुन कहा बिस सरोज से कम तुम्हारा परिचय करवाना वा उसके बारे में एक गनीर संकेत करना चाहती हूँ कि उसका



●सूय प्रकरा विस्सा

## परछाईयाँ . अपनी और परायो

पार्क के लॉन में धाज भी रमेश हर रोज की तरह टहल रहा था । उसके साथ वही चिरपरिचित युवती थी । प्रायः इन दिनों में वह मुबती हर रोज रमेश के साथ इधर-उधर घूमती फिरती बिछाई देती थी । रमेश एक सम्य सुन्दर तथा मम्मीर युवक था । जिसके बिचारों को सुनकर कोई भी व्यक्ति उसका धावर किये बिना नहीं रह सकता था । पर जब से वह मुबती उसके साथ देखी जाने लगी तब से वह लोगों की दृष्टि में हेय समझ जाने लगा था ही उसके बन्धु मित्रों ने उससे मिलना बुलना भी छोड़ दिया ।

दोनों जाने मम्मीर थे । कुप धीरे धीन मकायक रमेश ने इस मुबती से कहा 'सरोज ! धंभेरा हो रहा है अब हमें पर चलना चाहिए । यह सुनकर सरोज ऐसी चौंकी भागी उसे किसी ने सपने में झकझोर दिया हो । जरा सा संजलते हुए, सरोज ने रमेश की तरह प्रसन्नवाचक दृष्टि उठा दी जैसे उसने रमेश की बात न सुनी हो । रमेश ने धयनी बात पुनः दोहराई 'म धेरा हो गया है अब पर चलना चाहिये ।'

सरोज ने 'हूँ' कहा । दोनों कुपचाप पार्क से बाहर निकल कर एक कच्चे रास्ते की तरह मुड़ गये । रास्ता काफी उबड़ खाबड़ था । सरोज ने रमेश की धीरे दृष्टि उठाई न जाने क्या निहार रही थी । उसका ध्यान जमीन की तरह नहीं था । बसने-बसने सरोज का पैर एक पत्थर से टकरा गया सरोज सदबद्धा गई ।

रमेश न उसे समालते हुए कहा 'रास्ता परतब है संजल कर बसो बरना फिर चापोगी ।'

“तुम साब जो हो। मुझ मिरछी को समाप्तने के लिए।” सरोज ने उत्तर दिया फिर बड़ी चुप्पी।

वे दोनों एक मकान के बाह्यते में खुसे बिसकी दूसरी मंजिल पर रमेस खूठा था। रमेस के पास छोटा सा प्लैट या मगर या बहु प्रायुनिक साबो सामान से सजा हुआ। रमेस को यह प्लैट उसकी कम्पनी को ठरफ से मिसा हुआ था। बिसका बहु मेनेजर था।

रमेस घोर सरोज दोनों ड्राईंग रूम में घाकर बैठे। रमेस ने नीकर को आबाज सगाई। नीकर छोड़ी बेर में चाय सजा मया। सरोज ने चाय बनाई तथा एक दूसरे को बेबते चाय की चुस्कियों के साथ-साथ अपने प्रन्टईन्ड में लीन हो गये। चाय की समाप्ति के साथ-साथ सरोज ने मीन छोड़ा में प्रब चलती हुई। कल शाम को यहीं पर मिलूमी।

रमेस ने मुस्कणते हुए स्वीकारात्मक मदन हिजादी।

सरोज चसी गई। रमेस अपने छोके पर बैठा कुछ विचारता रहा। उसे बोते दिनों की एक झकक दिखाई पड़ी। रमेस को बहु दिन याद आया जब सरोज से उसका पहला-पहला परिचय हुआ था।

एक दिन बहु जब अपनी रजनी मानी—जो उसके अचेरे भाई की पत्नी है, के यहाँ एक पार्टी में मया था। उस दिन मानी ने कई लोगों से उसका परिचय कराया था। परिचय तो क्या था सिर्फ नाम मात्र की फार्मलिटी पूरी की गई थी। पार्टी की समाप्ति पर जब रमेस न बहाँ ने चलने की इजाजत चाही थी तब रजनी मानी ने अपने दिन पुन-नेच पर ध्यान को कहा था।

दूसरे दिन सोपहर को संज के समय रमेस रजनी मानी के यहाँ पहुँच गया। मानी रमेस का इन्तजार कर रही थी। दोनों बेबर मानी जाना या कुछने के बा-बातचीत करने लगे। मनी एक आश्चर्यक बात बरना चाहती है। रमेस ने मानी की घोर कम्पीरता से बखा। मानी ने पुन कहा कि बिब सरोज से कल तुम्हारा परिचय कराया था

मामूनी सा कर्कर है मगर उसकी हर साड़ी की कीमत उसके पति की कनकबाह से कहीं अधिक होती है। रमेध मुनता या रहा या मामी ने अपनी बात कहती या रही थी 'धीर कोई भी स्त्री उससे दिनठा रख कर मुस खैन से नहीं रह पाती।

रमेध ने सुनकर गया प्रसन्न किया "धीर तुम मामी" रजनी पुन प्रसन्न हो कहने लगी "अब मुझे भी इसके बारे में अनुभव हो रहा है। न जान कह कौन सी धड़ी की जब मरी यह मित्र बनी थी। रजनी ने कहना पाटी रखा। अब तो मेरा भी इस बहर के कारण हम बुटा या रहा है मैंने सोचा कि तुम्हें तो पहले से ही सागाह कर हूँ। क्योंकि तुम्हें कहीं मेरे परिषय करवाने के कारण बकर में न डाम दे।

रमेध स्तब्ध रह गया। मामी को साँठबना देकर अपने ऑफिस में जा गया। रमेध के हृदय पलट पर कई परसाइसों धारें। वह विचारता गया।

रमेध विचार रहा था कि रजनी मामी के कहने के कुछ दिनों बाद सरोज से एक पार्क में भेंट हो गई थी। उस दिन के बाद के प्राय मित्रते ही रहते थे। इस पर उनके अनेक मित्रों ने उसे टोका या मगर वूमरों के टोके से उसके हृदय में एक जिज्ञासा उत्पन्न कर बी थी—उस नारी अरिष के जानने की वह प्राय सरोज से मित्रता रहा-दोनों अत्यधिक नजदीक जाने सये।

सरोज को लेकर रमेध का अविश्वस मित्र नरेण मौ रमेध की काफी आलोचना कर गया था। एक दिन लाल के मुस में कहा 'रमेध तुम्हारे के धारदों कहाँ गये? कहीं गई वह नतिकता व मर्यादा की धारें? तुम्हारे बारे में मैं इतना नहीं सोच सकता था। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि तुम्हारा इतना बड़ा पतन हो पायेगा। तुम्हारे बारे में जो अर्धा तुमने की मित्रता है उससे मुझे बड़ी गर्म लागती है। मगर रमेध उस समय भी मौन रह कर सभी कुछ सुन कर जहर का घूट पी गया। रमेध यह सब विचारते विचारते प्रसन्न हो गया। उसे मया

कि सब घाबरण प्राप्त है ये लोग । मन में कुछ और बुजान पर कुछ और । इसी उधेड़ बुन में उधे यह ध्यान न रहा कि उसका पुराना मौकर रामू अब से जाना रसकर बड़ा है । रमेश को उदास देख कर रामू ने धार्मिक स्वर में कहा 'बाबू क्या बात है । रमेश का ध्यान टूटा । वह उठा । हाथ मुँह धोकर खाना खाने का प्रयास करने लगा ।

अबि से खाना खाने के पदबात् रमेश अपने बिस्तर पर लेट गया । और फिर से उसका ध्यान अतीत की ओर जाता गया । वह सोचने लगा । एक दिन उसने सरोज से उसके बीठे जीवन के बारे में पूछा था तब सरोज ने बताया था ।

मैं एक मरीब परिवार की लड़की हूँ । मेरे पति अनेस के साथ मेरी धारी हुई । नाम उनका प्रबन्ध ही अनेस है मगर हैं वह गरीब ही । एक मिन में कर्क है । मैं जब धारी के बाद पहली बार घर आई तब देखा घर में कुछ नहीं है । अनेस मरे लिए छोड़के के तौर पर कुछ एक साड़ियाँ लाया था । जो काफी कीमती थी । उसकी बड़ी मेंट देखकर मुझे महसूस हुआ कि मुझे अधिक प्रेम करने के कारण अपनी सामर्थ से अधिक मेंट लाकर दी है । मगर रमेश बीरे-बीरे कुछ और ही निकला वह मुझे एक रात जात हुआ ।

कुछ रुक कर अपने को सम्माना जैसे किसी निगूड़ बेहमा ने उसका जना प्रबन्ध कर दिया है । वह कुछ रुक-रुक कर बोली 'रात्री का समय था । अपने पति की प्रतिष्ठा कर रही थी । मेरे अन्तर में सिहरन थी । मैं अपने प्रियतम की उर्वस्व अर्पण करने की सदा सोचती थी । तब सदा की तरह नहीं, आज अनेस सदा में पुत एक व्यक्ति को साथ लेकर आया था—जिसके कपड़ों से लजता था मानों वह काफी पैसे वाला है ।

अनेस ने लड़कड़हते कदमों को संभालकर घस्पट स्वर में कहा, "रात्री सब ? ये मेरे पिब 'बला राय' है । काफी बगाड़्य है । वे जो पहनी रात की साड़ियाँ मेने तुम्हें मेंट की थी वे सब रन्ही की थी हुई

मासूली का बर्क है मगर उसकी हर साड़ी की कोमल उसके पति की उलझाव से कहीं अधिक होती है। रमेश मुन्ठा का रहा या भाभी ने अपनी बात कहती या रही थी और कोई भी स्त्री उससे मित्रता रख कर सुख बैन से नहीं रह पाती।

रमेश ने सुनकर गया प्रसन्न किया 'और तुम भाभी' रजनी पुनः बबक हो कहने लगी 'अब मुझे भी इसके बारे में अनुभव हो रहा है। न जाने वह कौन सी बड़ी थी जब मेरी यह मित्र बनी थी। रजनी ने कहना जारी रखा। अब तो मेरा भी इस जहर के कारण बम फुटा जा रहा है मैंने सोचा कि तुम्हें तो पहले से ही धामाह कर दूं। क्योंकि तुम्हें कहीं मेरे परिचय करवाने के कारण बककर मैं न डाल दे।

रमेश स्तब्ध रह गया। भाभी को शांत बना देकर अपने घोंकिस में आ गया। रमेश के हृदय पसट पर कई परछाइयाँ आईं। वह विचारता गया।

रमेश विचार रहा था कि रजनी भाभी के कहने के कुछ दिनों बाद सरोज से एक पार्क में भेंट हो गई थी। उस दिन के बाद वे प्रायः मिलते ही रहते थे। इस पर उनके अनेक मित्रों ने उसे टोका था मगर दूसरों के टोकने से उसके हृदय में एक विश्वास उत्पन्न कर दी थी—उस मारी बरिब के जानने की वह प्रायः सरोज से मिलता रहा—दोनों अत्यधिक नजदीक जाने लगे।

सरोज को लेकर रमेश का अभिन्न मित्र करने भी रमेश की काफी धामोचना कर गया था। एक दिन मग्न में गुस्से में कहा "रमेश तुम्हारे वे धारण कहीं लगे ? कहीं गई वह नैतिकता व मर्यादा की बातें ? तुम्हारे बारे में मैं इतना नहीं सोच सकता था। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि तुम्हारा इतना बड़ा पतन हो जायेगा। तुम्हारे बारे में जो चर्चा सुनने को मिलती है उससे मुझे बड़ी घर्म लगती है। मगर रमेश जब समय भी मिल रह कर सभी कुछ सुन कर जहर का छूट पी गया। रमेश महः सब विचारते विचारते पचस ही गया। उसे सगा

कि सब आबरण धाँस्य हैं वे लोभ । मन में कुछ और पुमान पर कुछ और । इसी उभेड़ कुन में उसे यह ध्यान न रहा कि उसका पुराना नाँवर रामू अब से जाना रखकर बाँदा है । रमेस को उबास देस कर रामू ने धार्त स्वर में कहा 'बाबू क्या बात है । रमेस का ध्यान टूटा । बड़ उठा । हाव मुँह बोकुर जाना खाने का प्रयास करने लगा ।

धरति से जाना खाने के पश्चात् रमेस अपने बिस्तर पर भेट गया । और फिर से उसका ध्यान धर्तीत की और बना गया । वह सोचने लगा । एक दिन उसने सरोज से उसके बीठे जीवन के बारे में पूछा था तब सरोज ने बताया था ।

मैं एक गरीब परिवार की लड़की हूँ । मेरे पति बनेस के साथ मेरी धानी हुई । नाम धनका धबस्य ही बनेस है मगर है वह गरीब ही । एक दिन मैं कर्क है । मैं जब धारी के बाव पहली बार बर धार्त तब देखा बर मैं कुछ नहीं है । बनेस मरे लिए तोहफे के लीर पर कुछ एक साक्षियाँ लाया था । जो काफ़ी कीमती थी । उसकी बड़ी भेंट देसकर मुझे महसूस हुआ कि मुझे धरति प्रेम करने के कारण अपनी सामर्थ से धरति भेंट साकर ही है । मगर रमेस बीरे-बीरे कुछ और ही निकला वह मुझे एक रात लाव हुआ ।

कुछ एक कर अपने को सम्जाला जैसे किसी तियूड बैरना ने उमका पना धबकद कर दिया है । वह कुछ स्त-स्त कर बोली रात्री का समज था । अपने पति की प्रतिष्ठा कर रही थी । मेरे धन्तर में सिहरन थी । मैं अपने प्रियतम की मर्बस्व धर्यण करने को सदा सोचती थी । तब सदा की तरह नहीं धान बनेस सदाव में बुव एक ध्यक्ति को माव कैकर धामा था—बिसके कपड़ों से लगता था मानों वह काशी ईसे धाला है ।'

बनेस ने भड़कड़ते कर्मों को संयासकर धत्यष्ट स्वर में बस, 'रात्री सव ? ये मेरे दिन 'पला राय' है । काशी कस्य है । वे जो पहली रात की साक्षियाँ मेने तुम्हें भेंट की थीं वे सब धरति हैं ।

थी।' मैं सोच रही मैं खुपचाप सुन रही थी। मैंने बन्नाराय की तरफ लक्ष्मि हटिपाठ किया। बन्नाराय कुटिमठा से मुस्करा रहा था। उसकी मुस्कान बहरीली थी। मैं भय से बुटन लगी।"

सरोज ने एक लम्बा साँस लेकर पुनः कहना शुरू किया बनेध ने बन्नाराय से कहा थाप बैठो ये घभी था रहा हूँ। बन्नाराय मेरे पसंग पर बैठ गया। मैंने कमरे से बाहर जाने का प्रयास किया। मगर बनेध ने कमरे के कपाटों की बाहर से बंद कर दिया था। मेरी हाँका सत्य में प्रकट हो गई मैं बिलकुल बबरा गई। मैं सोच रही थी कि क्या करूँ ? तब तक बन्नाराय ने मुझे जबरदस्ती पसंग पर बिठसा लिया। मैं उससे घुटकारा पाने हेतु लड़ती रही मगर उसकी कठोर बाहों मुझे जकड़ती गई। मैं अपने बटीत्व की रक्षा न कर सकी। सोचा जोर से बिस्ताळ पर पति की इज्जत जोर अपनी इज्जत के भय से मैंने अपनी सर्वस्व पचा दिया।

सरोज सुबकियाँ भरने लगी थी घीर घब्र बह पूर्ण रूप से रो रही थी। मैं अपने सतीत्व का नुटेरा उध घन्ना सेठ को नहीं अपने पति को मानती हूँ। घीर अपने पति से प्रतिघोष लेने के लिए मैं बिडोहिनी बन गई चाहे वह बिडोह स्वस्य भजे न हो। फिर घाधिक संकट। मैं गिरती बई। मगर धाबे चलकर देखा तो लया कि पनेध पर कीई प्रभाव नहीं पड़ा। बन्कि बहु तो घीर भी घकरमय हो गया।

सरोज सुबकनी-सुबकती कहे जा रही थी 'मैंने संकल बूझना चाहा। मगर कोई न मिसा। रमेध जबसे तुम्हें बेला है मुझे नई हटि मिला है। मैंने लभसे मितना छोड़ दिया है। मैं राह बरसना चाहती हूँ। यह मौका मिला। मिलते ही मैंने राह बरसना धारम्भ कर दिया है।

रमेध को घतीत बर्दान ब रहा था। वह सोचता गया कि सरोज एक दिन घाई की तब कह रही थी कि रमेध मैंने छविष्ठ करती है। रमेध ने पूछा था कहाँ ? सरोज ने बताया एक बन्नों की स्तून में टीचर का काम मिल गया है।

कुछ दिन बाद उसने कहा था 'रमेध अब नहीं रहा जाता।'

रमेश ने पूछा था क्या ? सरोज ने कहा कि 'धनेश का व्यवहार । वह चाहता है कि मैं किसी भी तरह उसकी शराब का खर्चा न भुगतूँ । मगर अब मुझसे ऐसा नहीं हो सकता ।”

और एक दिन सरोज फिर आई । बहुत प्रसन्न थी जैसे सुबह का ताजा नुताब । कह रही थी कि आज रमेश में बहुत कुछ है । रमेश ने कारण पूछा तो उसने बताया 'मैंने धनेश को तत्काल देने के लिए जो धर्ती भी की कोर्ट ने आज उसे मंजूर कर लिया है ।

उन दोनों के बीच की दूरियाँ और कम हो गई । वह बिचारता गया और मित्र के कर उसे बकड़ते गए ।

×

×

×

उस दिन सुबह जब जाग आई तो उसने देखा सूरज कापड़ी ऊँचा चढ़ाया था । वह उसने का प्रयास करने गया, मगर शरीर की पीड़ा न म सठन को मंजूर कर दिया । रमेश न बीमार होने का सम्येय अपने अस्थिरस्थ को दे दिया ।

सारा शरीर टूट रहा था । रमेश बिस्तर पर ही पड़ा रहा । रामू से दो तीन बार चाय बनवय माँग ली थी ।

घाम के समय सरोज आई । उसने रमेश से लेटे रहन का कारण पूछा तब उसने उत्तर दिया "यू ही घर में बर् है ।

सरोज ने ज्योंही सिर बजान के लिए उसके सिर पर हाथ रखा तो उसे महसूस हुआ कि शरीर तबे की तरह तप रहा है । सरोज न कहा तुम्हें तो बुझार है । और कोन द्वारा डाक्टर को इतिमा दे बी और घर बुला लिया ।

सरोज पौन करने के बाद रमेश का सिर सहलाने लगी । कुछ समय में डाक्टर आ गया । उसने टेम्पचर लिया और कुछ बार्ने पूछी और एक पर्चे पर कुछ ब्याख्या के नाम लिख कर ध्यान रखने का कह गया । ब्याजे रामू से उसी बन्ध मंगवाली गई । सरोज डाक्टर के ब्याजे धनुषार ब्याजे देती रही । रमेश का बुझार दिन ब दिन बढ़ रहा



धा। सरोज ने सुट्टी लेकर हर समय रमेश के घर रहना धारण कर दिया।

मरेन भी धा मया रमेश की हासत चित्तजनक हो रही थी। सभी चिन्तित थे। रमेश बुहार के ओर से बेहोश सा ही रहता था। कभी कभी बड़बड़ा देता था।

सरोज व मरेन दोनों रमेश की सेवा करने में संभन्न थे। जब भी सरोज कमरे में धा जाती मरेन कमरे से बाहर चला जाता। बेसे भी मरेन उदास रहता था वह सरोज से पूर्ववत् मूछा करता था। वह उसे कुलटा व चरित्रहीन समझता था। इतने दिन बाद भी जब सरोज की रमेश की सेवा सुभुठा करती देखा तब भी उसके विभाग में मूछा जड़ निते रही।

एत बड़ रही थी। रमेश के पास मरन बैठा था। रमेश के बचाई लेने के बल्ल हो गया था। मगर बारी बचाई सरोज ही देती थी। सरोज भी धात्र कुछ धस्नस्य भी इसीलिए वह पास के कमरे में सी रही थी। मरेन ने उठकर टेबल पर से बचाई की मीसो उठाई। मगर सीमी खाली थी। उसने रमेश से पूछा 'कनोरोमाईसीटीम की नई चीछी कहाँ है।

रमेश ने जबाब दिया "सरोज या रामू से ही पता चल सकेगा।" मरन ने रामू को धाबान की। मगर रामू पर धा कुछा था। वह एत को धपने पर ही सीता था।

रमेश पास के कमरे में सरोज से पूछने जाने के लिए उठने गया। कमजोरी के कारण धबधल रहा। मरेन न टोक दिया धौर स्वयं उससे पूछने जाने को तैयार हो गया।

सरोज सी रही थी। मरेन कमरे में गया धौर उसने बचा डूडने को प्रयास किया। मगर बचा नहीं मिली। परन्तु एक डायरी धबदप मिल पाई चिध पर लिखा था 'सरोज'। न जाने क्यों उधके हाथों ने डायरी की जेब के हवासे धर दिया।

नरेन ने आवाज देने का निश्चय करके सरोज की आवाज दी । सरोज हड़बड़ा कर उठी और नरेन को अपने पास सड़ा देव कर बड़ी ही परनेबाचक नज़रों से नरेन को देखने लगी । नरेन ने पूछा 'क्योरोमा सीटीन' की नई सीटी कहाँ रखी है ?

सरोज ने सामने की आसमानी की धोर इधारा कर दिया और स्वयं उसी मुद्रा में नरेन को देखती रही । नरेन सीसी निकाल कर कमरे से बाहर आ गया । नरेन न रमेध को बचा दे बी । स्वयं धाराम कुर्सी पर बैठ गया । रमेध जब नीब के धंक्रुसमें पूरी तरह से हो गया । तब नरेन न सरोज की डायरी निकाल सी तथा वह उसे पढ़ने लगा काफ़ी देर डायरी पढ़ता रहा । पढ़ते-पढ़ते नरेन की बृष्टि अंतिम पृष्ठ पर एक पई । उसने देखा तारीख़ उसी दिन की थी डायरी के उस पृष्ठ को उसी दिन लिखा गया था । नरेन ने पढ़ना धारम्भ कर दिया

आज साबंक्राल जब मैं रमेध के कमरे में जा रही थी तब अचानक मुना ने धम्य नरेन के बे नरेन कहे जा रहा था । उन धम्यों को सुनकर मैं वहीं ठिठके गई । नरेन कह रहा था-

'रमेध तुम सरोज से बुर हो जाओ यह मेरी इच्छा है । जो बात तुम्हें मैंने आबावेश में कही थीं उनको विमान से निकाल दो । वह तो सिर्फ़ मेरे मुस्से के कारण ही था । मैं तुम्हारे बारे में जानता हूँ मगर सरोज के आचम पर कई छोटे बड़े बाग़ हैं फिर जो अपने पति की न ही सकी वह तुम्हारी क्या बन सकती है । वह तो सिर्फ़ तुम्हारे ऐस्वर्य को देख कर प्रेम व भक्ति का स्थापित कर रही है । वह तुम्हारी सामाजिक प्रतिष्ठ के लिए घातक है और इससे उसका ब्यतिस्व बनकर विधाय घातक पार्षेपा ।

रमेध ने इस यहि कहा था कि ठीक है मैं तुम्हारी हर बात मान लता हूँ । मगर इस बात में तुम अभी पलती पर हो ।

इतना बुनने बाद रमेध के कमरे में मेरी जाने की इच्छा नहीं हुई । सब रमेध । नरेन सब ही ली कह रहा था । मैंने सिर्फ़ तुम्हें अपना

सम्बल ही समझ में बिलकुल ही घूस गई कि तुम भी इसी समाज के संघ हो । मैंने स्वयं मेरे स्वार्थ हेतु ही तुम्हापी सामाजिक प्रतिष्ठा को बरका लगाया । अब रमेघ में बहुत ही स्वार्थी निकली । अब मेरा स्वार्थ स्थिर न रह सकेगा । रमेघ मुझे क्षमा कर देना । मैं कम ही नहीं से बनी जाऊँगी । तुम्हापी सामाजिक बन्धनों से बंधी दुनिया से बनी जाऊँगी । मुझ जैसी अबागी के लिए तो थिर्क एक ही मार्ग है वह है आत्महत्या । मेरे लिये तो अक्षय पाप होगा पर तुम्हारे समाज के लिये तो एक पुण्य होना उसे मुझ-सी कुलटा से छुटकारा मिलेगा । अन्त्या रमेघ मेरी घूस क्षमा करना पर तुम्हें एक बात कहना चाहुँगी कि क्या जीवन में एकबार जो गिर गया वह वापस सम्मसे ही नहीं ? सबके बहने धीर बहते हैं । जाने अनजाने वह भी छिस्तती है पर इससे उन्हें क्या मृत्यु की धीर भौंक दिया जाय ? मैं नरेन को कुल भी बुरा नहीं कर रही हूँ पर उससे पूछनी हूँ कि कस उसकी बहिन की यह स्थिति होती तो वह क्या करता ? वह यह कह सकता है कि मैं उसे जान से मार देता पर यह कोई स्वस्व प्रतिकार नहीं । एक अघराबी को मिटा कर बुरा अघराबी पैदा करना कोई अन्त्या हल नहीं । और मैंने आबावेघ में जो कह दिया है उसके लिए मैं तुमसे धीर नरेन से क्षमा माँपती हूँ । अविम प्रणाम ?

पढ़ते पढ़ते उसे लगा कि सरोज ने आत्महत्या करली है । आत्महत्या इस लिये की है उसने उसे ऐसे शब्द कहे जो उसके जीवन में अन्धेरा फैला सकते हैं । वह अपने मापको हत्याच समझने लगा । फिर वह उठ कर सरोज के कमरे में गया । वह तो रही बी । उसने एक अन्तोप की हाँस ली फिर वापस आकर अपने कमरे में बैठ गया कि वह सरोज को भुला नहीं करपा, उसे रमेघ से बुरा नहीं होने देगा कम वह उससे क्षमा ली माँप लेगा । लेकिन वह रात भर नहीं सोया ।

